उत्तरी अमेरिका की लोक कथाऐं–1

चयन और हिन्दी अनुवाद
सुषमा गुप्ता

2022

Series Title : Desh Videsh Ki Lok Kathayen
Book Title: Uttaree America Ki Lok Kathayen-1 (Folktales of North America-1)
Cover Page picture: North America's Native Indians' Basket
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Web Site: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2022
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of America

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

देश विदेश की लोक कथाऐं 5

उत्तरी अमेरिका की लोक कथाऐं–1 7

1 भालू ने अपनी पूँछ कैसे खोयी 9

2 एक लड़का जो भालुओं के साथ रहा 15

3 भालू सारे जाड़े क्यों सोता है 28

4 भालू आदमी 33

5 छोटे आदमियों की भेंटें 41

6 लड़की जो आम चीज़ों से सन्तुष्ट नहीं थी 48

7 भूखा लोमड़ा और अकड़ू उम्मीदवार 57

8 दो बेटियाँ 64

9 होडाडैनन और चेस्टनट का पेड़ 75

10 कुत्तों की जीभ इतनी लम्बी क्यों होती है 98

11 बर्फ का आदमी और वसन्त का दूत 101

11 बर्फ के आदमी की वापसी 104

13 हवा का जन्म 108

14 भैंस का गीत 115

15 भैंस स्त्री – जादू की कहानी 133

16 दादी मकड़ी 141

17 कौवी और बाज 147

18 बादल आसमान में क्यों रहते हैं 153

19 चॉद वाले आदमी ने क्या किया 158

20 चॉद की यात्रा 164

21 संगीत वाला पानी 170

22 पहले ऑसू 181

23 शार्क का राजा 184

24 पैलै का बदला 189

25 आत्मा का घर 193

देश विदेश की लोक कथाऐं

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **550** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

उत्तरी अमेरिका की लोक कथाऐं–1

संसार में सात महाद्वीप हैं – एशिया, अफ्रीका, उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका, अन्टार्कटिका, यूरोप और आस्ट्रेलिया – सबसे बड़े से सबसे छोटा। जब तक पनामा कैनाल[1] नहीं बनी थी, यानी **1914** तक, उससे पहले से यानी जबसे इसे **1492** में कोलम्बस ने खोजा था तब तक उत्तरी अमेरिका और दक्षिणी अमेरिका धरती का एक ही टुकड़ा थे।

धरती के इन दोनों हिस्सों को, यानी उत्तरी अमेरिका को और दक्षिणी अमेरिका को, **15**वीं शताब्दी के अन्त में क्रिस्टोफर कोलम्बस को खोजने का श्रेय मिला। उससे पहले के जो धरती के नक्शे मिलते हैं उनमें इन दोनों महाद्वीपों का कहीं कोई नामो निशान भी नहीं मिलता। इनकी खोज के बाद यहॉ यूरोप के देशों से लोग आ कर बसना शुरू हो गये। तब तक भी उत्तरी अमेरिका और दक्षिणी अमेरिका दोनों एक ही महाद्वीप थे। इसके अलावा कैनेडा देश भी पहले उत्तरी अमेरिका में ही आता था। वह कोई अलग देश नहीं था।

अमेरिका या यू ऐस ए या स्टेट्स देश उत्तरी अमेरिका महाद्वीप में स्थित है। उत्तरी अमेरिका महाद्वीप में तीन बड़े मुख्य देश हैं – उत्तर में कैनेडा, दक्षिण में मेक्सिको और बीच में यू ऐस ए या अमेरिका। कुछ और छोटे छोटे देश भी हैं इसमें जो मैक्सिको के आस पास है। ।

पर ऐसा नहीं है कि यूरोप के देशों के लोगों के आने से पहले यहॉ कोई रहता हीं नहीं था। यहॉ पर यहॉ के आदिवासी लोग रहते थे। उनकी अपनी संस्कृति थी, उनका अपना रहने सहने का ढंग था, उनके अपने तौर तरीके थे और थीं उनकी अपनी बहुत सारी लोक कथाऐं। विदेशियों के आने के बाद बहुत कुछ खत्म हो गया। पहले यहॉ कई जनजातियॉ रहती थी।

यहॉ मुख्य रूप से दो प्रकार की लोक कथाऐं पायी जाती हैं एक तो वे जो विदेशियों के आने से पहले के रहने वाले आदिवासियों या मूल निवासियों में प्रचलित थी और दूसरी वे जो विदेशी लोग अपने साथ ले कर आये। यूरोप तब तक काफी विकसित हो चुका था इसलिये उनकी लोक कथाऐं ज़्यादा अच्छी तरह से सुरक्षित हैं पर यहॉ के आदिवासियों की लोक कथाऐं बहुत ज़्यादा नहीं मिलती हैं। जो भी मिलती हैं उनको अब किसी तरह सुरक्षित किया जा रहा है।

आदिवासियों की लोक कथाओं में कुछ चरित्र बहुत मुख्य हैं – एक छोटा भेड़िया जिसके नाम कायोटी है, दूसरा एक कौआ जैसा पक्षी है जिसका नाम रैवन[2] है, तीसरा एक मकड़ा है जिसका नाम निहानकन है और चौथा एक ईकटोमी है। ईकटोमी भी मकड़े जैसा ही है। इनकी कथाऐं यहॉ बहुत सारी हैं इसलिये इन सबकी लोक कथाऐं अलग से ही दी गयी हैं।

---

[1] Panama Canal, 110 feet wide, 48 miles long canal, separates North America and South America continents and facilitates the transportation between Atlantic and Pacific oceans saving about 8,000 mile journey around the Cape Horn of South America. It took 10 years to be built, 1904-1914. It was opened to public in 1914.

[2] "Raven Ki Lok Kathayen-1", by Sushma Gupta. India, Indra Publishers. 2016.
"Raven Ki Lok Kathayen", by Sushma Gupta. Prabhat Prakashan. 2020

इस पुस्तक में उत्तरी अमेरिका की वे लोक कथाऐं दी जा रही हैं जो विदेशियों के आने से पहले के रहने वाले आदिवासियों की हैं और कायोटी, रैवन, निहानकन मकड़े और ईकटोमी से सम्बन्धित नहीं हैं। कौन सी लोक कथा किस जनजाति की है जहॉ इसका पता है वहॉ उसका नाम दे दिया गया है पर जहॉ उसका नाम नहीं मालूम है वहॉ यह नाम नहीं दिया जा सका। ये सब लोक कथाऐं अमेरिका की लोक कथाओं के नाम से दी जा रही हैं। आशा है ये लोक कथाऐं आप सबके ज्ञान को बढ़ायेंगी और यह भी बतायेंगी कि उतने पुराने लोग किस तरह की कहानियॉ कहते सुनते थे।

अमेरिका की लोक कथाओं के इस पहले संकलन में हमने इन्टरनैट की कई वैब साइट्स से कई जनजातियों की लोक कथाऐं ली हैं। रेड इन्डियन्स की ये जनजातियॉ उत्तरी अमेरिका के उत्तरी पश्चिमी तट की ओर ज़्यादा रहती थीं – ऊपर अलास्का तक। क्योंकि पहले यू ऐस ए और कैनेडा दो अलग अलग देश नहीं थे इसलिये उधर की ये सब लोक कथाऐं "अमेरिका की लोक कथाऐं" के नाम से ही दी जा रही हैं। वैसे कैनेडा की लोक कथाऐं अलग से भी दी गयी हैं पर उनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं यूरोपियन लोगों के आने के बाद की कथाऐं हैं जो वे अपने अपने देशों से ले कर आये।

आशा है कि ये लोक कथाऐं तुम लोगों को पसन्द आयेंगी और दूसरे समाजों के बारे में कुछ नया सिखायेंगी।

संसार के सात महाद्वीप

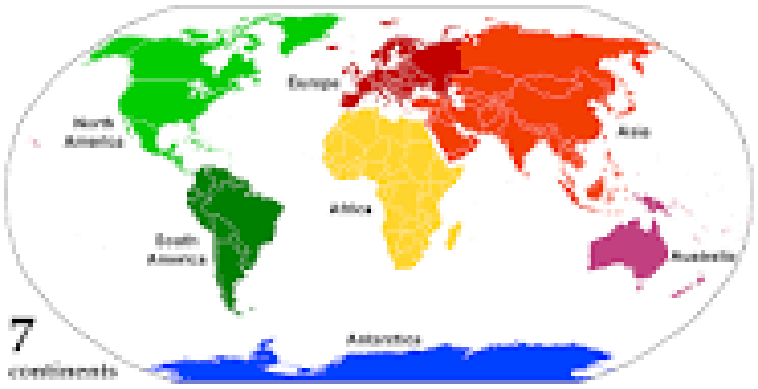

1 भालू ने अपनी पूँछ कैसे खोयी[3]

बहुत पहले भालू की भी बहुत बड़ी सी पूँछ हुआ करती थी और वह उसकी बहुत ही कीमती चीज़ थी। वह उसको जब तब इधर उधर हिलाता रहता ताकि लोग उसकी उस शानदार पूँछ को देखें।

एक दिन एक लोमड़े ने इसे देखा। और जैसा कि सभी जानते हैं कि लोमड़ा तो बहुत चालाक होता है और उसको दूसरे को बेवकूफ बनाने में बहुत मजा आता है सो उसने इस भालू के साथ भी एक चाल खेलने की सोची।

यह साल का वह समय था जब पाले[4] की आत्मा हैथो[5] सारे देश में फैली हुई थी। उसने सारी झीलों को बर्फ से ढक रखा था और सारे पेड़ों पर बर्फ की चादर फैलायी हुई थी।

लोमड़े ने बर्फ में उस जगह एक छेद बनाया जहाँ वह अक्सर घूमने जाया करता था। वहाँ जा कर वह उस छेद के ऊपर बैठ गया और अपनी पूँछ उस छेद में डाल दी। कुछ ही देर में उसकी पूँछ में बहुत सारी मछलियाँ चिपक गयीं और उसने बहुत सारी मछलियाँ पकड़ लीं।

---

[3] How Bear Lost His Tail? – a folktale from Native Americans, Iroquois Tribe, North America. Adapted from the Web Site :
http://www.firstpeople.us/FP-Html-Legends/HowBearLostHisTail-Iroquois.html
A similar story is told in Norway also. See "Bhaloo Ne Apni Poonchh Kaise Khoyee" published in "Norway Ki Lok Kathayen" by Sushma Gupta in Hindi language.

[4] Translated for the word "Frost"

[5] Hatho, the Spirit of Frost

घूमते घूमते भालू भी उधर आ निकला। जब तक भालू उसके पास आया तब तक उसके चारों तरफ बहुत सारी मछलियों का ढेर लग चुका था।

इससे पहले कि भालू लोमड़े से यह पूछता कि तुम यहॉ क्या कर रहे हो लोमड़े ने उस छेद में पड़ी अपनी पूँछ इधर उधर घुमायी और एक बड़ी सी मछली निकाल ली। वह मछली उसने दूसरी मछलियों के साथ रखी और भालू की तरफ देखा।

लोमड़ा बोला — "भालू भाई नमस्ते। आज तुम कैसे हो?"

भालू उसके चारों तरफ लगे मोटी मोटी मछलियों के ढेर की तरफ देखता हुआ बोला — "नमस्ते लोमड़े भाई। मैं तो ठीक हूँ पर तुम यहॉ क्या कर रहे हो?"

लोमड़ा बोला — "मैं तो मछलियॉ पकड़ रहा हूँ। क्या तुम भी अपने लिये मछलियॉ पकड़ने की कोशिश करना चाहते हो?"

भालू ने लोमड़े के मछली पकड़ने वाले छेद के ऊपर झुकते हुए कहा — "हॉ हॉ, क्यों नहीं?"

लेकिन लोमड़े ने उसको वहीं रोक दिया और बोला — "अभी रुको भाई। यह जगह अब ठीक नहीं है। जैसा कि तुम देख रहे हो मैंने यहॉ से करीब करीब सारी मछलियॉ पकड़ लीं हैं। अब हमको मछली पकड़ने के लिये कोई नयी जगह ढूँढनी चाहिये जहॉ तुम बहुत सारी मछलियॉ पकड़ सको।"

और यह कह कर लोमड़ा वहॉ से उठा और चल दिया तो भालू भी उसके पीछे पीछे हो लिया।

लोमड़ा वहॉ की जगहों को खूब अच्छी तरह जानता था सो वह भालू को वहॉ ले गया जहॉ वह झील बहुत ही उथली थी और वहॉ जाड़ों की मछलियॉ नहीं पकड़ी जा सकती थीं क्योंकि जाड़ों की मछलियॉ तो हमेशा गहरे पानी में ही मिलती थीं।

भालू ने देखा कि लोमड़े ने वहॉ पहुँच कर बर्फ में एक छेद किया और जल्दी ही उसमें से एक मछली पकड़ कर खाने लगा।

फिर वह भालू से बोला — "अब तुम वैसा ही करो जैसा मैं तुमसे कहता हूँ। पहले तो अपने दिमाग से मछली का विचार बिल्कुल ही निकाल दो।

और कोई गाना भी नहीं गाना क्योंकि अगर तुमने कोई गाना गाया तो कोई मछली उसे सुन सकती है। और तुम्हारा गाना सुनते ही वह यहॉ से चली जायेगी।

फिर अपनी पीठ इस छेद की तरफ कर लो और अपनी पूँछ इस छेद के अन्दर डाल दो। जल्दी ही कोई मछली आ कर तुम्हारी पूँछ पकड़ लेगी और फिर तुम उसको ऊपर खींच लेना।"

भालू ने पूछा — "पर जब मेरी पीठ इस छेद की तरफ है तब मुझे कैसे पता चलेगा कि किसी मछली ने मेरी पूँछ पकड़ ली है?"

लोमड़ा बोला — "मैं यहॉ छिप जाता हूँ। यहॉ मुझे कोई मछली नहीं देख सकती। जब कोई मछली तुम्हारी पूँछ पकड़ेगी तो मैं ज़ोर

से चिल्ला दूँगा तब तुम मछली को बाहर निकालने के लिये अपनी पूँछ तुरन्त ही खींच लेना। पर तुमको थोड़ा धीरज रखना पड़ेगा। जब तक मैं न कहूँ तुम बिल्कुल हिलना नहीं।"

भालू ने हाँ में सिर हिलाया और बोला — "ठीक है मैं वैसा ही करूँगा जैसा तुमने कहा है।" सो वह उस छेद के पास छेद की तरफ पीठ कर के बैठ गया।

उसने अपनी सुन्दर लम्बी घनी पूँछ उस छेद में ठंडे पानी में डाल दी और अब वह मछली का इन्तजार करने लगा।

लोमड़े ने थोड़ी देर तो भालू को देखा कि वह वैसा ही कर रहा है या नहीं जैसा कि उसने उसको बताया था फिर वह धीरे से उठ कर अपने घर चला गया और जा कर सो गया।

जब वह सुबह उठा तो उसको भालू की याद आयी — "पता नहीं वह भालू बेचारा अभी भी वहीं बैठा है या नहीं। मुझे जा कर उसको देखना चाहिये।" सो वह उस बर्फ से ढकी झील की तरफ चल दिया।

वहाँ पहुँच कर तुमको क्या लगता है बच्चों कि उसने क्या देखा होगा? उसने देखा कि उस झील के ऊपर एक छोटी सी बर्फ की पहाड़ी बनी हुई है।

रात को बहुत बर्फ पड़ी थी और उसने भालू को ढक लिया था। उधर भालू भी लोमड़े की आवाज का इन्तजार करते करते कि

लोमड़ा कब कहेगा "अब मछली ने तुम्हारी पूँछ पकड़ ली है अपनी पूँछ खींच लो" सो गया था।

भालू इतने ज़ोर से खर्राटे भर रहा था कि उसकी आवाज से झील की सारी बर्फ हिल रही थी। लोमड़े को यह सब देखने में इतना मजा आया कि वह तो हँसते हँसते लोट पोट ही हो गया।

जब लोमड़ा काफी हँस चुका तो उसको लगा कि अब समय आ गया है जब मुझे इस बेचारे भालू को जगाना चाहिये। वह धीरे से भालू के कान के पास पहुँचा और एक गहरी साँस ली और चिल्लाया — "भालू अब तुम अपनी पूँछ खींचो।"

भालू चौंक कर जाग गया और उसने जितनी ज़ोर से वह खींच सकता था उतना ज़ोर लगा कर अपनी पूँछ खींच ली। पर रात भर में तो ठंड में उसकी पूँछ उस झील के पानी में जम गयी थी सो वह उसके खींचते ही टूट गयी।

भालू ने पीछे की तरफ देखा कि उसकी पूँछ में कोई मछली है या नहीं पर यह देख कर तो वह रो पड़ा कि उसकी तो पूँछ ही चली गयी थी।

वह रोते रोते चिल्लाया — "ओ लोमड़े के बच्चे, मैं तुझे इसके लिये देख लूँगा।" पर लोमड़ा तो भालू के झपटने से पहले ही वहाँ से कूद कर भाग चुका था।

इसी लिये आज तक भालू की छोटी ही पूँछ है और वे लोमड़ों को भी पसन्द नहीं करते।

अगर कभी तुम किसी भालू को कराहते हुए सुनो तो शायद वह इसी लिये कराह रहा होगा कि उसको उसके साथ बहुत दिन पहले की गयी लोमड़े की वह चाल याद आ गयी जिसमें लोमड़े ने उसकी पूँछ तोड़ दी थी।

2 एक लड़का जो भालुओं के साथ रहा[6]

एक बार एक लड़का था जिसके माता पिता मर गये थे इसलिये वह दुनियॉ में अकेला ही था। उसकी देखभाल करने वाला केवल उसका एक मामा था पर वह मामा भी उसके लिये बहुत बेरहम था।

उसका मामा हमेशा ही यह सोचता था कि वह लड़का उसके ऊपर एक बोझ था सो उसको वह खाने के लिये बस अपने खाने की बचे खुचे टुकड़े दे दिया करता था।

पहनने के लिये वह उसको फटे पुराने कपड़े और टूटे हुए जूते देता था। रात को वह आग से दूर मामा के घर के बाहर सोता था।

पर उस लड़के को कोई गम नहीं था। उसको अपने मामा से कोई शिकायत भी नहीं थी क्योंकि उसके माता पिता ने उसको हमेशा बड़ों का आदर करना सिखाया था।

एक दिन उसके मामा ने उससे पीछा छुड़ाने की सोची सो उसने उस लड़के को बुलाया और उससे कहा — "चलो शिकार करने चलते हैं।"

लड़का तो यह सुन कर बहुत खुश हो गया क्योंकि उसका मामा पहले कभी उसको शिकार पर नहीं ले गया था। वह अपने मामा के

[6] A Boy Who Lived With Bears – a folktale from Native Americans, from Iroquois Tribe, America. Translated from the Web Site
http://www.firstpeople.us/FP-Html-Legends/TheBoyWhoLivedWithBears-Iroquois.html

पीछे पीछे चल दिया। पहले उसके मामा ने एक खरगोश मारा और उसे उस लड़के को दे दिया।

लड़का उसको ले कर घर जाने को मुड़ा पर उसके मामा ने उसको घर जाने के लिये मना कर दिया और कहा कि अभी वह घर न जाये वह अभी कुछ और शिकार करेगा। वे और आगे बढ़े तो उसके मामा ने एक मोटा सा मुर्गा मारा।

यह देख कर वह लड़का बहुत खुश था कि आज उसका मामा इतना सारा मॉस ले कर घर जा रहा था तो आज रात को उसको भी खूब पेट भर कर अच्छा खाना मिलेगा।

ये शिकार ले कर वह लड़का फिर घर जाने के लिये मुड़ा तो उसके मामा ने फिर उसको जाने से रोक लिया कि अभी घर नहीं जायेंगे बल्कि अभी और शिकार करना है।

और आगे जाने पर वे लोग जंगल के एक ऐसे हिस्से में पहुँच गये जो उस लड़के ने कभी देखा नहीं था। वहॉ एक बहुत बड़ी पहाड़ी थी और उसमें एक गुफा का दरवाजा था जो उस पहाड़ी में जाता था।

गुफा का दरवाजा इतना छोटा था कि उसमें से केवल एक छोटा आदमी ही घुस सकता था। मामा लड़के को वह गुफा दिखा कर बोला — "यहॉ पर बहुत सारे जानवर छिपे रहते हैं। तुम इसके अन्दर जाओ और उनको दौड़ा कर बाहर निकाल लाओ ताकि मैं उनको अपने तीरों से मार सकूँ।"

गुफा अँधेरी थी और ठंडी थी पर लड़के को याद था जो उसके माता पिता ने उसको सिखाया था सो वह उस गुफा में घुस गया। गुफा में पत्तियाँ और पत्थर तो पड़े हुए थे पर उसको उसमें जानवर कहीं दिखायी नहीं दिये।

वह उस गुफा के आखीर तक चला गया और फिर वहाँ से बाहर की तरफ लौटा। उसको बहुत शर्म आ रही थी कि वह अपने मामा की इच्छा पूरी नहीं कर सका।

पर जब वह बाहर आ रहा था तो उसने देखा कि उसका मामा उस गुफा के मुँह को एक बड़े से पत्थर से बन्द कर रहा था और कुछ ही पल में वहाँ चारों तरफ अँधेरा छा गया।

उस लड़के ने उस पत्थर को वहाँ से हटाने की बहुत कोशिश की परन्तु वह उसे नहीं हटा सका। वह उस गुफा में बन्द हो गया था। पहले तो वह बहुत डरा पर फिर उसको अपने माता पिता की बात याद आ गयी।

उसके माता पिता ने कहा था कि जो लोग दिल से अच्छे होते हैं उनकी इच्छा की ताकत भी बहुत मजबूत होती है। अगर तुम अच्छा करते हो और उस अच्छे में विश्वास करते हो तो तुमको भी अच्छी ही चीज़ें मिलेंगी।

यह सोच कर वह लड़का खुश हो गया और एक गीत गाने लगा। उसका यह गीत उसके अपने बारे में था कि उसके माता पिता नहीं थे और उसको दोस्तों की जरूरत थी।

जैसे जैसे वह अपना गीत गाता जा रहा था उसकी आवाज तेज़ होती जा रही थी। गाते गाते वह बिल्कुल ही भूल गया कि वह एक गुफा में बन्द है।

कुछ देर बाद ही उसने बाहर के पत्थर पर कुछ खुरचने की आवाज सुनी तो उसने अपना गाना बन्द कर दिया। उसने सोचा कि शायद उसका मामा उसको गुफा से बाहर निकालने के लिये आ गया है पर वहॉ कोई एक आवाज नहीं थी बल्कि कई आवाजें थीं।

उसने कई आवाजों में से सबसे पहले जो आवाज सुनी उससे वह पहचान गया कि वह गलत था। वह ऊॅची आवाज उसके मामा की नहीं थी।

उस ऊॅची आवाज ने कहा — "हमको इस लड़के की सहायता जरूर करनी चाहिये।"

इसके जवाब में एक गहरी सी आवाज ने कहा — "हॉ हॉ हमें इसकी सहायता जरूर करनी चाहिये।" लड़के को लगा कि उसकी आवाज प्यार से भरी थी।

उसी आवाज ने फिर कहा — "यह लड़का यहॉ अकेला है और इसको हमारी सहायता की जरूरत है।"

"हॉ इसमें कोई शक नहीं है कि हमको इसकी सहायता करनी चाहिये।"

एक और आवाज़ बोली — "हममें से किसी एक को इसको गोद ले लेना[7] चाहिये।"

और उसके बाद तो फिर कई आवाजों ने कई भाषाओं में बोल कर उस आवाज की हॉ में हॉ मिलायी।

सबसे ज़्यादा आश्चर्य की बात तो यह थी कि वे सब आवाजें उसके लिये अजीब थीं और भाषा भी पर भाषा अजीब होने के बावजूद वह लड़का उनकी सब बातें समझ रहा था।

कुछ ही देर में गुफा के मुँह पर से वह पत्थर हटा और रोशनी गुफा के अन्दर आयी। बहुत देर तक गुफा में अँधेरे मे रहने की वजह से उस रोशनी से एक बार को तो उस लड़के की ऑखें ही चौंधिया गयीं।

लड़का धीरे धीरे गुफा से बाहर निकला। वह गुफा की ठंड में ठंडा और जमा हुआ सा हो रहा था। उसने जब अपने चारों तरफ नजर डाली तो उसने देखा कि वह तो बहुत सारे जानवरों से घिरा खड़ा है।

तभी एक छोटी सी आवाज़ उसके पैरों के पास से बोली — "अब जब हम लोगों ने तुमको इस गुफा से निकाल लिया है तो अब तुम हममें से एक को अपना माता पिता चुन लो।"

[7] Translated for the word "Adopting".

लडके ने यह सुन कर नीचे देखा तो उसने देखा कि उसके पैरों के पास एक मोल[8] खड़ा था।

पास में एक पेड़ के पास खड़े हिरन[9] ने कहा — "हॉ तुमको हममें से एक को तो चुनना ही पड़ेगा।"

लड़का बोला — "तुम सबको बहुत बहुत धन्यवाद। तुम तो सब ही मेरे ऊपर बहुत दयालु हो तो मैं किसी एक को अपना माता पिता कैसे चुनूँ?"

मोल बोला — "पहले हम इसको यह तो बता दें कि हम कैसे हैं और हम किस तरीके से रहते हैं तभी तो यह लड़का तय करेगा कि यह हममें से किसको अपना माता पिता चुने।"

सब जानवर इस बात पर राजी हो गये सो वे एक एक कर के लड़के के पास आने लगे।

मोल बोला — "पहले मैं शुरू करता हूँ। मैं जमीन के नीचे रहता हूँ। जमीन के नीचे मैं सुरंगें खोद लेता हूँ। नीचे मेरी सुरंगों में बहुत अँधेरा और गर्म रहता है और हमें वहॉ बहुत सारे कीड़े आदि भी खाने को मिल जाते हैं।"

---

[8] Moles are small cylindrical mammals. They have velvety fur; tiny or invisible ears and eyes, reduced hind limbs; and short, powerful forelimbs with large paws positioned for digging – see its picture above

[9] Translated for the word "Moose" which is like a stag. See its picture above.

लड़का बोला — "यह तो बहुत अच्छा है पर मुझे डर है कि मैं सुरंगों में जाने के लिये बहुत बड़ा हूँ।"

फिर बीवर[10] यानी नेवला आया और बोला — "तब तुम मेरे साथ आओ और मेरे साथ रहो। मैं एक तालाब के बीच में रहता हूँ। हम बीवर लोग सबसे मीठे पेड़ की सबसे अच्छी छाल खाते हैं, पानी में डुबकी मार लेते हैं और जाड़ों में अपने अपने घरों में सो जाते हैं।"

लड़का बोला — "तुम्हारी ज़िन्दगी भी बहुत अच्छी है पर मैं पेड़ों की छाल नहीं खा सकता और मुझे मालूम है कि मैं तालाब के ठंडे पानी में तो जम ही जाऊँगा।"

भेड़िया बोला — "मेरे बारे में तुम्हारा क्या ख्याल है? मैं जंगलों में भागता फिरता हूँ और जिन छोटे जानवरों को मैं खाना चाहता हूँ उनको पकड़ लेता हूँ। मैं एक गर्म घर में रहता हूँ और तुम मेरे साथ आराम से रहोगे।"

लड़का बोला — "भेड़िये भाई, तुम भी बहुत दयालु हो। लेकिन क्योंकि सारे जानवर मेरे ऊपर इतने मेहरबान हैं कि मैं उनमें से किसी को भी खाना नहीं चाहूँगा।"

[10] Beaver is a hedgehog type animal which lives under the earth and is famous for building dams, canals and lodges etc. See its picture above.

इतने में हिरन बोला — "तब तुम मेरे बच्चे बन कर रहो। हमारे साथ जंगलों में भागो, पेड़ों की डंडियॉ खाओ और मैदानों की घास खाओ।"

लड़का बोला — "नहीं दोस्त हिरन, तुम बहुत सुन्दर हो और बहुत अच्छे हो पर तुम इतने तेज़ हो कि भागने में तो मैं तुमसे हमेशा ही पीछे रह जाऊँगा।"

उसके बाद एक बूढ़ी मादा भालू उस लड़के के पास आयी और उसको बहुत देर तक ऊपर से नीचे तक देखती रही। फिर जब वह बोली तो उसकी आवाज फटी फटी सी थी।

वह बोली — "तुम हमारे साथ आ सकते हो और एक भालू बन कर रह सकते हो। हम भालू धीरे धीरे चलते हैं और सख्त आवाज में बोलते हैं। पर हमारा दिल बहुत नर्म है।

हम बैरीज़[11] और जड़ें खाते हैं जो जंगलों में उगते हैं। लम्बे जाड़ों के मौसम में हमारे बाल तुमको गर्म रखने में सहायता करेंगे।"

लड़का बोला — "हॉ मैं भालू के साथ चलूँगा। मैं तुम्हारे साथ चलूँगा और तुम्हारे परिवार में रहूँगा।" सो वह लड़का जिसका कोई परिवार नहीं था भालू के साथ रहने चला गया।

[11] Berry is a kind of fruit normally grown on shrubs – such as blue berries, raspberries, black berries, our Indian Ber or Jharberee Ke Ber or Phaalasaa etc. See their picture above.

उस मॉ भालू के दो बच्चे और भी थे। वे उस लड़के के भाई बन गये। वे सब एक साथ लुढ़कते और खेलते। जल्दी ही वह लड़का भालू जितना ताकतवर हो गया।

मॉ भालू ने उस लड़के को कहा — "तुम सावधान रहना। तुम्हारे भाइयों के पंजे बहुत तेज़ हैं। जहॉ भी वे तुमको उनसे खुरच देंगे वहीं पर तुम्हारे उन जैसे बाल उग आयेंगे।"

इस तरह वे लोग जंगल में बहुत दिनों तक रहे और मॉ भालू ने उस लड़के को बहुत कुछ सिखाया।

एक दिन वे सब जंगल में बैरीज़ ढूँढ रहे थे कि मॉ भालू ने उनको चुप रहने को कहा। वह बोली — "लगता है कोई शिकारी है यहॉ।" उन सबने ध्यान से सुना तो वाकई उनको किसी आदमी के पैरों की आवाज सुनायी दी।

बूढ़ी मॉ भालू मुस्कुरा कर बोली — "हमें इस शिकारी से डरने की जरूरत नहीं है। इसके कदम भारी हैं और जिधर भी यह जायेगा पत्तियॉ और डंडियॉ हमें बता देंगी कि यह कहॉ है।"

एक दूसरे समय पर मॉ भालू ने फिर से उन सबको चुप रहने के लिये कहा — "सुनो, एक दूसरा शिकारी।" उन्होंने फिर सुनने की कोशिश की तो उनको गाने की आवाज सुनायी पड़ी।

बूढ़ी मॉ भालू फिर मुस्कुरा कर बोली — "यह भी कोई खतरनाक शिकारी नहीं है। यह तो बोलने वाला है जैसे जैसे यह चलता जाता है वैसे वैसे बोलता जाता है।

जो शिकार के समय बोलता रहता है वह यह भूल जाता है कि जंगल में हर चीज़ के कान होते हैं। हम भालू लोग तो वह गाना भी सुन लेते हैं जो लोग गाते भी नहीं केवल सोचते ही हैं।"

इस तरह वे सब आनन्द से रह रहे थे कि एक दिन बूढ़ी मॉ भालू ने उनको फिर से चुप किया। इस बार उसकी ऑखों में डर दिखायी दे रहा था।

वह बोली — "सुनो, वह जो दो टॉगों पर और चार टॉगों पर शिकार करता है वह हमारे लिये बहुत खतरनाक है। हमको हमेशा यह प्रार्थना करते रहना चाहिये कि वह हमको न ढूँढ सके।

क्योंकि चार टॉग वाले जो दो टॉग वाले के साथ शिकार करते हैं हम जहॉ भी जायें वे हम लोगों को ढूँढ सकते हैं। और वह आदमी भी जो उनके साथ होता है जब तक चैन से नहीं बैठता जब तक कि उसको जो शिकार चाहिये उसको पकड़ नहीं लेता।"

उसी समय उन्होंने एक कुत्ते के भौंकने की आवाज सुनी। बूढ़ी मॉ भालू चिल्लायी — "भागो भागो, अपनी जान बचाओ। चार पैर वालों को हमारी खुशबू आ गयी है।"

बस चारों भाग लिये। उन्होंने नाले पार किये, पहाड़ियॉ चढ़े पर फिर भी कुत्तों ने उनका पीछा नहीं छोड़ा।

वे दलदल में से भागे, वे घनी झाड़ियों में से भागे पर फिर भी शिकारी लोग उनके पीछे थे। वे घाटियों में से भागे वे कॅटीली जमीन में से हो कर भागे पर कुत्तों की आवाज से नहीं बच सके।

आखिर वे थक कर चूर हो गये। इतने में वे चारों एक खोखले लट्ठे के पास आ गये। बूढ़ी मॉ भालू बोली — "बस यही हमारी आखिरी उम्मीद है अब तुम सब इस लट्ठे में घुस जाओ।"

वे सभी उस लट्ठे में घुस गये और हॉफते और डरते सॉस रोक कर बैठ गये। कुछ देर तक तो कोई शोर नहीं सुनायी दिया पर फिर थोड़ी ही देर में कुत्ते उनको सूँघते हुए उस लट्ठे के पास आ पहुँचे।

बूढ़ी मॉ भालू बहुत ज़ोर से उनके ऊपर गुर्रायी तो वे उनके पास नहीं जा पाये। सो कुछ देर के लिये फिर से सब कुछ शान्त हो गया। लड़के को लगा कि अब उसका परिवार सुरक्षित है पर ऐसा नहीं था। उसको धुँए की खुशबू आयी।

उस शिकारी ने कुछ पत्तियॉ और लकड़ियॉ इकट्ठी कर ली थीं और उनको उस लट्ठे के पास ला कर उनमें आग लगा दी थीं ताकि वे उस धुँए की खुशबू सूँघ कर बाहर निकल आयें।

अब उस लड़के से नहीं रहा गया वह चिल्लाया — "मेहरबानी कर के मेरे दोस्तों को कोई नुकसान मत पहुँचाइये।"

इसके जवाब में उसको बाहर से एक जानी पहचानी आवाज सुनायी दी — "कौन बोल रहा है यह? क्या कोई आदमी इस लट्ठे के अन्दर है?"

फिर उस लट्ठे के पास से लकड़ियॉ हटाने की आवाज आयी और धुँआ भी अन्दर आना बन्द हो गया। वह लड़का लट्ठे में से

बाहर निकल आया और उस शिकारी की तरफ देखा तो वह तो उसका मामा था।

उसका मामा ऑखों में ऑसू भर कर चिल्लाया — "ओ मेरे भानजे। क्या यह वाकई में तुम हो? मैंने तुमको गुफा में छोड़ने के बाद सोचा कि मैं तो बहुत ही बेवकूफ और बेरहम आदमी हूँ जो अपने भानजे को इस तरह से गुफा में बन्द कर के चला आया।

सो मैं तुमको ढूँढने के लिये फिर गुफा पर आया पर तब तक तुम वहॉ से जा चुके थे। वहॉ बहुत सारे जानवरों के पैरों के निशान भी थे सो मुझे लगा कि उन्होंने तुमको मार दिया।"

और सच भी यही था। मामा को घर पहुँचने से पहले ही लगा कि वह बहुत ही नीच आदमी था। सो वह तुरन्त ही वापस लौट पड़ा और निश्चय किया कि वह अपनी बहिन के लड़के को अपने बेटे की तरह से रखेगा।

वह और भी ज़्यादा दुखी हो गया था जब उसने देखा कि उस गुफा से उसका भानजा गायब हो गया था।

लड़का बोला — "हॉ मामा मैं ही हूँ। आपके छोड़ जाने के बाद इन्हीं भालुओं ने मेरी देखभाल की। ये अब मेरे परिवार की तरह हैं। मामा इनको मारना नहीं।" मामा ने हॉ में सिर हिलाया और अपने शिकारी कुत्ते एक पेड़ से बॉध दिये।

अभी भी डरते हुए वह बूढ़ी मॉ भालू अपने बच्चों के साथ लट्ठे में से बाहर निकली। वे जब उस लड़के से बात कर रहे थे तो उनके

शब्द उस लड़के के मामा को तो केवल उनकी गुर्राहट से ज़्यादा कुछ नहीं लगे। पर उन्होंने कहा कि अब उसको एक आदमी बन जाना चाहिये।

बूढ़ी मॉ भालू ने उस लड़के से कहा — "हम आपस में हमेशा दोस्त रहेंगे। तुम खुश रहना।"

और वह अपने दोनों बेटों को ले कर जंगल में चली गयी। वह लड़का अपने मामा के साथ घर चला आया और खुशी खुशी उसके साथ रहा।

बहुत दिनों तक वह उस जानवर के प्रेम को याद करता रहा और जितने दिन जिया उतने दिनों तक जानवरों का दोस्त बना रहा।

3 भालू सारे जाड़े क्यों सोता है[12]

बालों वाली मादा खरगोश एक बहुत ही प्रेमी और बड़े दिल वाली जानवर थी। वह सब जानवरों की सहायता करने में लगी रहती।

जब छोटे मेंढक को कोई और जगह खेलने के लिये नहीं मिलती तो वह मादा खरगोश अपनी जमीन में एक गड्ढा खोदती और उसको पानी से भर देती। और इस तरह से वह उस गड्ढे को मेंढक के खेलने की जगह बना देती।

मादा खरगोश ने गिलहरी को अपना घोंसला बनाते हुए देखा तो वह बहुत सारी पत्तियॉ ले आयी और उसके घोंसले के पास ला कर रख दीं ताकि वह गर्म रह सके।

वह जब मोल भाई[13] को अपना घर बनाने के लिये पत्थर हटाते देखती तो वह पत्थर हटाने में उसकी सहायता करती।

सारे जानवर उसका धन्यवाद करते और जब भी उसको किसी सहायता की जरूरत होती तो वे उसकी सहायता के लिये तैयार रहते।

---

[12] Why Bear Sleeps All Winter? – a story from Native Americans, North America.
Translated from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=221
Adapted, retold and written by Mike Lockett.

[13] Mole is a big rat type animal who lives in burrows. See its picture above.

वह बड़े कत्थई भालू की भी सहायता करती। भालू गर्मी भर बैरीज़[14] खा कर बिता देता जो झाड़ियों पर उगती थीं।

वह शहद की मक्खी के छत्ते से शहद भी खाता था पर अब भालू भूखा था तो उस मादा खरगोश ने भालू को अपनी ओक के पेड़ की गिरियॉ[15] जो उसने अपने शाम के खाने के लिये रखी थीं दे दीं।

उसने उसको गाजर और बन्द गोभी भी दी जो उसने अपने खाने के लिये पास के खेत से तोड़ कर ला कर रखी थी। पर बड़े कत्थई भालू ने तो उसको धन्यवाद भी नहीं दिया बल्कि उसने तो यह भी कहा कि उसको और चाहिये।

वह बड़ा कत्थई भालू हर जगह उस मादा खरगोश के पीछे पीछे घूमता रहता। जब भी कभी वह मादा खरगोश जाड़ों के लिये अपना खाना इकट्ठा करती वह बड़ा कत्थई भालू कहता "और"। और फिर वह उसका सारा खाना खा जाता।

इस तरह वह बड़ा भालू उसके लिये एक बड़ी समस्या बन गया था।

---

[14] Berry – Berries are a kind of small fruit grown on bushes, such as blueberry, raspberry etc. See their picture above.

[15] Acorn – the nuts of Oak tree fruits. See the picture of Oak fruits above.

जब उस मादा खरगोश ने लकड़ी के एक खोखले लट्ठे में जाड़ों के लिये अपना खाना भरा तो वह फिर बोला "और"। और फिर वह खाने के लिये उस लट्ठे पर चढ़ गया और मादा खरगोश का खाना खा कर सो गया।

सो मादा खरगोश छोटे मेंढक, गिलहरी और मोल भाई के पास गयी और बोली — "मैं क्या करूँ? मैं बहुत छोटी सी हूँ और बड़ा कत्थई भालू बहुत बड़ा है।

जो खाना मैं अपने लिये जाड़ों के लिये इकट्ठा करती हूँ वह वह सारा खाना खा जाता है। इस समय वह मेरे घर में मेरे खोखले पेड़ में रह रहा है। उसने मेरा घर भी ले लिया है।"

यह सुन कर छोटे मेंढक, गिलहरी और मोल भाई तीनों ने मादा खरगोश की सहायता करने का विचार किया।

गिलहरी ने उस खोखले पेड़ के दोनों तरफ सूखी पत्तियाँ लगा कर उसको बन्द कर दिया। छोटे मेंढक ने कीचड़ ला कर उन पत्तियों के ऊपर लपेट दी। और मोल ने उस कीचड़ के ऊपर छोटे छोटे पत्थर ला कर लगा दिये।

फिर वे सब बोले — "अब ओ मादा खरगोश तुम अपने पैरों से दबा दबा कर इन पत्थरों को इस कीचड़ में कस कर घुसा दो।" मादा खरगोश ने फिर यही किया।

जब वे लोग यह सब कर रहे थे वह बड़ा कत्थई भालू उस खोखले पेड़ के अन्दर सोता ही रहा।

जब भालू की ऑख खुली तो उसको चारों तरफ ऍधेरा ही ऍधेरा दिखायी दिया क्योंकि बाहर से कोई रोशनी न आने की वजह से उस खोखले लट्ठे में ऍधेरा ही ऍधेरा था तो उसने सोचा कि शायद अभी रात है सो वह फिर से सो गया। वह सोता ही रहा, सोता ही रहा, सोता ही रहा।

मादा खरगोश ने फिर अपने लिये एक नया घर ढूँढ लिया और उसको खाने से भर लिया। फिर जाड़ा आ गया। मादा खरगोश अपने घर में गर्म भी रही और अब उसके पास खाने के लिये भी बहुत कुछ था। उसके दोस्तों को बहुत बहुत धन्यवाद।

जाड़ा बीत गया। वसन्त आ रहा था। लट्ठे के बाहर चिड़ियों के चहचहाने की आवाज सुन कर आखिर भालू की ऑख खुली। तब उसने वे पत्तियॉ सूखी कीचड़ और पत्थर के टुकड़े हटाये और बाहर आया।

वसन्त आ चुका था। वह बोला — "अरे मैं तो सारे जाड़े यहॉ सोता ही रहा। यह तो बड़ा अच्छा रहा। इस तरह से मुझे जाड़े में खाने की परेशानी भी नहीं रहेगी। अब आगे से मैं यही करूँगा।"

अब तो यह बहुत पुरानी बात हो गयी पर मादा खरगोश अभी भी सबकी सहायता करती है, बड़े कत्थई भालू की भी।

पर उसको अब यह भी मालूम है कि उसके पास जाड़े भर के लिये खूब खाना रहेगा क्योंकि अब उसको बड़े कत्थई भालू से

अपना खाना नहीं बॉटना क्योंकि भालू अब सारे जाड़े सोते हैं और मादा खरगोश से खाना नहीं मॉगते।

4 भालू आदमी[16]

एक बार वसन्त के मौसम में उत्तरी अमेरिका की चेरोकी जाति[17] का एक आदमी था जिसका नाम तेज़ हवा था। वह अपनी पत्नी से विदा ले कर एक कोहरा छाये हुए पहाड़ पर शिकार के लिये चल पड़ा।

रास्ते में एक जंगल पड़ता था। उस जंगल में एक भालू तीर से घायल पड़ा था। जब उस भालू ने तेज़ हवा को उधर से जाते देखा तो वह वहॉ से भागा। तेज़ हवा ने उसका पीछा किया और एक के बाद एक तीर मार कर उसे नीचे गिराने की कोशिश की परन्तु वह उसको गिरा नहीं सका।

तेज़ हवा को बड़ा आश्चर्य हुआ कि ऐसा कैसे हो रहा था। उसको मालूम ही नहीं था कि उस भालू के पास एक ऐसी अनजान ताकत थी जिससे वह बात भी कर सकता था और कोई आदमी क्या सोच रहा है यह तक भी बता सकता था।

आखिरकार वह काला भालू भागते भागते रुक गया और उसने अपने शरीर से सारे तीर निकाल कर तेज़ हवा को दे दिये। फिर वह उससे बोला — "तुम्हारे इन तीरों का कोई फायदा नहीं क्योंकि

[16] A Bearman – a folktale from Cherokee Tribe, America, North America
[17] Cherokee – a tribe from North Amrican natives

ये मेरा कुछ नहीं बिगड़ सकते। तुम मुझको नहीं मार सकते। आओ, तुम मेरे साथ आओ मैं तुम्हें दिखाता हूँ कि भालू कैसे रहते हैं।"

तेज़ हवा ने सोचा "यदि मैं इसके साथ गया तो यह मुझे मार डालेगा।"

अब क्योंकि भालू के पास तो वह अनजान ताकत थी जिससे वह दूसरों के मन की बात भी पढ़ लेता था इसलिये उसने तुरन्त ही यह जान लिया कि तेज़ हवा क्या सोच रहा था इसलिये वह भी तुरन्त ही बोला — "तुम मेरे साथ चलो तो, मैं तुम्हें कोई नुकसान नहीं पहुँचाऊँगा। तुम मेरे साथ निडर हो कर आ सकते हो।"

तेज़ हवा ने फिर सोचा "यदि मैं इसके साथ गया तो वहाँ मैं खाऊँगा क्या?"

भालू ने यह भी जान लिया सो वह फिर बोला — "तुम खाने की बिल्कुल भी चिन्ता न करो मेरे पास तुम्हारे लायक बहुत खाना है।"

सो वे दोनों वहाँ से चल दिये। तेज़ हवा को साथ ले कर भालू एक गुफा तक आया और बोला — "हम यहाँ रहते तो नहीं हैं पर आज हम लोग यहाँ एक मीटिंग कर रहे हैं। तुम भी देखो कि हम लोग क्या करते हैं।"

वे लोग अन्दर आये तो तेज़ हवा क्या देखता है कि वह गुफा तो अन्दर आ कर बहुत बड़ी हो गयी है और वहाँ पर छोटे बड़े,

जवान बूढ़े, काले कत्थई सभी प्रकार के भालू बैठे हुए हैं। वहॉ एक बड़ा सफेद भालू भी था जो उन सबका सरदार दिखायी दे रहा था।

तेज़ हवा भी वहीं एक तरफ को बैठ गया परन्तु सभी भालुओं को तुरन्त ही उसकी बू आ गयी।

एक भालू बोला — "यह आदमी की बू कहॉ से आ रही है?"

सफेद भालू बोला — "ऐसा न बोलो। आज हमारे बीच में एक अजनबी बैठा है। उसे ऐसे ही बैठा रहने दो।"

यह सुन कर भालुओं ने अपनी मीटिंग शुरू कर दी। तेज़ हवा को यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि उसको उनकी सारी बातें समझ में आ रही थीं।

वे भालू पहाड़ों पर खाने की कमी के बारे में बात कर रहे थे कि उनको उस खाने की कमी को खत्म करने के लिये क्या करना चाहिये। वे इसका कोई तरकीब निकालने की कोशिश में थे।

मीटिंग के बाद उन्होंने नाचना शुरू कर दिया। जब वे नाच रहे थे तो एक भालू की नजर तेज़ हवा के तीर कमान पर पड़ गयी। वह बोला — "यही तो है वह जिससे आदमी हम लोगों को मारता है। देखें हम भी इसे इस्तेमाल कर सकते हैं या नहीं।"

ऐसा कह कर उसने तेज़ हवा का तीर कमान उठा लिया और उस पर तीर चढ़ाने की कोशिश करने लगा। जैसे ही उसने कमान की रस्सी खींची कि वह रस्सी उसके पंजों में फॅस गयी और तीर

नीचे गिर पड़ा। यह देख कर सारे भालू हॅस पड़े। फिर उसने वह तीर कमान तेज़ हवा को वापस दे दिया।

मीटिंग समाप्त होने के बाद तेज़ हवा उस काले भालू के साथ एक छोटी गुफा में आया। भालू उसको वह गुफा दिखाते हुए बोला — "देखो मैं यहॉ रहता हूँ।"

तेज़ हवा को अब तक बहुत ज़ोर की भूख लग आयी थी पर उसको वहॉ खाना कहीं भी नहीं दिखायी दे रहा था।

भालू ने जान लिया कि वह क्या सोच रहा है सो वह तुरन्त ही अपने पिछले पैरों पर खड़ा हो गया और उसने अपने आगे वाले पैरों से हवा में कुछ निशान बनाये और फिर उन पंजों को तेज़ हवा की तरफ बढ़ा दिया।

तेज हवा ने देखा कि उसके पंजों में चेस्टनट[18] भरे हुए थे। उसने यह जादू दोबारा किया तो अबकी बार उसके पंजों में रसभरियॉ थीं।

इसी तरह उसने तेज़ हवा को कई सारी खाने की चीज़ें दीं। और इस तरह तेज़ हवा उस भालू के पास उस गुफा में कई महीनों तक रहा।

कुछ महीनों के बाद उसने देखा कि उसके शरीर पर भालू की तरह के बाल उग आये हैं और उसने भालुओं जैसा खाना खाना भी

[18] Chestnut is a kind of nut which is when eaten roasted tastes very good. See its picture above.

शुरू कर दिया है। वह भालुओं की तरह बर्ताव भी करने लगा है। पर भगवान का लाख लाख धन्यवाद था कि वह अभी खड़े हो कर ही चलता था भालू की तरह चार पैर पर नहीं।

एक साल बीत गया था। अब फिर से वसन्त आ गया था। एक दिन भालू बोला कि आज मैंने सपना देखा कि चेरोकी लोग एक बड़े शिकार की तैयारी कर रहे हैं।"

तेज़ हवा ने पूछा — "क्या मेरी पत्नी अभी तक मेरा इन्तजार कर रही है?"

भालू बोला — "हॉ, वह अभी तक तुम्हारा इन्तजार कर रही है। पर तुम तो अब एक भालू आदमी बन चुके हो इसलिये अगर तुम अपने लोगों के बीच वापस जाना चाहते हो तो तुमको बिना खाये पिये किसी ऐसी बन्द जगह पर रहना होगा जहॉ लोग तुमको देखें नहीं। उसके बाद तुम फिर आदमी बन जाओगे।"

कुछ ही दिनों बाद चेरोकी शिकारियों की एक टोली वहॉ आ गयी। काला भालू और तेज़ हवा दोनों ही गुफा में छिप कर बैठ गये पर शिकारी कुत्तों ने उन दोनों का पता लगा लिया।

भालू बोला — "देखो, अब मेरी तीर न खाने की ताकत खत्म हो गयी है इसलिये तुम्हारे लोग तो मुझे अब मार ही डालेंगे पर वे तुमको कोई नुकसान पहुॅचायेंगे।

वे तुमको घर ले जायेंगे। सो अगर तुम वाकई आदमी बनना चाहते हो तो जो कुछ मैंने तुमसे कहा है उसे अच्छी तरह याद रखना।

और भी एक बात सुनो। वे लोग मुझे मार मार कर बाहर खदेड़ देंगे और मेरे टुकड़े टुकड़े कर डालेंगे। इसके बाद तुम मेरे शरीर के टुकड़ों को पत्तियों से ढक देना। जब वे तुमको ले जा रहे होंगे तब अगर तुम पीछे मुड़ कर देखोगे तो तुमको कुछ दिखायी देगा।"

भालू ने जैसा तेज़ हवा से कहा था लोगों ने उसके साथ वैसा ही किया। पहले उन्होंने भालू को मार डाला, फिर वे उसे गुफा के बाहर घसीट कर ले गये और फिर उसके शरीर के टुकड़े टुकड़े कर दिये।

तेज़ हवा इस डर से गुफा के अन्दर ही छिपा रहा कि वे लोग उसे कहीं भालू न समझ लें और उसको भी उसी तरीके से न मार दें जैसे उन्होंने भालू को मारा था। परन्तु कुत्ते उस गुफा के बाहर ही भौंकते रहे अन्दर नहीं आये।

इस पर शिकारियों ने गुफा के अन्दर झॉका तो उन्होंने देखा कि एक बालों वाला आदमी सीधा खड़ा हुआ है। उन शिकारियों में से एक आदमी उसको पहचान गया कि वह तेज़ हवा था।

यह सोचते हुए कि वह भालुओं का बन्दी था उन्होंने उससे पूछा कि क्या वह उन लोगों के साथ घर लौट जाना चाहेगा?

पर उन लोगों ने साथ में उसको यह भी बताया कि अगर वह आदमी बनना चाहता है तो उसको कम से कम सात दिन बिना कुछ खाये पिये एक कमरे में बन्द रहना पड़ेगा।

तेज़ हवा तैयार हो गया और शिकारी उसको साथ ले कर चल दिये।

गुफा से बाहर निकलने से पहले भालू के शरीर के टुकड़ों को तेज़ हवा ने पत्तियों से ढक दिया और आगे बढ़ गया। कुछ दूर जाने के बाद उसने पीछे मुड़ कर देखा तो उन पत्तियों के नीचे से भालू उठ कर अपनी गुफा की तरफ जा रहा था।

जब शिकारी घर पहुँचे तो वे तेज़ हवा को एक खाली मकान में ले गये और उस मकान का दरवाजा बन्द कर दिया।

तेज़ हवा ने उनको किसी से कुछ भी कहने को मना कर दिया था पर किसी ने गॉव में कहीं कुछ कह दिया सो अगले ही दिन तेज़ हवा की पत्नी को पता चल गया कि उसका पति उसी गॉव में आ गया है।

बस फिर क्या था तेज़ हवा की पत्नी जल्दी जल्दी उन शिकारियों के पास पहुँची और उनसे अपने पति को दिखा देने की प्रार्थना की।

शिकारियों ने उसको बहुत समझाया कि उसको अपने पति को देखने के लिये अभी सात दिन तक इन्तजार करना चाहिये उसके बाद ही वह बिल्कुल वैसे ही रूप में उसके सामने आ पायेगा जिस

रूप में उसने यह गॉव एक साल पहले छोड़ा था। पर यह बात उसकी समझ में ही नहीं आयी।

तेज़ हवा की पत्नी यह सुन कर बहुत निराश हुई और घर चली गयी लेकिन वह उन शिकारियों के पास रोज आती रही और उनसे बराबर कहती रही कि वे उसको उसके पति से मिलवा दें।

आखिर पॉचवें दिन जब उसने बहुत जिद की तो वे उसको उस घर की तरफ ले चले जिसमें तेज़ हवा बन्द था। वहॉ आ कर उन्होंने उस घर का दरवाजा खोल दिया और तेज हवा को बाहर आने को कहा। तेज़ हवा बेचारा बाहर आ गया।

समय से पहले निकलने की वजह से उसके शरीर पर अभी भी कुछ बाल बाकी बचे थे पर उसकी पत्नी उसको देख कर इतनी अधिक खुश हुई कि वह उसको जिद कर के अपने घर ले आयी। तेज़ हवा उसके साथ चला तो गया परन्तु कुछ ही दिनों बाद वह मर गया।

चेरोकी लोगों ने यह जान लिया कि यह काम उस भालू का है जिसके पास वह रहता था।

आज भी उस गॉव में वसन्त के पहले कुछ दिनों में दो भालू देखे जाते हैं – एक चार पैर पर चलता हुआ और दूसरा दो पैर पर चलता हुआ।

5 छोटे आदमियों की भेंटें[19]

एक बार एक लड़का था जिसके माता पिता मर गये थे। वह अपने चाचा के साथ रहता था जो उसको बहुत अच्छी तरह से नहीं रखता था। वह उसको फटे और मैले कपड़े पहनाता था इसलिये उस लड़के का नाम "मैले कपड़े" पड़ गया था।

पर यह लड़का, यानी कि मैले कपड़े, शिकार करने में बहुत होशियार था। जबकि उसका चाचा बहुत आलसी था और अपने आप शिकार करने नहीं जाता था। वह अपने भतीजे को शिकार के लिये भेज देता था।

सो वह बेचारा अपने आलसी चाचा के लिये खाना इकट्ठा करने के लिये घंटों जंगल में रहता और उसके खाने के लिये शिकार कर के लाता।

एक दिन यह लड़का एक नदी के पास से जा रहा था। उसकी कमर से उसकी उस दिन की शिकार की हुई दो गिलहरियॉ लटक रहीं थीं। उस समय वह एक ऐसी पहाड़ी के पास से गुजर रहा था जो पानी में से ऊपर की तरफ निकली हुई थी।

[19] The Gifts of Little People – a folktale from Native Americans, America. From Iroquois Tribe. Translated from the Web Site : http://www.firstpeople.us/FP-Html-Legends/TheGiftsOfTheLittlePeople-Unknown.html

यहीं वे छोटे आदमी, यानी जोगेओ[20] लोग, अक्सर अपने ढोल बजाया करते थे। गॉव के बहुत सारे लोग इस जगह आने से डरते थे। पर उस लड़के को अपनी मॉ के वे शब्द याद थे जो उसने कई साल पहले उससे कहे थे — "तुम जब भी अच्छे इरादे से कहीं जाते हो तो तुमको डरना नहीं चाहिये।"

उस नदी के किनारे एक बड़ा सा पेड़ खड़ा हुआ था। उसने उसकी शाखाओं में कुछ हिलता हुआ सा देखा। उसने उस तरफ देखा तो देखा कि एक काली गिलहरी एक शाख से दूसरी शाख पर कूद रही थी।

तभी उस मैले कपड़े ने एक छोटी सी आवाज सुनी — "फिर से मारो भाई। तुमने तो अभी तक उसको मारा ही नहीं है।"

मैले कपड़े ने नीचे देखा तो दो छोटे शिकारियों को खड़े पाया।

उनमें से एक ने फिर से उस गिलहरी को तीर मारा जो उस पेड़ पर कूद रही थी पर वह उस काली गिलहरी तक नहीं पहुॅच पाया उससे थोड़ा सा ही दूर रह गया।

मैले कपड़े ने सोचा इस तरह तो ये कभी भी इस गिलहरी को नहीं मार पायेंगे। मुझे ही इनकी सहायता करनी चाहिये। सो उसने अपनी कमान खींची और उस काली गिलहरी की तरफ एक तीर चला दिया। वह गिलहरी तुरन्त ही नीचे आ गिरी और मर गयी।

वे छोटे शिकारी उस गिलहरी की तरफ दौड़े।

[20] Jo-Ge-Oh people

एक ने पूछा — "यह तीर किसका है?"

उन्होंने ऊपर देखा तो एक लड़के को खड़ा पाया।

उनमें से एक शिकारी बोला — "ओह, तुम तो बड़े अच्छे शिकारी हो। क्योंकि यह गिलहरी तुमने मारी है इसलिये यह गिलहरी तुम्हारी है।"

मैले कपड़े ने जवाब दिया — "धन्यवाद। पर यह गिलहरी तुम्हारी है और साथ में ये गिलहरियॉ भी जो मैंने आज ही मारी हैं ये भी तुम ही ले लो।"

यह सुन कर वे दोनों शिकारी बहुत खुश हुए। वे बोले — "चलो हमारे घर चलो ताकि हम तुम्हारा ठीक से धन्यवाद कर सकें।"

मैले कपड़े ने अपने चाचा के बारे में सोचा पर अभी तो दिन निकला ही निकला था सो वह उन आदमियों के घर जाने के बाद भी कुछ और शिकार कर सकता था।

यह सोच कर वह उनके घर जाने के लिये तैयार हो गया और उनसे बोला — "ठीक है। चलो, मैं तुम्हारे घर चलता हूॅ।"

वे दोनों छोटे आदमी उस मैले कपड़े को नदी की तरफ ले गये। वहॉ एक बहुत ही छोटी सी नाव खड़ी थी - उसके एक जूते जितनी बड़ी। पर उसके नये दोस्तों ने उससे उसी नाव में बैठ जाने के लिये कहा।

डरते हुए उसने उस नाव में कदम रखा। तो जैसे ही उसने उस नाव में कदम रखा वह भी उन्हीं छोटे आदमियों जितना छोटा हो गया। वे दोनों छोटे आदमी भी उस नाव में बैठ गये।

उन छोटे आदमियों ने पतवार चलानी शुरू की तो वह नाव तो हवा में उड़ने लगी। वह नाव उस पेड़ के ऊपर उड़ती हुई एक पहाड़ी की गुफा की तरफ चल दी जहॉ वे जोगेओ लोग रहते थे।

वहॉ जा कर उन दोनों छोटे आदमियों ने दूसरे आदमियों को अपनी कहानी सुनायी तो वहॉ के लोगों ने उस लड़के का अपने दोस्त की तरह से स्वागत किया।

लड़के के नये दोस्तों ने उससे कहा — "तुम कुछ समय के लिये हमारे साथ ही रहो ताकि हम तुम्हें कुछ सिखा सकें।" फिर उन लोगों ने उस लड़के को ऐसी बहुत सारी बातें सिखायीं जो उसको मालूम ही नहीं थीं।

उन्होंने उसको चिड़ियों के बारे में और जंगली जानवरों के बारे में बहुत सारी बातें बतायीं। उन्होंने उसको मक्का, काशीफल और बीन्स के बारे में बहुत कुछ बताया जिन पर आदमी लोग जीते हैं।

उन्होंने उसको स्ट्रौबैरी के बारे में भी बताया जो हर जून में घास में अंगारे की तरह चमकती हैं और उसके एक खास रस के बारे में भी बताया जिसको वे छोटे लोग बहुत पसन्द करते थे।

आखीर में उन्होंने उसको एक नाच सिखाया और कहा कि वह नाच वह अपने लोगों को जा कर सिखा दे जिसे वह अँधेरे में नाचें

ताकि वे छोटे आदमी भी उनके साथ वहॉ छिप कर नाच सकें। यह नाच उन जोगेओ आदमियों को उनकी दी हुई भेंट देने के धन्यवाद के बदले में होगा।

चार दिन गुजर गये थे और उस लड़के को मालूम था कि अब उसको अपने घर वापस जाना चाहिये। उसने अपने नये दोस्तों से कहा कि वह अब अपने घर जाना चाहता है सो वह दो शिकारियों के साथ अपने घर की तरफ रवाना हुआ।

जब वे सब जा रहे थे तो उसके दोस्तों ने कई पौधों की तरफ इशारा कर के उसे उनके फायदे बताये। लड़के ने भी उन पौधों की तरफ गौर से देखा और उनके नाम याद कर लिये।

पर फिर जैसे ही उसने मुड़ कर अपने दोस्तों की तरफ देखना चाहा तो उसने अपने आपको अपने गॉव के पास के एक खेत में अकेला खड़ा पाया।

मैले कपड़े तो गॉव में ऐसे सोच कर लौटा था जैसे इन चार दिनों में पता नहीं उसका गॉव कितना बदल गया होगा। और यह सच भी था। जगह तो वही थी पर फिर भी वह गॉव अब वैसा नहीं था जैसा वह छोड़ कर गया था।

जब वह गॉव में घुसा तो लोग उसकी तरफ ऐसे देखने लगे जैसे वह कोई अजनबी हो। फिर एक स्त्री उसके पास आयी और बोली — "ओ अजनबी तुम्हारा स्वागत है। तुम हो कौन यह तो बताओ।"

लड़का आश्चर्य से बोला — "अरे तुम मुझे नहीं जानतीं? मैं मैले कपड़े।"

स्त्री बोली — "यह कैसे हो सकता है तुम्हारे कपड़े तो बहुत सुन्दर हैं।"

उस स्त्री के कहने पर उसने अपने कपड़ों की तरफ देखा तो आश्चर्य से उसकी ऑखें फटी की फटी रह गयीं। उसके वे फटे कपड़े तो पता नहीं कहॉ गायब हो गये थे और वह तो बहुत सुन्दर कपड़े पहने हुए था।

उसके मैले कपड़े तो गायब हो चुके थे और अब वह हिरन की मुलायम खाल के कढ़े हुए कपड़े पहने था।

उसने उस स्त्री से पूछा — "मेरे चाचा कहॉ हैं? वह यहॉ सामने वाले घर में रहते थे और उनके एक भतीजा था मैले कपड़े।"

तभी एक बूढ़ा आदमी भीड़ में से बोला — "ओह वह आलसी आदमी? वह तो बरसों पहले मर गया। पर तुम जैसा अच्छा आदमी उस जैसे आलसी आदमी के बारे में क्यों पूछ रहा है?"

इस पर उस मैले कपड़े ने अपनी तरफ देखा तो पाया कि वह अब लड़का नहीं रह गया है। वह तो एक सुन्दर जवान बन गया है जो अपने गॉव वालों के बराबर में खड़ा हो सकता है।

वह उनसे बोला — "क्योंकि वह मेरे चाचा थे। अब मुझे पता चला कि उन छोटे आदमियों ने मुझे कई भेंटें दीं हैं जिन्हें मैं सोच भी

नहीं सकता।" और फिर उसने अपने गॉव वालों को अपनी कहानी सुनायी।

सब अक्लमन्द आदमियों और औरतों ने उसकी कहानी सुनी और उसकी कहानी से बहुत सी बातें सीखीं। उस रात गॉव के सब लोगों ने जोगेओ लोगों की भेंटों का धन्यवाद करने के लिये खूब नाच किया।

उस रात के अँधेरे में उन्होंने उन छोटे आदमियों की छोटी छोटी आवाजें भी सुनी। वे छोटे आदमी भी यह जान कर बहुत खुश थे कि वे आदमी उनकी भेंटों का धन्यवाद कर रहे थे।

आज भी वे छोटे आदमी उस गॉव के लोगों के दोस्त हैं और आज भी वहॉ के लोग उन छोटे लोगों को धन्यवाद के रूप में वह नाच वहॉ करते हैं।

6 लड़की जो आम चीज़ों से सन्तुष्ट नहीं थी[21]

एक बार एक लड़की थी जो आम बातों से सन्तुष्ट नहीं होती थी। उसके पिता उसके लिये कोई भी दुलहा ढूँढने में नाकामयाब रहे थे क्योंकि वह किसी लड़के को पसन्द ही नहीं करती थी।

वह किसी को मोटा बताती तो किसी के लिये वह कहती — "आपने देखा उसके जूते कितने गन्दे थे।" तो किसी के लिये कहती — "मुझे उसके बोलने का ढंग नहीं अच्छा लगा।"

एक रात जब उनके घर में माँ शाम का खाना बनाने के बाद आग बुझाने वाली थी कि एक अजनबी नौजवान ने दरवाजा खटखटाया।

माँ ने कहा — "अन्दर आओ।"

पर वह नौजवान वहीं बाहर ही खड़ा रहा और उस लड़की की तरफ देख कर बोला — "मैं तुमसे शादी कर के तुम्हें ले जाने आया हूँ।"

यह नौजवान बहुत सुन्दर था। आग की रोशनी में उसका चेहरा चमक रहा था। कमर में उसने काले और पीले रंग की चौड़ी सी पेटी बाँध रखी थी जो पानी की तरह चमक रही थी। उसके सिर पर

[21] The Girl Who Was Not Satisfied with Simple Things – a folktale from Iroquois Tribe, Native Americans, America. Translated from the Web Site : http://www.firstpeople.us/FP-Html-Legends/The-Girl-Who-Was-Not-Satisfied-With-Simple-Things-Iroquois.html

दो लम्बे पंख लगे हुए थे और उसकी चाल भी शान शौकत वाली थी।

उस लड़के की बात सुन कर लड़की की मॉ कुछ परेशान हो गयी। वह अपनी बेटी से बोली — "मेरी बेटी, तुम तो इस पूरे गॉव में से किसी भी लड़के से शादी नहीं कर रही थीं फिर क्या तुम इस अजनबी नौजवान से शादी करोगी जिसकी जात पॉत का भी तुमको पता नहीं है?"

पर उस लड़की से तो कुछ कहने से फायदा ही नहीं था क्योंकि उसको तो वह लड़का देखते ही पसन्द आ गया था। उसने अपने कपड़े बॉधे और उस रात में उस सुन्दर अजनबी के पीछे पीछे चल दी।

वह लड़की उस अजनबी के पीछे पीछे अॅधेरे में थोड़ी दूर तो चली पर फिर उसको डर लगने लगा। उसको लग रहा था कि वह अपनी मॉ का घर छोड़ कर इस अजनबी के साथ अकेली क्यों चली आयी जबकि वह तो इसको जानती भी नहीं।

उसी समय उसके पति ने अॅधेरे में फुसफुसाते हुए लड़की से कहा — "डरो नहीं। हम अभी थोड़ी ही देर में अपने लोगों में आ जायेंगे।"

लड़की बोली — "पर यह कैसे हो सकता है। मुझको तो लगता है कि हम नदी की तरफ जा रहे हैं।"

उस नौजवान ने फिर उसकी बॉह पकड़ी और बोला — "बस मेरे पीछे पीछे आ जाओ। इस पहाड़ी के नीचे जा कर ही मेरे आदमियों की जगह है।"

दोनों एक पहाड़ी के नीचे उतरे और एक घर के पास आ गये जिसके दरवाजे के ऊपर दो बड़े बड़े सींग लगे हुए थे जैसे कि किसी बड़े बारहसिंगे के सिर पर लगे रहते हैं।

पति बोला — "यही हमारा घर है। अभी तुम सो जाओ कल तुम मेरे लोगों से मिलना।"

लड़की वहॉ सारी रात डरती रही। उसने घर के बाहर अजीब अजीब आवाजें सुनीं। लड़की ने महसूस किया कि उस घर में मछली की बू भी आ रही थी।

लड़की को रात भर नींद नहीं आयी। वह सारी रात अपनी ऑखें खोले और अपने को कम्बल में कस कर लपेटे सुबह का इन्तजार करती रही।

पर जब सुबह हुई तो सूरज ही नहीं निकला। सॉवला आसमान केवल हल्की हल्की रोशनी से भरा हुआ था।

उसके पति ने उसको पहनने के लिये एक नयी पोशाक दी। वह पोशाक उसके पति की पोशाक की तरह से सीपी के मोतियों[22] से सजी हुई थी।

[22] Translated for the word "Wampum" – a kind of shell beads indigenous to natives of North America

पोशाक दे कर उस नौजवान ने उस लड़की से कहा कि इससे पहले कि वह उसके आदमियों से मिले वह उस पोशाक को पहन ले।

पर वह लड़की इतनी डरी हुई थी कि वह उस पोशाक को हाथ भी नहीं लगा पा रही थी। वह बोली — "इस पोशाक में से तो मछली की बू आ रही है। मैं इसे नहीं पहनूँगी।"

उसका पति यह सुन कर गुस्सा तो हुआ पर बोला कुछ नहीं।

कुछ देर बाद ही घर के दरवाजे की तरफ बढ़ते हुए वह फुसफुसाया — "मुझे कुछ देर के लिये बाहर जाना है। तुम यहाँ से कहीं जाना नहीं और जो कुछ भी देखो उससे डरना भी नहीं।"

इतना कह कर वह घर से बाहर चला गया। वह लड़की वहीं अपनी किस्मत पर रोती हुई सी बैठी रह गयी।

वह सोचने लगी कि अगर वह आम लोगों की तरह से आम चीज़ों से खुश रहती तो आज उसके साथ ऐसा न हुआ होता।

उसने अपनी माँ के घर में आग के बारे में सोचा। उसने उन सादा अच्छे दिल वाले आदमियों के बारे में सोचा जिन्होंने कभी उससे शादी करने की इच्छा प्रगट की थी।

उसी समय सींग वाला एक बड़ा साँप घर के दरवाजे में से अन्दर घुसा। तो वह तो डर के मारे वहीं जमी की जमी बैठी रह गयी। वह उसके पास आया और उसकी आँखों में देर तक देखता रहा।

उसके शरीर के चारों तरफ चमकीले काले और पीले रंग की धारियॉ थीं। कुछ देर बाद वह वहॉ से चला गया।

उसके जाने के बाद वह लड़की उठ कर उसके पीछे पीछे गयी और बाहर की तरफ झॉका। उसने देखा कि उसके चारों तरफ तो सॉप ही सॉप हैं। कुछ चट्टानों पर लेटे पड़े थे और कुछ गुफा के बाहर रेंग रहे थे।

अब उसको लगा कि उसका पति जो दिखायी दे रहा था वह वह नहीं था। वह तो आदमी भी नहीं था वह आदमी की शक्ल में सॉप था। अब यह लड़की बेवकूफ तो थी पर वह थी बहुत हिम्मत वाली।

वह जान गयी थी कि उसको अपने पति की दी हुई जादुई पोशाक नहीं पहननी चाहिये वरना वह खुद भी सॉप बन जायेगी। पर वह उससे बचे कैसे?

वह सोचती रही और सोचती रही पर क्योंकि वह रात भर नहीं सोयी थी सो वह ऑख बन्द कर के लेट गयी। न जाने कब उसको नींद आ गयी और वह सो गयी। जब वह सो रही थी तो उसको लगा कि उसके सपने में एक बूढ़ा आदमी आया।

वह बड़ी साफ और गहरी आवाज में बोला — "मेरी बच्ची, मैं तुम्हारी सहायता करूॅगा।"

लड़की बोली — "पर बाबा मैं क्या करूॅ?"

बूढ़े ने जवाब दिया — "तुम तो बस जो मैं कहूँ वह करो। तुम तुरन्त ही यह जगह छोड़ दो और गॉव के किनारे की तरफ भाग जाओ। वहॉ तुमको एक ऊँची पहाड़ी मिलेगी।

तुम उस पहाड़ी पर चढ़ जाना और पीछे मुड़ कर नहीं देखना नहीं तो तुम्हारे पति के लोग तुमको रोक लेंगे। जब तुम उस पहाड़ी के ऊपर पहुँच जाओगी तब मैं तुम्हें वहॉ मिल जाऊँगा।"

जब लड़की की ऑख खुली तो उसको लगा कि उसको उस बूढ़े की बात मान लेनी चाहिये। सो वह बाहर गयी पर तभी उसने अपने पति को घर आते देखा। अभी भी वह एक सुन्दर नौजवान के रूप में था।

उसको मालूम था कि उसको तुरन्त ही यहॉ से भाग जाना चाहिये नहीं तो वह यहॉ उम्र भर के लिये कैद हो जायेगी।

सो वह एक चिड़िया की तरह उड़ कर अपने पति के घर के दरवाजे से बाहर निकल गयी और उस पहाड़ी की तरफ भाग गयी।

उसके पीछे पीछे उसका पति चिल्लाया — "वापस आ जाओ।"

पर वह लड़की तो चलती चली गयी, चलती चली गयी और उसने वापस मुड़ कर भी नहीं देखा। वह जितनी तेज़ भाग सकती थी उतनी तेज़ भागी जा रही थी।

अपने पीछे उसने सरकंडों के पेड़ों[23] में सरसराहट की आवाज भी सुनी पर फिर भी उसने वापस मुड़ कर नहीं देखा। पहाड़ी उसके पास आती जा रही थी।

उसने अपने पति की एक बार फिर फुसफुसाहट सुनी — "वापस आ जाओ ओ मेरी प्रिय पत्नी, वापस आ जाओ। आओ मेरे लोगों से मिल लो।" पर अब तक वह पहाड़ी के पास तक आ पहुँची थी और बस अब उस पर चढ़ने ही वाली थी।

वह उस बूढ़े के वायदे को याद कर के अपनी पूरी ताकत लगा कर उस पहाड़ी पर चढ़ती गयी चढ़ती गयी। वह अब उस पहाड़ी के ऊपर तक आ पहुँची थी। वहाँ आ कर उसको लगा कि बस अब वह बूढ़ा आदमी आ कर उसको सँभाल ले।

ऐसा ही हुआ वहाँ उस बूढ़े आदमी ने उसके हाथ पकड़ कर उसको उठा लिया। अब उसने पीछे मुड़ कर देखा तो उसको पता चला कि वह तो नदी पार कर के उस पहाड़ी के ऊपर तक चढ़ आयी है।

उसके पीछे बहुत सारे सींगों वाले साँप थे। उस बूढ़े आदमी ने उन साँपों को भगाने के लिये बहुत सारी बिजली उनकी तरफ फेंकी

[23] Translated for the word "Reed". See its picture above.

जो उन सॉपों को जा कर लगी। अब उसको पता चल गया कि वह बूढ़ा आदमी हैनो था "बिजली वाला"[24]।

इसके बाद पूरे आसमान में बिजली चमकने लगी बादल गरजने लगे। उन सॉपों ने नदी पार कर भागना चाहा पर हैनो की बिजली ने सबको मार डाला।

कुछ देर बाद तूफान थम गया और वह लड़की वहॉ बारिश में भीगी खड़ी रह गयी।

हैनो ने उस लड़की की तरफ देखा और बोला — "मेरी बच्ची, तुम बहुत बहादुर हो। तुमने इन सब राक्षसों को इस धरती पर से हटाने में मेरी बड़ी सहायता की है। शायद मैं तुम्हें फिर बुलाऊॅ क्योंकि तुम्हारे इस काम ने तुमको और ज़्यादा ताकतवर बना दिया है।"

उसके बाद उस बूढ़े ने अपना हाथ उठाया तो एक बादल का टुकड़ा धरती पर आ गया। वह और वह लड़की दोनों उस बादल पर चढ़ गये और उस लड़की के गॉव आ गये।

ऐसा कहा जाता है कि फिर उस लड़की ने उस आदमी से शादी कर ली जिसका दिल बहुत अच्छा था। दोनों के कई बहुत अच्छे अच्छे बच्चे भी हुए। यह भी कहा जाता ही कि उसका बाबा, यानी हैनो, भी उससे मिलने के लिये उसके घर कई बार आया।

[24] Heno, the Thunderer

वह लड़की भी कई बार अपने बाबा के साथ उड़ कर गयी और धरती के बोझ को उतारने उसकी सहायता की। जब वह बूढ़ी हो गयी तो उसने अपने पोतों और पोतियों को समझाया कि आदमी को हमेशा आम चीज़ों से ही खुश रहना चाहिये।

7 भूखा लोमड़ा और अकड़ू उम्मीदवार[25]

एक बार एक लोमड़ा अपना खाना ढूँढने के लिये इधर उधर घूम रहा था पर उसको कोई शिकार ही हाथ नहीं लग रहा था।

उसको खाना खाये हुए भी काफी समय हो गया था सो भूख के मारे उसका पेट इतनी ज़ोर से बोल रहा था कि उसकी आवाज के सामने उसको कुछ और सुनायी ही नहीं दे रहा था।

अचानक उसको लगा कि कोई गाना गाते हुए उधर चला आ रहा था। तुरन्त ही वह अपने रास्ते से कूद कर एक झाड़ी में जा कर छिप कर पेट के बल बैठ गया।

गाने की आवाज धीरे धीरे तेज़ होती जा रही थी। लोमड़े ने देखा कि कोई पहाड़ी के ऊपर आ रहा था। उसने फिर देखा कि वह तो सारस[26] का एक पंख था।

लोमड़े ने सोचा कि अगर वह पंख यहाँ है तो सारस भी यहीं कहीं होगा सो वह उस पंख पर कूदने के लिये अपने पंजे उठा कर तैयार हो गया। पर जैसे जैसे वह पंख ऊपर उठता चला गया तो उसने देखा कि वहाँ तो कोई चिड़िया नहीं थी।

---

[25] The Hungry Fox and the Boastful Suitor – a folktale from Native Americans, America. From Iroquois Tribe. Translated from the Web Site : http://www.firstpeople.us/FP-Html-Legends/TheHungryFoxAndTheBoastfulSuitor-Iroquois.html

[26] Translated from the word “Heron” – it is a Saaras (crane) like water bird.

वह पंख तो एक टोप[27] में लगा हुआ था जो इरोकोइ लोग अपने सिर पर पहनते थे। और अब तो उस इरोकोइ आदमी का चेहरा भी दिखायी देने लगा था। वह घोड़े पर चढ़ा चला आ रहा था।

लोमड़े ने सोचा — "अगर यह मुझे देख लेगा तो मैं तो अपनी भूख हमेशा के लिये भूल जाऊँगा।" और यह तो सभी जानते थे कि इरोकोइ लोग लोमड़े की खाल को कितनी कीमती समझते थे।

सो लोमड़े ने अपने को चूहे से भी छोटा बनाने की कोशिश की ताकि वह उस इरोकोइ आदमी से छिप सके।

वह इरोकोई आदमी एक जवान लड़का था। वह और पास आता गया तो लोमड़े ने देखा कि वह तो बहुत अच्छे कपड़े पहने था। जैसे जैसे वह पास आता जा रहा था लोमड़े को उसका गाना और साफ सुनायी देता जा रहा था।

वह यह गाना अपनी ही तारीफ में गा रहा था। उसने गाया —

हिरों के पंख से ज़्यादा और कोई बहादुर नहीं है
और मुझे यह पता होना चाहिये क्योंकि वह मैं हूँ
कोई और इससे ज़्यादा अच्छे कपड़े नहीं पहनता
कोई और मुझसे अच्छा मछियारा नहीं है
अगर तुमको कोई शक है तो आओ और देख लो

[27] Translated from the word "Gustoweh" – Iroquois men's headdress – a fitted hat made of strips of wood.

वह एक जवान लड़की के घर जा रहा था जिससे वह कुछ दिनों से मिल रहा था। वह उसको प्रभावित करने की कोशिश कर रहा था ताकि वह लड़की उससे शादी करने के लिये तैयार हो जाये। उसके अच्छे कपड़े और उसका गाना भी उसी लड़की के लिये था।

पर लोमड़ा न तो उस सारस के पंख वाले लड़के का गाना सुन रहा था और न ही उसके अच्छे कपड़े देख रहा था। उसका ध्यान तो बस उसकी तरफ से आने वाली मछली की बू से था।

उसके कम्बल से लटकते बड़े से थैले में बहुत सारी मछली भरी हुई थी। लोमड़े के मुँह में पानी आ रहा था और उसकी जीभ बाहर को निकली पड़ रही थी। मछली खाये हुए भी उसे कितना समय बीत गया था यह सोच कर ही उसका डर निकल गया।

वह लड़का अब उसके पास से गुजर रहा था पर लोमड़ा तो बहुत आगे की सोच रहा था।

लोमड़े ने सोचा इससे मछली लेने का एक ही तरीका है। और वह वह तरीका सोचते हुए सड़क से छिपता हुआ जंगल से हो कर उस लड़के से आगे निकलने के लिये भागा। जल्दी ही वह उस इरोकोइ लड़के से आगे निकल गया।

एक मोड़ के पास जा कर वह रास्ते के किनारे पर लेट गया। उसने अपनी ऑखें बन्द कर लीं और मुँह खोल लिया ताकि उसकी जीभ धूल में लटकी रहे।

ऐसा कर के वह बिना हिले डुले चुपचाप लेट गया और उस लड़के के आने का इन्तजार करने लगा। जल्दी ही उसको उस लड़के का अपनी तारीफ वाला गाना फिर सुनायी देने लगा।

अब सारस के पंख वाला लड़का तो अपने गाने में बहुत मग्न था और अपनी तारीफ में कुछ और शब्द भी ढूँढ रहा था जैसे कि वह अपने सफेद हिरन की खाल के कोट में कितना अच्छा लग रहा था कि वह लोमड़े के पास से गुजर गया।

पर जैसे ही वह लोमड़े के पास से गुजर गया तो उसको वह लोमड़ा दिखायी दे गया तो वह रुका — "उॅह, यह क्या है?"

कहते हुए वह अपने घोड़े से नीचे उतरा और पीछे की तरफ आया। उसने उसे देखा — "उॅह, यह तो एक मरा हुआ लोमड़ा है।"

उसने एक लम्बी सी डंडी उठायी और उस डंडी से लोमड़े की बगल में एक तरफ को मारा। पर लोमड़ा बिल्कुल चुपचाप पड़ा रहा।

लड़के को लगा कि लोमड़ा मरा हुआ है फिर भी पक्का करने के लिये कि वह वाकई मरा हुआ है वह उसको पास से देखने के लिये उसके ऊपर झुका।

उसने देखा कि वह लोमड़ा वाकई मरा हुआ था। इसके अलावा वह पतला जरूर था पर उसकी खाल ठीक थी सो उसने उसको उसकी पूँछ पकड़ कर उठा लिया।

वह बोला — "लगता है कि इसको मरे हुए ज़्यादा देर नहीं हुई है। बस इसमें से थोड़ी सी बदबू जरूर आ रही है।"

जब उस लड़के ने यह कहा तो लोमड़े ने अपना मुँह थोड़ा सा खोला और उसके होठ उसके दाँतों के पीछे चले गये। पर सारस के पंख वाले लड़के ने यह नहीं देखा। उसको उठा कर उसने सोचा कि वह उसकी खाल घर पहुँच कर अभी अभी निकाल लेगा।

जब उस लड़के ने यह कहा तो लोमड़े ने अपनी आँख मिचकायी। पर सारस के पंख वाले लड़के ने उसका आँख मिचकाना भी नहीं देखा।

फिर उस लड़के का विचार बदल गया। उसने सोचा — "नहीं, अगर मैंने इसकी खाल अभी निकाली तो मेरे इतने अच्छे नये कपड़े गन्दे हो जायेंगे इसलिये अभी मैं इसको लिये चलता हूँ बाद में देखूँगा।"

वह अपने घोड़े के पास आया, अपने थैले की रस्सी खोली और बोला — "जब स्वेयिंग रीड[28] की माँ इस लोमड़े को देखेगी जिसे मैंने पकड़ा है तो वह सोचेगी कि मैं कितना बड़ा शिकारी हूँ। और अपनी बेटी को मुझसे शादी की रोटी[29] लाने के लिये जरूर राजी कर लेगी।"

[28] Swaying Reed – name of his girlfriend whose house he was going to

[29] Marriage Bread – perhaps it was their custom that when the girl's mother is ready to marry her daughter to some boy, she would ask her daughter to take marriage bread to her would be husband.

उसने उस लोमड़े को मछलियों के साथ ही अपने थैले में डाल लिया और उस थैले का मुँह रस्सी से बन्द कर अपने घोड़े पर लाद लिया।

फिर वह खुद भी घोड़े पर चढ़ गया और फिर से गाता हुआ चल दिया उस लड़की के घर चल दिया। इस बार उसका गाना इस बारे में था कि वह कितना बड़ा शिकारी था।

अब उस थैले में वह लोमड़ा कुछ देर तक तो शान्त पड़ा रहा पर फिर उसने एक तरफ से वह थैला काटना शुरू किया। जब उस का वह छेद कुछ बड़ा हो गया तो उसने उस छेद में से एक एक कर के मछलियॉ फेंकना शुरू कर दिया।

जब उसने उस छेद में से सारी मछलियॉ फेंक दीं तो उसने उस छेद को थोड़ा और बड़ा किया और खुद भी उसमें से बाहर कूद गया। बहुत दिनों बाद आज उसको बहुत अच्छा खाना मिला था।

वह सारस के पंख वाला लड़का तो अपने गाने में इतना मग्न था कि उसने यह सब देखा ही नहीं। अब वह उस गॉव तक पहुँच गया था जहॉ उसकी स्वेयिंग रीड रहती थी।

वह स्वेयिंग रीड की मॉ के घर के सामने रुका और अपने घोड़े पर बैठा तब तक गाता रहा जब तक वहॉ काफी लोग इकट्ठा नहीं हो गये। उसने वहॉ अपने बढ़िया कपड़ों के बारे में गाया, उन मछलियों के बारे में गाया जो उसने पकड़ीं थीं और दूसरे जानवरों के बारे में गाया जो उसने मारे थे और पकड़े थे।

वैसे तो वे मछलियॉ भी उसने पकड़ीं नहीं थीं बल्कि अपनी मॉ के मोती लगे जूतों को बेच कर खरीदी थीं।

स्वेयिंग रीड और उसकी मॉ घर से बाहर निकली तो उनको देख कर उस लड़के ने यह सोच कर अपना हाथ अपने थैले की तरफ बढ़ाया कि अब वह उनको यह दिखायेगा कि वह घर में कितना सारा खाना ला सकता है।

पर यह क्या? जैसे ही उसने अपना थैला उठाया तो वह तो उसको बहुत हल्का लगा। उसमें तो कुछ भी नहीं था वह खाली था। और साथ में उसकी तली में एक बड़ा सा छेद भी था। उसका गाना रुक गया। चुपचाप उसने अपना घोड़ा मोड़ा और वापस चल दिया।

उस दिन उसको लगा कि इस तरह के अपनी तारीफ वाले गीत किसी आदमी को बड़ा नही बनाते। किसी लोमड़े को पाना एक बात है और उसकी खाल निकालना दूसरी बात।

8 दो बेटियॉ[30]

एक बार एक स्त्री अपनी दो बेटियों के साथ रहती थी। उसकी दोनों बेटियॉ बहुत सुन्दर और होशियार थीं और उनकी मॉ को उन पर पूरा विश्वास था कि जब वे बड़ी होंगी तब उनको अपना पति ढूँढने में कोई परेशानी नहीं होगी।

जब उसकी बड़ी वाली लड़की सोलह साल की हुई तो उसने कहा — "मेरी बच्चों, हम लोगों को यहॉ रहते हुए कई साल हो गये। हम लोग यहॉ बहुत अच्छे तरीके से रहे। इसके लिये यहॉ के हमारे दोस्तों, मक्का, बीन्स और काशीफल सबको धन्यवाद।

पर बहुत दिनों से हम लोगों ने मॉस नहीं खाया है। तुम लोग भी अब बड़ी हो गयी हो और अपने लिये कोई अच्छा पति चुन सकती हो तो जो कोई आदमी अच्छा शिकारी हो और हम लोगों की देखभाल कर सके ऐसा कोई पति चुन लो।

मैं केवल एक आदमी को जानती हूँ। वह एक स्त्री का बेटा है जिसका नाम "बड़ी जमीन" है। वे लोग यहॉ से एक दिन के सफर की दूरी पर एक लम्बे घर में रहते हैं।"

"यह आदमी कैसा है मॉ?" उसकी बड़ी बेटी ने पूछा।

---

[30] Two Daughters – a folktale from From Iroquois Tribe, Native Americans, America. Translated from the Web Site : http://www.firstpeople.us/FP-Html-Legends/The-Two-Daughters-Iroquois.html

मॉ बोली — "तुम उसको जरूर पसन्द करोगी। वह देखने में सुन्दर है, तन्दुरुस्त है और बहुत अच्छा शिकारी है। पर इसके लिये अब हमको शादी की रोटी[31] बनानी शुरू कर देनी चाहिये जिसको तुम यहॉ से जाते समय ले जाओगी।"

दोनों लड़कियॉ अपनी मॉ के साथ काम में लग गयीं। उन्होंने मक्का छीली, फिर उसको कूट कर उसकी रोटी बनायी। इस काम में उन लोगों को काफी समय लग गया पर जब उनकी रोटी बन गयी तो उन्होंने देखा कि उस आटे से चौबीस केक बनीं। उन्होंने उन सबको एक टोकरी में रख लिया।

मॉ ने फिर अपनी बड़ी बेटी का चेहरा सजाया और उसके लम्बे काले बालों में कंघी करती हुई बोली — "सुनो, मेरी बात ध्यान से सुनो। अगर कोई तुमको रास्ते में मिले तो उससे बात नहीं करना।

और अगर उस "बड़ी जमीन" के घर तक पहुॅचते पहुॅचते तुम को रास्ते में रात हो जाये तो भी तुम किसी और के घर नहीं जाना, वहीं कहीं जंगल में ही सो जाना।"

बड़ी लड़की बोली — "मैं समझ गयी मॉ।" पर उसके विचार तो कहीं दूर उस बड़ी जमीन के ख्यालों में खोये हुए थे जिसके बेटे से उसकी शादी होने वाली थी।

[31] Marriage Bread – it was the custom of American Indian people that when the girl's mother is ready to marry her daughter to some boy, she would ask her daughter to take marriage cake to her would be husband to show that she was interested in her son to marry her daughter.

उसने अपनी वह केक वाली टोकरी उठायी और उसकी रस्सी अपने सिर से ठीक से बॉधी ताकि उसके सुन्दर कंघी किये गये बाल खराब न हों। उसके बाद दोनों बहिनें जंगल के तंग रास्ते पर उस बड़ी जमीन के घर की तरफ चल पड़ीं।

कुछ समय चलने के बाद छोटी बहिन ने अपने पीछे किसी के चलने की आहट सुनी। उसने अपनी बड़ी बहिन से पूछा — "यह कौन है?"

बड़ी बहिन ने कहा — "ओह, यह तो पाइन[32] के पेड़ों से आती हवा की आवाज है।" और दोनों बहिनें चलती रहीं।

जल्दी ही तीसरा पहर हो गया और सूरज भी दूसरी तरफ नीचे की तरफ ढलने लगा जहॉ जमीन और आसमान मिलते हैं।

छोटी बहिन को यह पक्की तरह से लग रहा था कि उसने अपने पीछे किसी के बहुत ही धीमे कदमों की आहट सुनी थी सो उसने फिर अपनी बड़ी बहिन से पूछा — "यह क्या आवाज है जो मुझे सुनायी दिये जा रही है?"

बड़ी बहिन ने उसको फिर से यह कह कर टाल दिया कि यह किसी चिड़िया की आवाज है।" और वे फिर अपने रास्ते पर चल दीं।

---

[32] Pine trees – they are very tall trees. They are evergreen trees and are of several kinds. See the picture of one of the trees of its kind.

पर छोटी बहिन को इन जवाबों से सन्तोष नहीं हुआ। वह फिर भी ध्यान से सुनती रही। अब उसको उन कदमों की आहट अपने आगे से आ रही थी। कभी कभी उसको ऐसा लगता कि कि उसने रास्ते के बराबर की झाड़ियों में किसी बूढ़े आदमी को जाते देखा है।

कुछ देर में वे दोनों एक छोटी सी खुली जगह में आ गयीं जहॉ उन्होंने एक बूढ़े आदमी को तीर कमान लिये हुए देखा। वह एक ऊॅचे पेड़ की तरफ देख रहा था।

उसने उस पेड़ की तरफ इशारा करते हुए उन लड़कियों से कहा — "ज़रा इधर तो आओ। मुझे तुम्हारी सहायता की जरूरत है। मैं उस पेड़ पर बैठी एक गिलहरी को मारने की कोशिश कर रहा हूॅ पर मुझे ज़रा कम दिखायी देता है सो मुझे डर है कि मेरा तीर खो जायेगा।"

छोटी बहिन बोली — "तुम्हें याद है मॉ ने क्या कहा था? हम लोगों को रास्ते में किसी भी आदमी से बात नहीं करनी चाहिये।"

पर बड़ी बहिन ने उसकी बात नहीं सुनी और बोली — "यह बूढ़ा आदमी तो खुशमिजाज लगता है। इसमें क्या बुराई है। हमको इसकी बात सुन लेनी चाहिये।"

सो वे उसके पास चल दीं। उस आदमी ने कहा — "तुम अपनी टोकरी नीचे रख दो और मेरे तीर की तरफ देखो। अगर

मेरा तीर उस गिलहरी पर न लगे तो तुम ज़रा मेरा तीर उठा कर ले आना।"

कह कर उसने अपनी कमान खींची और एक तीर उस पेड़ की चोटी की तरफ छोड़ दिया। वह तीर उड़ता हुआ उस पेड़ से बहुत दूर जंगल में जा कर गिरा।

दोनों बहिनें उस तीर को लाने के लिये जंगल की तरफ दौड़ीं। पर जब वे वापस आयीं तो उन्होंने देखा कि वह बूढ़ा आदमी तो वहॉ से गायब हो चुका था और साथ में उनकी वह शादी वाली केक वाली टोकरी भी।

छोटी बहिन बोली — "अब हमको घर वापस चलना चाहिये क्योंकि हमने अपनी मॉ का कहना नहीं माना।"

सो वे दोनों लड़कियॉ घर वापस चली गयीं और उन्होंने अपनी मॉ को बताया कि उनके साथ क्या हुआ था।

वह बोली — "आह, तुम लोग मुझको प्यार नहीं करतीं नहीं तो तुम मेरी बात नहीं टालतीं।"

उस रात उसने इससे ज़्यादा और कुछ नहीं कहा।

अगले दिन उनकी मॉ ने कहा — "हम फिर से शादी की केक बनायेंगे पर इस बार ओ मेरी छोटी बेटी तुम अपना पति ढूँढोगी।" सो मॉ बेटियों ने मिल कर फिर से बहुत सारी केक बनायीं और इस बार वह केक वाली टोकरी छोटी वाली बेटी को दी गयी।

एक बार फिर दोनों बहिनें अपने सफर पर निकल पड़ीं। इस बार फिर उस छोटी बेटी को लगा कि उसको किसी के कदमों की आहट सुनायी पड़ी है पर उसने कुछ कहा नहीं वह बस अपनी मॉ के शब्द याद कर के चलती रही।

पहले की तरह दिन के तीसरे पहर में करीब करीब उसी समय वे दोनों फिर से उसी खुली जगह में आयीं जहॉ पहले दिन उस बूढ़े आदमी ने उनके साथ चाल खेली थी।

वहॉ एक बूढ़ा आदमी एक पेड़ के कटे तने पर बैठा हुआ था। वह उनसे बोला — "मुझे यह देख कर खुशी है कि तुम लोग ठीक हो। तुम कहॉ जा रही हो?"

छोटी बहिन तो कुछ नहीं बोली पर बड़ी बहिन बड़े तपाक से बोली — "हम लोग "बड़ी जमीन" के बेटे के लम्बे घर जा रहे हैं। मेरी छोटी बहिन उस "बड़ी जमीन" के बेटे से शादी करना चाहती है।"

बूढ़ा आदमी बोला — "अच्छा हुआ कि तुम्हारी मुलाकात मुझसे हो गयी वरना तुम लोग भटक जातीं। तुम लोग गलत दिशा में जा रही हो। तुमको अगर "बड़ी जमीन" के घर जाना है तो तुमको उस जंगल में से हो कर जाना चाहिये।"

छोटी बहिन को उस बूढ़े की बात पर बिल्कुल भी विश्वास नहीं था पर बड़ी बहिन ने नहीं सुना। वह बोली — "यह बूढ़ा आदमी हमारी सहायता करना चाह रहा है। हमको वैसा ही करना चाहिये

जैसा कि यह कह रहा है।" सो वे दोनों उसी के बताये रास्ते पर चल दीं।

जैसे ही वे दोनों वहॉ से चलीं गयीं वह बूढ़ा अपने घर लौटा जो उस रास्ते के आखीर में ही था जो उसने उन दोनों लड़कियों को बताया था।

आ कर वह अपनी पत्नी से बोला — "जल्दी करो। तुम अपने चेहरे पर राख मल लो और आग के दूसरी तरफ बैठ जाओ। तुम अपने आपको मेरी मॉ दिखाना। दो लड़कियॉ शादी वाली केक ले कर आ रही हैं और वह शादी वाली केक मुझे उनसे लेनी है।"

बूढ़े ने खुद भी अपने कपड़े बदले और अपना चेहरा ऐसा रंग लिया कि वह एक जवान और सुन्दर लड़का दिखायी देने लगा। फिर वह अपने घर के बाहर जा कर बैठ गया।

जल्दी ही उसको उन दोनों लड़कियों के आने की आहट सुनायी देने लगी। वह बोला — "आओ आओ, "बड़ी जमीन" और उसके सुन्दर बेटे के लम्बे घर में तुम्हारा स्वागत है।"

वे दोनों लड़कियॉ उसके घर आ गयीं तो उनको लगा कि शायद यही वह सुन्दर लड़का है जिसकी तलाश में वे निकलीं थीं। वे उसके बराबर में जा कर बैठ गयीं और शादी की केक की टोकरी भी उन्होंने वहीं रख दी।

उसी समय इत्तफाक से घर के दरवाजे पर कोई आया और उसने ज़ोर से पुकारा — "ओ बूढ़े, चलो तुमको लम्बे घर में बुलाया है।"

वह बूढ़ा चिल्लाया — "चले जाओ यहॉ से।"

फिर वह उन लड़कियों से बोला — "कोई गलत घर में आ गया। यहॉ कोई बूढ़ा आदमी नहीं रहता।"

उस आदमी को गये हुए अभी ज़्यादा देर नहीं हुई थी कि वही आवाज फिर से सुनायी पड़ी — "बाबा तुमको लम्बे घर में बुलाया है।"

वह बूढ़ा फिर चिल्लाया — "चले जाओ यहॉ से।"

कह कर वह फिर उन लड़कियों से बोला — "आह यह बेचारा लड़का। इसका पिता कल मर गया था यह बेचारा आज भी सारे शहर में उसको पुकारता हुआ घूम रहा है।"

कुछ देर बाद वही आवाज फिर सुनायी दी — "बाबा बाबा, उन्होंने मुझे तुमको अपने साथ लिवा लाने के लिये भेजा है। चलो मेरे साथ।"

वह बूढ़ा उन लड़कियों की तरफ देख कर मुस्कुराया और बोला — "लगता है कि मुझे जा कर इस लड़के को बताना ही पड़ेगा कि मैं कौन हूॅ। काफी देर हो गयी है तुम लोग यहॉ लेट कर आराम करो मैं जल्दी ही वापस आता हूॅ।"

कह कर वह बूढ़ा घर से बाहर चला गया। छोटी लड़की को लगा कि उसने किसी को डॉटते हुए और मारते हुए सुना। उधर वह बुढ़िया भी जल्दी ही सो गयी।

छोटी लड़की अपनी बड़ी बहिन से बोली — "बहिन, मुझे तो कुछ गड़बड़ लगती है। हम लोगों को यहॉ नहीं ठहरना चाहिये। मुझे यकीन है कि यह उसी बूढ़े का घर है जो हमको रास्ते में मिला था। हमको अपनी मॉ की बात माननी चाहिये।"

कह कर वह वहॉ से खिसक गयी और बाहर से दो सड़े गले लकड़ी के लट्ठे ले आयी और अपनी बड़ी बहिन से बोली — "हम ये दोनों लट्ठे कम्बल में बॉध कर यहॉ रख देते हैं ताकि इस बुढ़िया को यह पता न लगे कि हम लोग यहॉ से चले गये हैं।"

ऐसा कर के जैसे ही वे दोनों घर से बाहर निकलीं उन्होंने गॉव के दूसरी तरफ से आती हुई नाचने की आवाज सुनी। उस आवाज का पीछा करते हुए वे अपनी शादी वाली केक की टोकरी उठाये हुए उस लम्बे घर में आ पहुॅचीं।

उनको यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि वही बूढ़ा जिसके घर से वे अभी चलीं आ रही थीं वहॉ सबके बीच में खड़ा हो कर नाच रहा था। सब लोग उसके नाच को देख रहे थे।

आग के दूसरी तरफ एक बहुत ही सुन्दर आदमी अपनी मॉ के साथ बैठा हुआ था।

छोटी लड़की तुरन्त चिल्लायी — "आहा, यह है वह आदमी जिसको हम ढूँढ रहे हैं।" अपना मुँह कम्बल से ढक कर वे दोनों बहिनें उस घर में घुस गयीं और "बड़ी जमीन" और उसके बेटे के पास बैठने के लिये चल दीं।

उन्होंने शादी की वह केक की टोकरी "बड़ी जमीन" के सामने रख दी। उस टोकरी को देख कर "बड़ी जमीन" बहुत खुश हुई और छोटी बेटी से बोली — "तुम मेरे बेटे के लिये बहुत ही अच्छी पत्नी बनोगी।"

जब नाच खत्म हो गया तो वे दोनों लड़कियॉ भी "बड़ी जमीन" और उसके लडके के साथ चल दीं। वे दोनों अभी भी कम्बल में लिपटी हुई थीं इसलिये वह बूढ़ा उनको पहचान नहीं पाया।

वह बूढ़ा अपनी चतुराई पर खुश होते हुए अपने घर लौटा और अपने कम्बल के पास बैठा तो उसके कुछ चुभा। उसने सोचा कि उसमें एक लड़की होगी। यह सोच कर वह मुस्कुराया।

वह मन ही मन बोला थोड़ा सा इन्तजार करो मैं भी अभी आता हूँ। उसने अपने कपड़े उतारे और उस कम्बल में घुस गया। पर वहॉ तो सड़े गले चींटियों से भरे हुए दो लकड़ी के लट्ठे पड़े थे।

अगले दिन वे दोनों लड़कियॉ "बड़ी जमीन" और उसके बेटे के साथ अपने घर लौटीं। वहॉ "बड़ी जमीन" के बेटे ने शिकार किया और बहुत सारा मॉस अपनी नयी पत्नी के परिवार के लिये ले कर आया।

वह छोटी लड़की अपनी चतुराई से अपनी शादी ठीक से कर पायी। फिर वे दोनों बहुत दिनों तक सुख से रहे।

9 होडाडैनन और चेस्टनट का पेड़[33]

यह बहुत पुरानी बात है कि एक लड़का और उसका चाचा एक लकड़ी के मकान में रहते थे। लड़के का नाम होडाडैनन था जिसका मतलब होता है "अखिरी बचा हुआ"।

ऐसा इसलिये था क्योंकि उसके परिवार के सारे लोग मर चुके थे और अब अपने परिवार में वही अकेला रह गया था इसलिये वह बस आखिरी बचा हुआ ही था।

उसका सारा परिवार पिछले कुछ सालों में खत्म हो चुका था और ऐसा विश्वास किया जाता था कि उन सबको किन्हीं उन लोगों ने मारा था जिनके पास बुरे जादू टोने की ताकत थी।

हर सुबह होडाडैनन का चाचा उसको खाना खिलाता था और फिर शिकार के लिये चला जाता था। उसके बाद होडाडैनन सारे दिन घर में अकेला रहता था। हर शाम को उसका चाचा शिकार से घर वापस लौटता था, फिर उसको खाना खिलाता था और सो जाता था।

एक बार होडाडैनन घर में अकेला खेल रहा था कि उसको लगा कि उसने कभी अपने चाचा को खाना खाते नहीं देखा। सो उसने

---

[33] Hodadenon: the Last One Left and the Chestnut Tree – a folktale from Native Americans, America. Translated from the Web Site : http://www.firstpeople.us/FP-Html-Legends/HodadenonTheLastOneLeftAndTheChestnutTree-Unknown.html

एक हड्डी का टुकड़ा लिया और उससे उस हिरन की खाल में छेद कर लिया जिस खाल को वह रात को कम्बल की तरह इस्तेमाल करता था

उसने सोचा आज मैं देखता हूँ कि जब हम सो जाते हैं तब क्या होता है। उस शाम को भी उसका चाचा रोज की तरह शिकार से वापस लौटा। उसने होडाडैनन को खाना खिलाया और उसे जा कर सो जाने के लिये कहा।

होडाडैनन आग के पास जा कर एक तरफ को लेट गया और दूसरी तरफ उसका चाचा काउच पर लेट गया। उस काउच पर जानवरों की बहुत सारी खालें पड़ी हुई थीं।

होडाडैनन ने अपनी हिरन की खाल ओढ़ रखी थी और वह सोने का बहाना किये लेटा हुआ था। पर वह उस हिरन की खाल में अपने बनाये गये छेद से अपने चाचा को अच्छी तरह से देख सकता था।

कुछ देर बाद होडाडैनन का चाचा आग के पास आया और धीरे से पुकारा — "होडाडैनन।" पर लड़के ने कोई जवाब नहीं दिया। चाचा ने तीन बार और उसका नाम ले कर उसको पुकारा पर फिर भी वह चुपचाप पड़ा रहा और सोने का बहाना करता रहा।

फिर उसका चाचा आग के और पास गया और उसमें ज़ोर की एक फूँक मारी। आग में से कुछ चिनगारियाँ उड़ कर लड़के के पैरों पर जा पड़ीं।

उसका चाचा बोला —" होडाडैनन, ज़रा सॅभल के। मैं तुमको जला रहा हूॅ।"

हालॉकि आग की कुछ और चिनगारियॉ होडाडैनन की नंगी टॉग पर जा पड़ीं थी और उसको जलन भी महसूस हुई थी फिर भी वह चुपचाप पड़ा रहा।

चाचा बोला — "नहीं, होडाडैनन जाग नहीं रहा सो रहा है।"

सो वह वापस अपने काउच पर गया और उसने उसके ऊपर पड़ी हुई खालें उठानी शुरू कीं।

उसने पहले काउच का ऊपर का तख्ता हटाया और उसमें से बिर्च[34] के पेड़ की छाल का एक बक्सा निकाला। होडाडैनन यह सब अपनी खाल के छेद में से साफ साफ देख रहा था।

उसके चाचा ने उस बक्से में से एक छोटा सा बर्तन निकाला। वह बर्तन इतना छोटा था कि उसकी हथेली में ही बस ठीक से आ पा रहा था।

उस बर्तन में से उसने कोई और चीज़ निकाली जिसको वह ठीक से देख नहीं सका। वह चीज़ एक या दो सेन्टीमीटर गोली से भी छोटी होगी।

फिर उसके चाचा ने एक छोटा सा चाकू निकाला और उस चाकू से उस चीज़ को छीला। उसकी छीलन उसने उस बर्तन में

[34] Birch tree is a kind of evergreen tree

डाली और उस बर्तन को आग पर रख दिया। फिर उसने उसमें एक फूँक मारी और एक गाना गाया –

ओ बर्तन ओ बर्तन तुम साइज़ में बढ़ जाओ
ओ बर्तन ओ बर्तन तुम साइज़ में बढ़ जाओ।

होडाडैनन ने देखा कि जैसे ही उसके चाचा ने उस बर्तन के ऊपर फूँक मारी और गाना गाया वह बर्तन साइज़ में बढ़ गया।

अब बढ़ कर वह बर्तन इतना बड़ा हो गया जितना कि घरों में कोई खाना पकाने वाला बर्तन होता है और उसमें से अब किसी स्वादिष्ट खाने की खुशबू भी आने लगी थी। कुछ ही देर में खाना तैयार हो गया।

उसके चाचा ने फिर उस बर्तन में फूँक मारी और गाना गाया

ओ बर्तन ओ बर्तन तुम साइज़ में छोटे हो जाओ
ओ बर्तन ओ बर्तन तुम साइज़ में छोटे हो जाओ

तुरन्त ही बर्तन फिर से उसी साइज़ का हो गया जिसका वह पहले था। चाचा ने बीज की जो छीलन छीली थी वह वापस उस बर्तन में डाली, बर्तन को उस बिर्च के बक्से में रखा और उस बक्से को उसी तरह से काउच की खालों के नीचे के खाने में छिपा दिया और सोने चला गया।

अगले दिन रोज की तरह उसका चाचा उठा, उसको खाना खिला कर घर में अकेला छोड़ कर शिकार पर चला गया।

कुछ देर तक तो होडाडैनन घर में इधर उधर खेलता रहा। कभी वह अपने तीर कमान से खेलता कभी कुछ और खेलता पर उसके दिमाग से उसके चाचा का वह गीत नहीं गया जो उसने पिछली रात उस बर्तन के लिये गाया था।

आखिर उससे रहा नहीं गया। उसने सोचा कि उसका चाचा जब शिकार से वापस आयेगा तो बहुत भूखा होगा सो मैं उसके लिये खाना बना कर रखता हूँ। सो होडाडैनन अपने चाचा के काउच की तरफ चल दिया।

अपने चाचा की तरह से उसने भी उस काउच की खालें हटायीं और अन्दर का खाना खोला। बिर्च की लकड़ी का बक्सा निकाला और उस बक्से को खोल कर वह छोटा सा बर्तन निकाला। उस बर्तन में केवल सूखा हुआ एक आधा ही बीज रखा था।

होडाडैनन बोला — "हूँ, तो यह है मेरे चाचा का खाना। पर यह तो काफी खत्म हो चुका है। अगर मुझे अपने चाचा के लिये काफी खाना बनाना है तो मुझे यह सारा बीज इस्तेमाल कर लेना चाहिये। मुझे यकीन है कि वह ऐसे बीज और ले आयेगा।"

सो होडाडैनन ने एक चाकू लिया और सारे बीज को छील लिया। उस बर्तन को वह आग पर ले गया और उस पर फूँक मार कर गाना गाया —

ओ बर्तन ओ बर्तन तुम साइज़ में बढ़ जाओ
ओ बर्तन ओ बर्तन तुम साइज़ में बढ़ जाओ।

जैसे ही उसने यह गाना गाया पिछली रात की तरह ही वह बर्तन साइज़ में बड़ा हो गया। वह अब घरों में पकाने वाले बर्तनों की तरह ही हो गया था और उसमें कुछ उबलने भी लगा था।

पर होडाडैनन को इससे सन्तुष्टि नहीं थी। उसको लग रहा था कि उसका चाचा जब घर आयेगा तो बहुत ज़्यादा भूखा होगा इसलिये मुझे और ज़्यादा खाना बना कर रखना चाहिये। सो उसने उस बर्तन पर और एक बार फूँक मारी और एक बार फिर वही गीत गाया —

ओ बर्तन ओ बर्तन तुम साइज़ में बढ़ जाओ
ओ बर्तन ओ बर्तन तुम साइज़ में बढ़ जाओ।

गाना गाते ही वह बर्तन फिर बड़ा हो गया और अब तो वह बर्तन बहुत ही बड़ा हो गया था और होडाडैनन को उसमें रखे खाने को चलाने के लिये अपने आपको थोड़ा फैला कर खड़ा होना पड़ा।

उसमें रखा खाना बहुत ज़ोर से उबल रहा था और उसमें से बहुत अच्छी खुशबू भी आ रही थी। यह देख कर होडाडैनन ने सोचा कि अगर मेरे चाचा इसमें से थोड़ा सा खाना मुझे भी देना चाहें तो?

तो फिर तो यह खाना कम पड़ जायेगा। मेरे चाचा को तो मेरा धन्यवाद करना चाहिये कि मैंने उनके लिये खाना बना कर रखा। सो मुझे थोड़ा सा खाना और बना लेना चाहिये।

सो उसने उस बर्तन में एक बार फूँक और मारी और वह गाना और गाया।

अब क्या था बर्तन साइज़ में फिर से और बढ़ा और इतना बढ़ा कि होडाडैनन को उस बर्तन में रखे खाने को चलाने के लिये अपने चाचा के काउच पर खड़ा होना पड़ा और उसमें रखे खाने को चलाने के लिये नाव चलाने वाली पतवार इस्तेमाल करनी पड़ी।

पर इस सबको देख कर उसको इतना अच्छा लग रहा था कि वह रुकना ही नहीं चाह रहा था।

उसने सोचा कि अब यह खाना हम दोनों के लिये तो ठीक है पर क्या हो अगर हमारे घर कुछ लोग और आ जायें? तो हमारे पास उन लोगों को भी तो खिलाने के लिये काफी खाना होना चाहिये।

सो उसने चौथी बार उस बर्तन में फूँक मारी और वह जादुई गाना गाया। इस बार होडाडैनन को घर से बाहर निकलना पड़ा क्योंकि अब वह बर्तन इतना ज़्यादा बड़ा हो गया था कि उसने उस कमरे की सारी जगह घेर ली थी।

अब उस बर्तन में रखे खाने को चलाने का एक ही तरीका था कि वह एक बहुत ही बड़ा डंडा ले ले और घर की छत पर खड़ा हो कर उससे उसको चलाये।

जब होडाडैनन का चाचा घर लौटा तो सबसे पहली चीज़ उसने यही देखी कि पुडिंग[35] घर के दरवाजे से उबल उबल कर बाहर आ रही थी।

फिर उसने सुना कि ऊपर कोई गा रहा था। उसने ऊपर देखा तो होडाडैनन धुँआ निकलने वाले छेद में बैठा अपनी टाँगें हिला रहा था और उस पुडिंग को चलाते हुए खुशी खुशी गाना गा रहा था — "मैं कितना अच्छा रसोइया हूँ मैं कितना अच्छा रसोइया हूँ, अब हम सब अच्छी तरह से खाना खायेंगे।"

उसका चाचा वहीं से चिल्लाया — "भतीजे नीचे उतरो। जो कुछ भी तुमने किया है उसने तो मुझे मार ही दिया है।"

फिर उसने घर के दरवाजे से ही उस बर्तन में फूँक मारी और उसको छोटा करने वाला गीत गाया।

जब वह बर्तन उतना छोटा हो गया जितना कि वह सबसे पहले था तब वह घर के अन्दर घुसा। घुसते ही वह जा कर अपने काउच पर लेट गया और रोने लगा।

अब तक होडाडैनन भी उस धुँए के निकलने वाले छेद से नीचे आ गया था। वह अपने बूढ़े चाचा के पास गया और बोला — "चाचा, क्या बात है? तुम क्यों रोते हो?"

चाचा रोते रोते बोला — "बेटा तुमने तो मेरा सारा खाना इस्तेमाल कर लिया है जो मैं खा सकता था। उस खाने के बिना तो

[35] Pudding is an English word for Indian Daliyaa or Kheer or custard.

मैं भूखा मर जाऊँगा। इसी लिये मैं कभी तुम्हारे सामने खाता नहीं था क्योंकि मैं जानता था कि तुम ऐसा ही करोगे।"

होडाडैनन बोला — "चाचा, सब कुछ इतना बुरा तो नहीं हो सकता। तुम जा कर दूसरा बीज ले आओ।"

चाचा बोला — "नहीं बेटा, इस तरह से मैं दूसरा बीज नहीं ला सकता। यह एक ऐसा खाना था जिसको चेस्टनट[36] कहते हैं। बहुत पहले हालॉकि तब भी वह बहुत ही खतरनाक था फिर भी मैंने इसको हासिल कर लिया था। पर अब तो इसका लाना बहुत ही मुश्किल है।

और अभी यह और बहुत दिनों तक चलता पर अब मैं ऐसा दूसरा ऐसा चेस्टनट लाने के लिये बहुत बूढ़ा हो चुका हूँ।"

होडाडैनन बोला — "तुम फिक्र मत करो चाचा अब यह मेरा काम है। मैं वहॉ जाऊँगा और तुम्हारे लिये बहुत सारे चेस्टनट ले कर आऊँगा।"

चाचा बोला — "यह मुमकिन नहीं है बेटा। वहॉ का रास्ता बहुत लम्बा है और बहुत ही भयानक जीव उसकी रक्षा करते हैं। तुम्हारे परिवार के और भी लोग वहॉ गये थे पर कोई भी वहॉ से ज़िन्दा नहीं लौट सका।"

[36] Chestnut – a kind of seed of a fruit which has some kind of long furs on it. See its picture above.

फिर भी होडाडैनन ने अपनी कोशिश नहीं छोड़ी। आखिर उसके चाचा को वहॉ का रास्ता बताना ही पड़ा। वह बोला — "यहॉ से सीधे उत्तर की तरफ जाओ। वहॉ तुमको एक तंग रास्ता मिलेगा।

उसी पर आगे चलते जाना। जैसे ही उसका पहला मोड़ आता है वहॉ दो बहुत बड़े सॉप रहते हैं जो उन बुरे आदमियों के नौकर हैं जो उन चेस्टनट पेड़ों के मालिक हैं। कोई उनको पार कर के नहीं जा सकता।"

होडाडैनन बोला — "पर अगर मैं उनको पार कर जाऊॅ तो चाचा?"

चाचा बोला — "अगर खुशकिस्मती से कोई उन सॉपों को पार कर जाता है तो आगे जा कर उसको दो भालू मिलेंगे जो दो पहाड़ियों के बीच से जाने वाले रास्ते की रक्षा करते हैं। वे भी उन बुरे आदमियों के नौकर हैं। वे हर उसको फाड़ देते हैं जो वहॉ से गुजरना चाहता है।

उसके बाद वहॉ दो तेंदुए[37] हैं जो उनके ऊपर कूद पड़ते हैं जो उनको अनदेखा कर के गुजरना चाहते हैं। होडाडैनन, यह नहीं हो सकता बेटा। मैं तुमको वहॉ नहीं भेज सकता।"

होडाडैनन बोला — "बस यही लोग हैं न, और तो कोई नहीं है न?"

[37] Translated for the word "Panthers"

चाचा बोला — "क्या ये लोग काफी नहीं है? खैर इसके बाद वह जगह आती है जहॉ वे चेस्टनट के पेड़ उगते हैं।

वहॉ सात बहिनें रहतीं हैं जिनके वे चेस्टनट के पेड़ हैं। उन सातों बहिनों के पास बहुत सारी जादू की ताकत है। अगर कोई भी चेस्टनट चुराने के लिये आता है तो वे अपने घर से भाग कर आती हैं और उसे अपने डंडे से पीट पीट कर मार देती हैं।

वहॉ से कोई अनदेखा नहीं जा सकता क्योंकि वहॉ एक पेड़ से एक आदमी की खाल लटकी रहती है जो चेस्टनट के पेड़ों के बगीचे की तरफ देखती रहती है और जब भी कोई आता है तो गा कर उन लड़कियों को बता देती है।"

होडाडैनन बोला — "इस सबको बताने के लिये धन्यवाद चाचा। अब मैं अपने रास्ते जाता हूॅ। अगर सब कुछ ठीक रहा तो अब मैं आपका खाना ले कर ही लौटूॅगा।"

फिर उसने दो डंडियॉ उठायीं, उनको एक साथ बॉधा और आग के पास रख कर चाचा से बोला — "चाचा, इनका ध्यान रखना। अगर मैं ठीक रहा तो ये डंडियॉ अपनी जगह से नहीं हिलेंगी पर अगर मैं मर गया तो ये टूट जायेगीं।"

इतना कह कर होडाडैनन अपने चाचा के लिये चेस्टनट लाने के लिये चल दिया। वह उत्तर की तरफ चला और जल्दी ही एक तंग रास्ते पर आ गया।

उसने सोचा शायद यही वह रास्ता है जिसके बारे में उसका चाचा बात कर रहा था पर यह तो कोई मुश्किल रास्ता नहीं लग रहा था सो वह उस रास्ते पर और आगे चल दिया।

जल्दी ही वह रास्ता मुड़ने लगा और आगे जा कर तो वह एकदम से ही बॉये को मुड़ गया। होडाडैनन वहॉ रुका और उसने रास्ते से नीचे उतर कर पेड़ों के बीच में से चारों तरफ इधर उधर झॉका।

उसको उस रास्ते के दोनों तरफ सचमुच ही दो बड़े सॉप दिखायी दिये जो कुंडली मार कर बैठे हुए थे और किसी पर भी हमला करने को लिये बिल्कुल तैयार थे।

होडाडैनन बोला — "ऐसा लगता है चाचा कि तुम इस रास्ते को अच्छी तरह जानते हो।"

उसने दो चिपमंक[38] पकड़े और उनको अपने दोनों हाथों में पकड़ कर उस रास्ते पर चल दिया। जैसे ही वह उन सॉपों के पास पहुॅचा तो इससे पहले कि वे उस पर हमला करें उसने वे दोनों चिपमंक उन दोनों के मुॅह में ठूॅस दिये।

वह बोला — "ऐसा लगता है कि तुमको शायद खाना चाहिये था। अब मैंने तुमको वह दे दिया है जो तुम लोगों को अपने आप

[38] Chipmunk is a kind of cylindrical animal, like a big squirrel or rabbit whose front paws are always ready to dig the earth. See its picture above.

शिकार कर के खाना चाहिये था। हमारे भगवान ने किसी को किसी का नौकर नहीं पैदा किया सो यहॉ से भाग जाओ।"

जैसे ही उसने यह कहा दोनों सॉपों ने अपनी अपनी कुंडली खोली और अलग अलग दिशा में भाग गये। अब वह रास्ता साफ हो गया था सो होडाडैनन उस रास्ते पर आगे चल दिया।

इस बीच होडाडैनन के चाचा ने देखा कि होडाडैनन ने घर पर जो डंडियॉ छोड़ी थीं जो अब तक कॉप रहीं थीं शान्त हो गयी थीं।

अब वह रास्ता एक पहाड़ी जगह की तरफ मुड़ गया था। होडाडैनन ने फिर वह रास्ता छोड़ कर आगे की तरफ देखा।

उसने देखा कि आगे दो बहुत बड़े बड़े पत्थर थे और वहॉ दो बहुत बड़े बड़े भालू खड़े थे। वे भी उस हर उस चीज़ को फाड़ खाने के लिये तैयार थे जो वहॉ से गुज़रती।

होडाडैनन बोला — "चाचा इसका मतलब है कि तुम यहॉ से जा चुके हो।"

वह एक पेड़ पर चढ़ गया जहॉ उसको कुछ मधुमक्खियों की भिनभिनाहट सुनायी दी।

उसने मधुमक्खियों के दो छत्ते उखाड़े और इससे पहले कि वे भालू उसको पकड़ सकें उन छत्तों को उसने उन भालुओं के मुॅह की तरफ फेंक दिया। भालुओं ने तुरन्त ही उनको अपने मुॅह में दबोच लिया।

लड़का फिर बोला — "ऐसा लगता है कि ये भी भूखे थे। अब मैंने इनको वह दे दिया है जो इनका सबसे प्रिय खाना है – यानी शहद। हमारे भगवान ने जिसने हमें सॉस दी है उसने हमको किसी का नौकर नहीं बनाया।"

जैसे ही उसने यह कहा तो वे भालू भी घूम कर दो दिशाओं में चले गये और होडाडैनन अपने रास्ते पर फिर से आगे चल दिया।

इस बीच उसके घर में उसकी छोड़ी हुई डंडियों ने एक बार फिर से कॉपना बन्द कर दिया था और होडाडैनन के चाचा ने आराम की सॉस ली।

होडाडैनन फिर से आगे चला तो वह रास्ता एक जंगल की तरफ चला और पेड़ों के बीच में जा कर मुड़ गया। उसने फिर वही किया। अब उसको तेंदुए देखने थे। वह रास्ता छोड़ कर एक ऐसी जगह पहुँच गया जहॉ से वह उन तेंदुओं को देख सकता था।

उन तेंदुओं की ऑखें हरे अंगारे की तरह चमक रहीं थीं और वे सड़क के दोनों तरफ दो बड़े पाइन के पेड़ों[39] के पीछे छिपे बैठे थे।

होडाडैनन फिर बड़बड़ाया — "ओह चाचा तुमको अपनी यात्रा के बारे में सब कुछ अच्छी तरह याद है।"

[39] Pine trees are evergreen trees. They are of several kinds. One of the kinds is shown in the picture above.

उसने अपना तीर कमान लिया, उससे उसने दो हिरन मारे और उन दोनों को अपने कन्धे पर उठा कर फिर से अपने रास्ते पर चल दिया।

इससे पहले कि वे तेंदुए उस पर झपटते उसने दोनों की तरफ एक एक हिरन फेंक दिया और बोला — "ओह लगता है कि तुम लोग भी भूखे थे। मैंने तुमको वह दे दिया है जो तुमको अपने आप शिकार कर के खाना चाहिये था।

समझ लो कि जिसने हमको चलने की ताकत दी है उस भगवान ने हमको किसी का नौकर नहीं बनाया इसलिये तुम भी यहॉ से भाग जाओ।"

जैसे ही उसने यह कहा वे दोनों तेंदुए भी दो दिशाओं में भाग गये और वह लड़का फिर से अपने रास्ते पर चल पड़ा।

इस बीच होडाडैनन के चाचा ने देखा कि घर में होडाडैनन की छोड़ी हुई डंडियॉ बहुत ज़ोर से हिल रहीं थीं जैसे किसी तूफान से हिलती हैं पर थोड़ी ही देर में वे शान्त हो गयीं। असल में वे डंडियॉ उन तेंदुओं के चले जाने के बाद शान्त हो गयी थीं।

अब होडाडैनन के सामने का रास्ता बिल्कुल सीधा और साफ था। ऐसा लग रहा था कि उस रास्ते पर बहुत लोग चल चुके थे। यहॉ आ कर लड़के ने कान लगा कर सुनना शुरू किया तो उसको पेड़ों के ऊपर से बहुत ही धीमी गाने की सी आवाज आयी।

वह जमीन पर रेंगते हुए झाड़ियों में से आगे बढ़ा और उसकी तरफ देखा जो गा रहा था। वह एक औरत की खाल थी जो पेड़ के ऊपर टॅगी हुई थी और गा रही थी –

जीनू जीनू जीनू, मैं ही वह हूॅ जो सबको देखती हूॅ, मैं तुमको भी देख रही हूॅ

यह गीत बहुत ही कोमल आवाज में था। इतनी कोमल आवाज में कि होडाडैनन उसको मुश्किल से सुन सकता था। पर उसको यह भी मालूम था कि अगर वह उस खाल को दिखायी दे गया तो यह गीत और ज़्यादा तेज़ आवाज में बदल सकता था।

उस पेड़ के नीचे जिस पर यह खाल लटकी हुई थी पेड़ों का एक झुंड था जिसके ऊपर एक तरह का फल लगा हुआ था जो बड़े बडे कॉटों से ढका हुआ था। होडाडैनन जान गया कि यही चेस्टनट था।

उस औरत की खाल के नीचे जमीन पर बहुत सारी हड्डियों का ढेर लगा हुआ था और दूसरी तरफ उन सातों जादूगरनियों का एक लम्बा सा घर था।

होडाडैनन ने सोचा कि अब उसको किसी की सहायता लेनी पड़ेगी सो वह एक बासवुड[40] के पेड़ के पास गया और उसकी छाल से एक लम्बी सी पट्टी तोड़ी।

[40] Basswood tree – an American tree whose wood is very soft

फिर एक जलती हुई लकड़ी और बैरी[41] का रस ले कर उसने उस छाल के टुकड़े को इस तरह सजाया कि वह एक पेटी की तरह लगने लगी। उसको अपने कन्धे पर डाल कर वह नीचे झुका और उसने चार बार जमीन को हल्के से थपका।

वह बोला — "मेरे दोस्त, मुझे तुम्हारी सहायता चाहिये।"

तुरन्त ही एक मादा मोल[42] ने अपना सिर जमीन से बाहर निकाला और पूछा — "होडाडैनन, बोलो मैं तुम्हारी क्या सहायता कर सकती हूँ?"

होडाडैनन बोला — "दादी माँ, अगर मैं बहुत छोटा बन जाऊँ तो क्या तुम मुझे अपने साथ धरती के नीचे से ले जाओगी?"

मोल बोली — "यह तो बहुत आसान है। चलो चलें।"

यह सुन कर होडाडैनन ने अपने शरीर को अपने हाथों से मलना शुरू किया। धीरे धीरे वह इतना छोटा हो गया कि वह अब मोल के साथ धरती के अन्दर सफर कर सकता था।

धरती के नीचे से हो कर वे उसी पेड़ के नीचे आ गये जिसके ऊपर उस औरत की खाल लटकी हुई थी। होडाडैनन ने फिर से अपने शरीर को अपने हाथों से मलना शुरू किया और तब तक मलता रहा जब तक वह अपने पुराने रूप में नहीं आ गया।

---

[41] Berry is a kind of fruit normally grown on shrubs – such as blue berries, raspberries, black berries, our Indian Ber or Jharberee Ke Ber or Phaalasaa etc

[42] Mole is cylindrical animal with fur larger than a squirrel. See its picture above.

फिर वह उस खाल से बोला — "बहिन, मैंने तुमको पहले कहीं देखा है पर तुम किसी दूसरे से नहीं कहना कि मैं यहॉ हूँ। मैं तुमको यह सुन्दर पेटी दूँगा।"

वह खाल बोली — "अरे वाह, मैंने तो तुमको देखा नहीं। तुम मुझको यह पेटी दे दो तो मैं उन बहिनों को यह नहीं बताऊँगी कि तुम यहॉ हो।"

होडाडैनन ने तुरन्त ही वह पेटी उसकी तरफ उछाल दी। उसने भी उसको तुरन्त ही पहन लिया। पहनते ही वह पेटी उसके चारों तरफ लिपट गयी और उसको इतना कस कर बॉध दिया कि वह फिर बोल भी नहीं सकी।

होडाडैनन ने भी तुरन्त ही एक थैला भर कर चेस्टनट इकट्ठा कर लिये। फिर उसने अपनी दोस्त मोल को बुलाया और छोटा हो कर फिर से वापस आ गया।

उधर उस पेड़ के ऊपर जब उस औरत की खाल को थोड़ी सॉस आयी तब उसने गाना शुरू किया –

जीनू जीनू जीनू, किसी ने मुझे रिश्वत दी है मुझे नहीं मालूम वह कौन है?

यह सुन कर वे सातों जादूगरनियॉ अपने लम्बे से घर में से निकल कर अपना अपना डंडा ले कर भागीं। वे दौड़ी हुई वहॉ आयीं जहॉ उस औरत की खाल टॅगी हुई थी पर वहॉ तो उनको कोई दिखायी नहीं दिया।

एक जादूगरनी बोली — "कोई यहॉ था।"

दूसरी जादूगरनी बोली — "हमारे कुछ चेस्टनट गायब हैं।"

तीसरी जादूगरनी बोली — "ओ औरत की खाल, तू हमारी नौकर है। बोल और बता यहॉ कौन आया था।"

पर औरत की खाल कुछ नहीं बोली। वह केवल हवा में झूलती रही और गाती रही –

जीनू जीनू जीनू, मुझे रिश्वत में एक नयी चमकीली पेटी दी गयी थी

चौथी जादूगरनी बोली — "तू झूठ बोल रही है यह तो केवल पेड़ की छाल है।"

पॉचवीं जादूगरनी बोली — "तब यह वह "आखिरी बचा हुआ"[43] ही होगा जिसका चाचा उसको हमसे बहुत पहले चुरा कर ले गया था।"

छठी जादूगरनी बोली — "अगर वह अबकी बार आयेगा तो हम उसको पकड़ लेंगे और मार डालेंगे।"

आखिरी जादूगरनी बोली — "हमको अपने नौकर को सजा देनी चाहिये।"

उसने अपना डंडा उठाया और उस औरत की खाल को उससे मारना शुरू किया। दूसरी जादूगरनियों ने भी अपने अपने डंडों से उसे बहुत मारा।

[43] Hodadanon – name of the remaining boy

काफी मारने के बाद वे सब जादूगरनियॉ अपने घर चली गयीं और वह औरत की खाल वहॉ पर घायल सी लटकती रह गयी। वह अभी भी धीमी आवाज में अपनी नयी चमकती पेटी का गाना गा रही थी।

इस बीच में होडाडैनन के घर में वे दोनों डंडियॉ फर्श पर गिर पड़ीं थी। बूढ़े चाचा ने उनको फर्श पर से उठाया और फिर से खड़ा कर के रख दिया और ध्यान से उनको देखने लगा।

होडाडैनन तब धरती के नीचे ही था जब वे सातों जादूगरनियॉ आपस में बात कर रहीं थीं सो उसने उनकी सारी बातें सुन ली थीं।

उसने मोल से कहा — "दादी मॉ, उन सातों जादूगरनियों को हमें इस तरह से नहीं छोड़ना चाहिये। चलिये वहॉ वापस चलते हैं जहॉ वे रहती हैं।"

मोल धरती में और नीचे गयी और होडाडैनन को उन बहिनों के घर के नीचे उनके काउच के नीचे तक ले गयी जहॉ वे सोती थीं। वहॉ एक रस्सी में उन सातों के दिल बॅधे हुए थे।

तुरन्त ही होडाडैनन ने उछल कर उनके वे दिल पकड़ लिये और वहॉ से भाग निकला। सातों जादूगरनियों ने उसको देख लिया सो वे अपना अपना डंडा ले कर उसके पीछे पीछे भागीं।

इसी समय होडाडैनन के घर में उसकी दोनों लकड़ियॉ फिर से गिर पड़ीं। इसको देख कर बूढ़े का दिल इतना टूट गया कि वह उनको दोबारा खड़ी नहीं कर सका।

वह वहीं लेट कर उनको घूरता रहा और सोचता रहा कि उसका भतीजा अब कभी ज़िन्दा वापस लौट कर नहीं आयेगा।

उधर औरत की खाल ने पेड़ के ऊपर से गाया —

जीनू जीनू जीनू, होडाडैनन के पास तुम्हारे दिल हैं और यही तुम्हारा अन्त है

पहली जादूगरनी ने होडाडैनन को करीब करीब पकड़ ही लिया था सो उसने उसको मारने के लिये अपना डंडा उठाया। जैसे ही उसने अपना डंडा उठाया होडाडैनन ने एक दिल को उसकी रस्सी से कस कर बॉध दिया जिससे वह तुरन्त मर गयी।

फिर जब दूसरी जादूगरनी ने उसको डंडा मारना चाहा तो होडाडैनन ने फिर वैसा ही किया। उसने दूसरे दिल को भी रस्सी से बॉध दिया सो दूसरी जादूगरनी भी मर गयी।

उसके बाद उसने बचे हुए पॉच दिल भी रस्सी से बॉध दिये और इस तरह से सातों जादूगरनियों को मार दिया। फिर वह उस पेड़ पर चढ़ा जिस पर वह औरत की खाल लटक रही थी।

वह उस खाल को खोल कर नीचे ले आया और उसको नीचे आदमियों की हड्डियों के ढेर के ऊपर रख दिया। फिर वह एक सूखे हुए पेड़ को वहॉ तक ले कर आया।

पेड़ को लाते हुए वह चिल्लाया — "उठो ओ मेरे रिश्तेदारों उठो। एक पेड़ तुम्हारे ऊपर गिरने वाला है।" तुरन्त ही वे सारी हड्डियॉ और वह औरत की खाल ज़िन्दा हो गये।

वह औरत की खाल होडाडैनन की बहिन थी। बहुत दिन पहले इन जादूगरनियों ने उसको और उसके दूसरे परिवार वालों को पकड़ लिया था। उन्हीं की हड्डियॉ वहॉ पड़ी हुई थीं।

अब उसके सामने उसके माता पिता थे, उसके भाई थे और उसके परिवार के और लोग थे। सब ज़िन्दा हो जाने पर बहुत खुश थे और होडाडैनन को उनको ज़िन्दा करने के लिये बहुत बहुत धन्यवाद दे रहे थे।

होडाडैनन ने जमीन पर से बहुत सारे चेस्टनट उठाये और अपने सारे रिश्तेदारों को बॉट दिये और उनसे कहा कि वे उनको बो दें और फिर सबके खाने के लिये बहुत सारा खाना होगा।

फिर वह थैला भर कर चेस्टनट अपने चाचा के लिये ले कर घर गया। उसका बूढ़ा चाचा बेचारा हड्डियों का ढॉचा बना अपनी काउच पर लेटा हुआ था। उसकी ऑखें उन दो डंडियों पर लगी हुई थीं।

घर में घुसते ही वह बोला — "चाचा चाचा, मैं आ गया।"

अपने भतीजे की आवाज सुन कर उसका चाचा उछल कर अपने काउच से खड़ा हो गया और उसको गले से लगा लिया।

आज तक उसका चाचा अपने उसी घर में रह रहा है और उन्हीं चेस्टनट से अपने उसी बर्तन में अपनी पुडिंग बनाता है।

तभी से भगवान के दिये ये चेस्टनट और दूसरी अच्छी चीज़ों की तरह किसी एक परिवार के नहीं हैं चाहे वह कितना भी ताकतवर क्यों न हो बल्कि सबके हैं।

10 कुत्तों की जीभ इतनी लम्बी क्यों होती है[44]

यह उस समय की बात है जब जानवर आदमियों की तरह हुआ करते थे और खूब बोलते थे। बहुत सारे कुत्ते तो इतना ज़्यादा बोलते थे कि ऐसा लगता था कि वे थोड़े से समय में ही वह सब कुछ कह देना चाहते थे जो वे जानते थे।

हालॉकि उन दिनों बहुत सारे कुत्ते तो नहीं थे पर फिर भी हर परिवार में कुछ कुत्ते तो होते ही थे जिन्हें वे परिवार वाले शिकार के लिये काम में लाया करते थे।

कैडो जाति[45] का एक आदमी था जिसका नाम उड़ती चिड़िया था। उसके पास कोई कुत्ता नहीं था। क्योंकि उसको यह पसन्द ही नहीं था कि उसका कुत्ता दूसरों को जा कर उसके बारे में सब कुछ बताये।

पर उसको इतना पता था कि यदि उसके पास एक अच्छा सा कुत्ता हो तो वह अपने परिवार के लिये और अधिक मॉस जुटा सकता था।

एक दिन उसके एक दोस्त ने उसे एक छोटा सा कुत्ते का बच्चा ला कर दिया। उसने उसे रख लिया और उसको रोज सिखाने लगा

[44] Why the Tongue of Dogs is So Long – a folktale from Caddo Tribe, America, North America.
[45] Caddo is name of a Tribe of North America

कि उसे ज़्यादा नहीं बोलना चाहिये। बच्चा जल्दी ही बड़ा हो गया। अब उसने उसको शिकार पकड़ना सिखाना शुरू किया।

कुछ समय बाद वह कुत्ता और बड़ा हो गया और अब वह बड़े शिकार पर जाने लायक हो गया।

एक दिन उड़ती चिड़िया ने बहुत सारा खाना बॉधा और अपने कुत्ते से कहा कि देखो हम ऊआचीता पहाड़[46] पर कई दिनों के लिये शिकार करने के लिये जा रहे हैं।

सो वह अपने घोड़ों पर सामान बॉध कर और अपने कुत्ते को साथ ले कर अकेला ही शिकार पर चल दिया। तीन दिन के बाद वे ऊआचीता पहाड़ पर पहुॅचे और वहॉ जा कर डेरा डाल दिया।

उड़ती चिड़िया ने कुत्ते से कहा — "हम लोग गॉव से बहुत दूर हैं पर अगर तुम मुझसे पहले गॉव पहुॅच कर वहॉ सबको सब कुछ बता आये तो मैं तुम्हारी जबान खींच लूॅगा।"

वे वहॉ कई दिनों तक रहे। उन्होंने वहॉ कई दिन तक शिकार किया और बहुत सारे जानवर मारे। फिर वे सब जानवरों का मॉस घोड़ों पर लाद कर वापस घर की तरफ चल दिये।

सफर के पहले ही दिन कुत्ता गायब हो गया। उड़ती चिड़िया ने उसे बहुत पुकारा पर उसका तो कहीं पता ही नहीं था।

कहीं वह कुत्ता रास्ता न भूल गया हो और अपने डेरे वाले स्थान पर ही न पहुॅच गया हो यही सोच कर वह फिर उसी जगह

[46] Ooaachita Mountain

पहुँचा जहाँ उसने डेरा लगाया था पर वह तो वहाँ भी नहीं था। अन्त में फिर वह घर की तरफ चल दिया।

उड़ती चिड़िया को अपनी शिक्षा पर विश्वास था इसलिये वह यह सोच ही नहीं पाया कि उसका कुत्ता उससे पहले ही कैडो गॉव पहुँच गया होगा।

पर कई दिन के सफर के बाद जब वह घर पहुँचा तो उसने देखा कि उसका कुत्ता एक पेड़ के नीचे बैठा हुआ भालुओं की, शेरों की और हिरनों की कहानियाँ सुना रहा है।

यह देख कर उड़ती चिड़िया बहुत नाराज हुआ और चीखा — "मैंने तुमको पहले ही मना किया था कि अगर तुम मुझसे पहले गॉव आये और तुमने यह सब यहाँ के लोगों को बताया तो मैं तुम्हारी जीभ खींच लूँगा।" और उसने तड़ातड़ उस कुत्ते को मारना शुरू कर दिया।

गुस्से में आ कर उसने उसकी जीभ को जहाँ तक वह खींची जा सकती थी खींचा और फिर उसके मुँह में उसने एक डंडी घुसा दी। तभी से कुत्तों की जीभें लम्बी और मुँह बड़े होते हैं।

11 बर्फ का आदमी और वसन्त का दूत[47]

एक बार बर्फ का आदमी एक जमी हुई नदी के किनारे एक तम्बू में बैठा हुआ था। उसकी आग बुझ गयी थी। वह बहुत बूढ़ा हो चला था और कुछ उदास भी था। उसके बाल सफेद और बहुत लम्बे थे। वहॉ रोज ही जाड़े के तेज़ तूफानों की आवाज सुनायी देती थी और कुछ भी नहीं।

एक दिन जब बर्फ के आदमी की आग का आखिरी अंगारा भी बुझने वाला था तो उसने देखा कि एक जवान लड़का उसके तम्बू की ओर बढ़ा चला आ रहा है।

लड़के के गाल लाल थे, ऑखें खुशी से चमक रहीं थीं और वह मुस्कुरा रहा था। वह हल्के हल्के कदमों से तेज़ तेज़ चल रहा था और उसके सिर के चारों ओर मुलायम घास की एक माला बॅधी हुई थी। उसके हाथ में ताज़े फूलों का एक गुच्छा था।

बर्फ के आदमी के पास आ कर उस लड़के ने उसको नमस्ते की तो बर्फ के आदमी ने कहा — "आओ बेटा, अन्दर आओ। मुझे तुमको देख कर बहुत खुशी हुई पर तुम यह तो बताओ कि तुम यहॉ क्यों आये हो?"

लड़का बोला — "मैं वसन्त का दूत हूॅ।"

[47] Iceman and the Messenger of Spring – a folktale from Cherokee Tribe, America, North America

इस पर बर्फ का आदमी बोला — "ओह, तब मैं तुम्हें अपनी ताकत के बारे में बताता हूँ कि मैं क्या क्या कर सकता हूँ फिर तुम मुझे बताना कि तुम क्या क्या कर सकते हो।"

यह कह कर बूढ़े बर्फ के आदमी ने अपनी दवाओं की पोटली में से एक पाइप निकाला और उसको खुशबूदार पत्तियों से भर दिया। फिर उसको उसने अपने आखिरी कोयले से जलाया और उसका धुँआ चारों दिशाओं में उड़ा कर वह पाइप उस लड़के को दे दिया।

फिर वह बोला — "जब मैं अपनी सॉस छोड़ता हूँ तो नदियों में बहता पानी रुक जाता है, जम जाता है और पारदर्शक भी हो जाता है। जब मैं अपने लम्बे बालों को झटकता हूँ तो सारी धरती बर्फ से ढक जाती है।

मेरे कहने पर पेड़ों की पत्तियॉ कत्थई पड़ जाती हैं और पेड़ों से गिर जाती हैं और मेरी सॉस का एक झोंका उनको उड़ा कर बहुत दूर ले जाता है। पानी वाली चिड़ियें झीलों से उठ कर उड़ कर दूर देश चली जाती हैं।

मेरी सॉस से तो जानवर भी डर जाते हैं। वे धरती में जा कर छिप जाते हैं और उनके ऊपर की धरती सख्त हो जाती है।"

यह सब सुन कर वह लड़का मुस्कुराया और बोला — "मैं जब अपने बाल झटकता हूँ तो धीमी धीमी वर्षा होने लगती है। नये नये

पौधे धरती से बाहर झॉकने लगते हैं। मेरी गर्म सॉसों से नदियों का जमा हुआ पानी पिघल जाता है।

अपनी आवाज से मैं चिड़ियों को वापस बुला सकता हूॅ। मैं जिस जिस जंगल से हो कर गुजर जाता हूॅ उन उन को मैं उन चिड़ियों के मीठे गीतों से भर देता हूॅ।"

सूरज आसमान में काफी ऊपर उठ आया था और उसकी हल्की गर्मी धरती पर चारों ओर फैलने लगी थी। बर्फ का आदमी चुपचाप बैठा लड़के की ताकत को सुन रहा था कि इतने में उसने एक रोबिन और एक ब्लू बर्ड को अपने तम्बू के ऊपर चहचहाते सुना।

बाहर नदियों के पानी की कलकल की आवाज भी उसको सुनायी पड़ी। चारों तरफ खुशबूदार फूल खिल गये जिससे चारों तरफ उनकी खुशबू फैल गयी।

लड़के ने देखा कि बूढ़े की ऑखों में ऑसू थे। जैसे जैसे सूरज की गर्मी बढ़ती गयी वह बूढ़ा छोटा और छोटा और बहुत छोटा होता गया और धीरे धीरे सारा का सारा पिघल गया।

उसकी आग भी अब नहीं रही। उसकी जगह पर गुलाबी धारी वाला एक फूल खिला जिसका नाम लोगों ने रखा स्प्रिंग ब्यूटी, क्योंकि वही सबसे पहला पौधा था जिससे जाड़े के जाने का पता चलता था।

11 बर्फ के आदमी की वापसी[48]

यह लोक कथा उत्तरी अमेरिका के मूल निवासियों की चैरोकी जाति की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि पतझड़ के मौसम में एक बहुत सारे कोहरे वाले पहाड़ पर पड़ी सूखी पत्तियों ने आग पकड़ ली और वे धू धू कर के जल उठीं। आग फैलती गयी और फैलती गयी। कोई उस आग को काबू में नहीं कर सका।

उस भयंकर आग से बहुत सारे पेड़ जल गये, फिर वह उनकी जड़ों में चली गयी और वहॉ भी उसने बहुत सारे गड्ढे कर दिये। आग और गहरे में घुस गयी और वहॉ धरती की हर चीज़ को जलाती गयी। धीरे धीरे वहॉ एक बहुत बड़ा गड्ढा बन गया।

जब यह आग इतनी अधिक बढ़ गयी तो वहॉ के रहने वाले लोग परेशान हो गये। उन्होंने इस बीच में आग बुझाने की बहुत कोशिश की परन्तु नाकामयाब रहे।

तब गॉव का सरदार बोला कि केवल एक ही आदमी उस आग को बुझा सकता था और वह था बर्फ का आदमी। वह बर्फ का आदमी बहुत दूर कहीं उत्तर में रहता था।

सरदार ने फिर एक मीटिंग बुलायी और इकट्ठा हुए आदमियों में से दो आदमियों को चुना जो बर्फ के आदमी की खोज में जा सकें

[48] Return of the Iceman – a folktale from Cherokee Tribe, America, North America

और उसको वहॉ ला सकें। सो वे दो आदमी उत्तर की तरफ गये। काफी लम्बा सफर करने के बाद उन लोगों को वह बर्फ का आदमी मिल गया।

बर्फ का आदमी बहुत बूढ़ा था। उसके धरती तक लम्बे बाल दो लम्बी चोटियों में बॅधे लटके हुए थे। उन दोनों आदमियों ने बर्फ के आदमी को अपने आने की वजह बतायी और कहा कि वे आग बुझाने में उसकी मदद चाहते हैं।

बर्फ का आदमी बोला — "हॉ, मैं आग बुझाने में तुम्हारी मदद कर सकता हूॅ।"

कह कर उसने अपने बाल खोल डाले। फिर उनमें से उसने अपने बालों की एक लट ली और उसको दूसरे हाथ की हथेली पर मारा। इससे बहुत ठंडी हवा चलने लगी।

जब उसने उसी लट को हथेली पर दोबारा मारा तो धीमी धीमी बारिश होने लगी। और जब तीसरी बार उसने उस लट को हथेली पर मारा तो बारिश बहुत तेज़ हो गयी।

और जब चौथी बार उसने अपनी लट को हथेली पर मारा तो बहुत ज़ोर से बर्फ गिरने लगी। ऐसा लग रहा था जैसे यह सब उसकी उस लट में से निकल रहा हो।

वह बर्फ का आदमी उन दोनों आदमियों से बोला — "अब तुम लोग घर वापस जाओ मैं भी कुछ दिनों में वहॉ आता हूॅ।"

वे दोनों आदमी उसका यह सन्देश ले कर तुरन्त अपने गॉव वापस आ गये। वहॉ लोग अभी भी जलते हुए गड्ढे के चारों तरफ मजबूर से खड़े हुए थे।

कुछ ही दिनों में उत्तरी ठंडी हवा बहने लगी। लोगों ने जान लिया कि वह हवा बर्फ के आदमी की भेजी हुई थी। परन्तु उस हवा से तो आग और भी तेज़ हो गयी थी।

इतने में धीमी धीमी बारिश शुरू हो गयी लेकिन वहॉ आग इतनी तेज़ थी कि उस आग पर उस बारिश का कोई असर ही नहीं हो रहा था।

फिर वह धीमी बारिश तेज़ बारिश में बदल गयी जिसने आग तो कम की परन्तु उस बारिश के आग पर पड़ने से जो धुऑ उठा उससे बादल बन गये।

सारे लोग बारिश से बचने के लिये अपने अपने घर की तरफ दौड़े। इतने में ही बहुत ज़ोर का तूफान आ गया और उसके साथ आयी बर्फ जिसने सारी आग को सफेद बर्फ से ढक दिया। ऐसा लग रहा था जैसे आग के ऊपर किसी ने सफेद बर्फ का कम्बल डाल दिया हो।

काफी दिनों के बाद जब यह तूफान रुका और लोग अपने अपने घरों से बाहर निकले तो उन्होंने देखा कि वह जलता हुआ गड्ढा अब एक बड़ी झील बन गया है।

आज भी उस बहुत सारे कोहरे वाले पहाड़ के पास रहने वाले लोगों का कहना है कि वे अभी भी कभी कभी झील में पानी के नीचे अंगारे बुझने की आवाजें सुनते हैं।

13 हवा का जन्म[49]

अमेरिका के ऐस्कीमो लोगों में कही जाने वाली यह लोक कथा यह बताती है कि हवा का जन्म ही कैसे हुआ।

एक बार की बात है कि कैनेडा के यूकोन प्रान्त में दक्षिण की तरफ एक गॉव में एक आदमी अपनी पत्नी के साथ अकेला रहता था। उसके कोई बच्चा नहीं था।

एक दिन पत्नी ने पति से कहा — "टुंड्रा में बहुत ऊपर दूर की तरफ एक अकेला पेड़ खड़ा है। तुम उस पेड़ के पास जाओ और उसके तने का एक टुकड़ा ले कर आओ। उससे तुम एक गुड्डा बनाना। उससे हम लोगों को लगेगा कि हमारे एक बच्चा है।"

सो पति घर से बाहर निकला तो उसने क्या देखा कि उसके सामने एक बहुत ही चमकीली रोशनी की लकीर जा रही थी। यह लकीर बर्फ पर चॉद की एक किरन पड़ने से बन रही थी। वह लकीर टुंड्रा से हो कर जा रही थी। उसको वही रास्ता लेने के लिये कहा गया था। वह आकाश गंगा[50] थी।

---

[49] The Origin of Wind – an Eskimo folktale from Native Americans, North America. Translated from the Web Site : http://www.worldoftales.com/Native_American_folktales/Eskimo_folktale_29.html Taken from the book "Treasury of the Eskimo Tales", by Clara Kern Bayliss. Thomas Y Crowell Company, USA. 1922. 31 Eskimo Tales.

[50] Translated for the word "Milky Way"

उसने वही रास्ता पकड़ा और चल दिया। काफी दूर चलने के बाद उसको उस चमकीले रास्ते पर एक चमकीली चीज़ देखी। जब वह वहॉ पहुँचा तो उसने देखा कि वहॉ तो एक पेड़ खड़ा है।

यह तो वही पेड़ था जिसकी खोज में वह निकला था। पेड़ छोटा ही था सो उसने अपना छोटा वाला शिकारी चाकू निकाला और उसके तने में से एक छोटा सा टुकड़ा काट लिया और उसे घर ले आया।

घर ला कर उसने उसमें से एक लड़के की मूर्ति बनानी शुरू की। उसकी पत्नी ने उसके लिये कपड़े के दो सूट बनाये और उनमें से एक जोड़ी कपड़े उसको पहना दिये। दूसरा सूट उसने उठा कर रख दिया कि जब उसका पहला सूट गन्दा हो जायेगा तब वह उसको दूसरा पहना देगी।

फिर उसने पति से कहा — "अब तुम इसके लिये खिलौने वाले बर्तन बना दो।"

पति बोला — "यह सब तो इसके लिये करना बेकार है क्योंकि ऐसा करने से हम लोगों की हालत पहले से कोई ज़्यादा अच्छी नहीं होगी।"

पत्नी ने कहा — "क्यों? हम तो अभी ही पहले से ज़्यादा अच्छे हैं। इस गुड्डे से पहले हमारे पास बात करने के लिये कुछ भी नहीं था सिवाय अपने बारे में बात करने के। अब कम से कम हमारे पास

यह गुड्डा तो है बात करने के लिये और हमको आनन्द देने के लिये।"

पत्नी को खुश करने के लिये पति ने उस गुड्डे के लिये खिलौने वाले बर्तन बनाये। पत्नी ने गुड्डे को दरवाजे के सामने एक बैन्च पर बिठा दिया और उसके सामने उन खिलौने वाले बर्तनों में खाना और पानी रख दिया जो उसके पति ने बनाये थे।

जब रात हुई तो पति पत्नी दोनों सोने के लिये चले गये। कमरे में बहुत अँधेरा था। उन्होंने कई सीटी जैसी आवाजें सुनीं तो पत्नी पति से बोली — "क्या तुम्हें ये आवाजें सुनायी पड़ रही हैं? ये उस गुड्डे की आवाजें हैं।" कह कर वह उसको जब तक हिलाती रही जब तक कि वह जाग नहीं गया।

वे दोनों उठे उन्होंने रोशनी की तो उन्होंने देखा कि गुड्डे ने खाना खा लिया था पानी पी लिया था और उसकी ऑखें चारों तरफ घूम रही थीं। पत्नी ने खुशी के मारे उसे पकड़ लिया और उसके साथ बहुत देर तक खेलती रही और उसे प्यार करती रही। जब वह थक गयी तब वे दोनों सोने के लिये चले गये।

जब वे सुबह उठे तो उन्होंने देखा कि गुड्डा तो वहॉ से चला गया है। उन्होंने उसे सारे घर में ढूँढा पर वह उनको कहीं नहीं मिला। घर से बाहर जाते हुए उसके पैरों के निशान वहॉ मौजूद थे।

वे उन निशानों के पीछे पीछे चल दिये तो वे एक नदी के किनारे पहुँच गये और वहॉ से उसके किनारे चलते हुए एक ऐसी

जगह पहुँच गये जो गॉव के बाहर थी। वहॉ जा कर वे रुक गये क्योंकि वहॉ से रास्ता केवल आकाश गंगा तक जाता था जिस पर पति वह पेड़ ढूँढने के लिये पहले ही जा चुका था।

गुड्डा उस चमकीले रास्ते पर चलता चला गया जब तक वह दिन के किनारे पर नहीं आ गया जहॉ आसमान धरती से मिलता है और दीवारें रोशनी से। उसके बराबर में ही गुड्डे ने वहॉ दीवार में एक बहुत बड़ा छेद देखा जो खाल से ढका हुआ था।

वह खाल अन्दर की तरफ को थोड़ी दबी हुई थी। जैसे उसके दूसरी तरफ से कोई ताकत उसे धक्का दे रही हो।

गुड्डा बोला — "ऐसा लगता है कि थोड़ी सी हवा ही इसको बहुत ही जानदार बना देगी।" कह कर उसने अपना चाकू निकाला और उस ढकने वाली खाल में उससे एक छेद कर दिया। तुरन्त ही वहॉ से एक बहुत ही ज़ोर की हवा गुजरी जो कभी कभी उसमें से एक ज़िन्दा रेनडियर ले कर आ रही थी।

गुड्डे ने उस छेद में से झॉक कर देखा तो उसने देखा कि उस छेद के दूसरी तरफ तो धरती के जैसी एक दूसरी दुनियॉ थी। उसने उस छेद को फिर से ढक दिया।

उसने हवा से कहा — "इतनी ज़ोर से मत बहो। कभी कभी ज़ोर से बहो तो कभी धीरे धीरे बहो और कभी बिल्कुल मत बहो।"

फिर वह आसमान की दीवार पर चढ़ गया और उस पर चलते चलते दक्षिण–पूर्व की तरफ निकल आया। इस तरफ भी उसने

उसमें एक छेद देखा। यह भी पहले छेद की तरह से ही ढका हुआ था और इसका ढक्कन भी अन्दर की तरफ को फूला हुआ था।

जब उसने इसका ढक्कन काटा तो उसके छेद में से भी रेनडियर पेड़ और झाड़ियॉ निकल पड़ीं। उसने जल्दी से वह छेद भी बन्द कर दिया और तेज़ हवा से कहा — "ओह तुम तो बहुत तेज़ हो। तुम कभी कभी तेज़ बहो कभी कभी हल्की बहो और कभी कभी बिल्कुल न बहो। धरती के लोगों को अलग अलग तरह की हवा चाहिये।"

आसमान की दीवार के सहारे सहारे चलते चलते वह फिर दक्षिण की तरफ आया। वहॉ भी उसको एक छेद दिखायी दिया जो ढका हुआ था। जब उसने उसके ढक्कन में एक छेद खोला तो वहॉ से बड़ी गर्म हवा बारिश और दक्षिण के समुद्र के पानी के छींटे ले कर आयी। गुड्डे ने उस छेद को भी वही कहते हुए बन्द कर दिया जो उसने औरों से कहा था।

अब वह पश्चिम दिशा की तरफ आया तो उसने वहॉ भी एक छेद देखा। उसके ढक्कन में छेद करने पर वहॉ से समुद्र का पानी ले कर बहुत भारी बारिश और तूफान आया। उसने इसको भी वही कहा जो औरों को कहा था और फिर उत्तर पश्चिम की तरफ चला गया।

उत्तर पश्चिम का छेद खोलने पर उधर से बहुत तेज़ ठंडी हवा आयी जिसके साथ आयी बर्फ। गुड्डा तो उस हवा और बर्फ से

हड्डी तक जम गया। उसने तुरन्त ही वह छेद बन्द कर दिया जैसे उसने और छेद बन्द किये थे।

अब वह और आगे उत्तर की तरफ गया तो उसे उधर बहुत ही ठंडी हवा का सामना करना पड़ा। वह हवा इतनी ठंडी थी कि उसे आसमान की दीवार के साथ साथ चलना छोड़ना पड़ा और दक्षिण की तरफ आना पड़ा फिर उत्तर की तरफ वापस गया।

वहॉ तो इतना ज़्यादा ठंडा था कि उसको उस छेद का ढक्कन काटने की हिम्मत बटोरने के लिये कुछ देर तक इन्तजार करना पड़ा। जब उसने उसका ढक्कन काटा तो उधर से बहुत सारी बर्फ के साथ इतनी तेज़ ठंडी हवा का झोंका आया कि उसने सारी धरती को बर्फ से ढक दिया।

वह इतना कड़क ठंडा था कि उसे वह छेद तुरन्त ही ढक देना पड़ा। उसने उससे कहा कि वह केवल जाड़े के मौसम के बीच में ही आये ताकि लोग बिना जाने उसकी चपेट में न आयें। उस समय उनको पता होगा कि वह कब वहॉ आयेगा तो वे उसके लिये तैयारी कर लेंगे।

वहॉ से फिर वह गर्म जगहों के लिये धरती के बीच की तरफ चला जहॉ आ कर उसने देखा कि आसमान तो लम्बे लम्बे डंडों पर खड़ा हुआ है जैसे कि कोई कोण वाला मकान खड़ा हो। पर वे डंडे किसी ऐसी सुन्दर चीज़ के बने थे जिसको वह नहीं जानता था।

चलते चलते वह फिर उसी गॉव में आ गया जहॉ से उसने अपनी यात्रा शुरू की थी और अपने घर में चला गया। गुड्डा उस गॉव में काफी दिनों तक रहा। फिर जब उसके मॉ बाप जिन्होंने उसे बनाया था मर गये तो उसको गॉव के दूसरे लोगों ने रख लिया।

और इस तरह से वह पीढ़ी दर पीढ़ी रहता चलता चला आ रहा था कि आखिर वह मर गया।

उसकी मौत के बाद से अब उसी की याद में माता पिता अपने बच्चों के लिये गुड्डे गुड़िया बनाते हैं जिसने हवा आने के लिये आसमान में छेद किये थे और धरती के लिये साल के छह मौसमों के लिये उसको नियमित[51] किया था।

[51] Translated for the word “Regulated”.

14 भैंस का गीत[52]

यह बहुत बहुत बहुत पहले की बात है जब धरती पर भैंस नहीं थी। भैंस[53] ऊपर आसमान से धरती पर देखती और देखती कि लोग बहुत दुखी हैं।

सो उसने उपर से गाया — "मैं धरती पर जाऊँगी और लोगों की ज़िन्दगी बदल दूँगी।" उसके ये शब्द धरती पर रहने वाले लोगों ने सुने तो वह बहुत खुश हो गये।

यह कह कर वह भैंस एक पगडंडी पर भागी जो एक पहाड़ी की चोटी पर जाती थी। पहाड़ी की चोटी पर पहुँच कर वह वहाँ से बहुत नीचे कूद पड़ी।

लोग उसको देखने आये पर वह तो मर चुकी थी। वे बोले — "हमारी माँऐं ठीक ही कहती थीं कि यहाँ हमारे लिये खाना है।"

उसके बाद उन्होंने कुछ खुरों की आवाजें आती सुनी जैसे बिजली आसमान में कड़कती चली जाती है। उन्होंने देखा कि सारी धरती तो भैंसों से भर गयी है... ।

---

[52] Buffalo Song – a story of from traditional Salish, Native American Indians, North America. Adapted from the book "Buffalo Song", by Joseph Bruchak. NY, Lee & Low Books Inc. 2013. 36 pages unnumbered. A 1-story Children's Book with pictures.
[The book says that this is a real story. Samuel Walking Coyote passed on in 1897 and Mary in 1901. The Pablo-Allard herd continue to grow. Walking Coyote is not the only one credited with helping to save the buffalo from extinction.]

[53] Translated for the word "Sun Buffalo Cow" – that is what a buffalo is called by Native Americans

यह **1873** की बात है। वह दिन एक बुरा दिन था। भैंस की एक कटिया[54] ने एक घाटी के घास के मैदान में अपनी मॉ के शरीर से अपनी नाक रगड़ी। लोग वहॉ से अपनी अपनी गाड़ियॉ ले ले कर चले गये थे और उनके साथ ही चली गयी थीं बादल के गरजने की आवाजें भी।

जानवरों के उस छोटे से झुंड में और दूसरे जानवर जमीन पर उस कटिया के चारों तरफ चुपचाप पड़े हुए थे। पहाड़ में जहॉ वे रहते थे वह जगह उनकी हिफाजत नहीं कर पायी थी।

शिकारी लोग उन भैसों की केवल जीभ ही काट कर ले गये थे जिनको उन्होंने मारा था।

भैंस की यह कटिया एक ऐसी जगह से आयी थी जहॉ वह छिपे तौर पर रह रही थी। उसकी मॉ उस भैंस के झुंड में सबसे बड़ी भैंस थी। एक वही थी जो झुंड को खतरे से बचाती थी और वही आज मर गयी थी।

उस कटिया ने फिर से अपनी मॉ को हिलाया पर वह तो हिली नहीं। रात हो गयी थी सो वह कटिया अपनी मॉ की ठंडी तरफ सिकुड़ कर बैठ गयी।

[54] Some people in India call buffalo's daughter a "Katiyaa" and their son a "Kataraa". Bachhiyaa and Bachhadaa are normally called the cow's children.

सूरज दो बार निकला और दो बार डूब चुका था कि एक घोड़ा दो नैज़ पर्स[55] सवारों को ले कर उस घाटी में आया। एक सवार बड़ा था और दूसरा उसका बेटा।

अप्पालूसा[56] घोड़े के खुरों की पत्थर के ऊपर आवाज नहीं होती थी क्योंकि उसके पैरों में सफेद आदमी[57] के घोड़ों की तरह लोहे की नाल नहीं ठोकी जाती थी।

लड़के ने अपने पिता के पीछे से चारों तरफ देखा तो जो कुछ उसने देखा उसे देख कर उसको आश्चर्य तो नहीं हुआ पर वह दुखी हो गया।

तभी भैंस की कटिया ने अपना सिर उठाया। वह भूख से इतनी कमजोर थी कि वह न तो खड़ी ही हो सकी और न वहॉ से भाग ही सकी। वह लड़का घोड़े से नीचे कूदा और उस कटिया की तरफ भागा और उसके सिर को अपनी गोद में ले कर झुलाने लगा।

वह बोला — "ओह, यह तो अभी तक ज़िन्दा है। पिता जी, क्या हम इसकी कुछ सहायता कर सकते हैं?"

---

[55] Nez Perce is an area in the North-Western part of USA whose people were called Nez Perce – Native Americans.

[56] A kind of horse. See its picture above.

[57] Translated for the word "White Man" – white men were called those people who came from Europe after the Americas were discovered in late 15th century.

लड़के का पिता भी जिसका नाम था "दो हंस" घोड़े पर से नीचे उतर आया।

उसने घोड़े की लगाम जमीन पर ही छोड़ दी और अपने बेटे के कन्धे पर हाथ रख कर बोला — "लाल ऐल्क[58], इतने छोटे बच्चे को बहुत देखभाल की जरूरत होती है। हम लोगों को बहुत दूर जाना है और यह कटिया हमारे साथ सफर करने के लिये बहुत कमजोर है।"

लाल ऐल्क ने अपने पिता की तरफ ऐसे देखा जैसे कह रहा हो कि पिता जी इसको अपने साथ ले चलिये न।

दो हंस मुस्कुराया और बोला — "अच्छा ठीक है मेरे बेटे। हम इसको यहॉ नहीं छोड़ेगे। मेरा यहॉ एक दोस्त है जो यहीं पास में ही रहता है। वह ऐसे बे मॉ बाप भैंसों के बच्चों को इकट्ठा करता रहा है ताकि वह इन भैंसों की सहायता कर सके।

वह यह सोचता है कि अगर वह इनकी सहायता करेगा तो उसके बच्चों के नाती पोते मैदानों में घूमते हुए इन भैंसों के खुरों की आवाज फिर से सुन पायेंगे। उसका नाम है "चलता हुआ कायोटी"[59]। वह इस छोटे से बच्चे को देख कर बहुत खुश होगा।"

[58] Red Elk was the boy's name

[59] Translated for the words "Walking Coyote" – Coyote is a small desert wolf. It is pronounced as Kaa-yo-tee

यह कह कर दो हंस ने अपनी बॉह उस कटिया के नीचे को लगायी और उसको उठा कर अपने घोड़े की तरफ ले गया। जब तक उसने उस कटिया को घोड़े की पीठ पर रखा और वह खुद भी उसके ऊपर चढ़ा तब तक वह घोड़ा चुपचाप खड़ा रहा।

लाल ऐल्क अपने पिता के पीछे बैठ गया और वे पश्चिम की तरफ के पहाड़ की तरफ जिधर सूरज छिपता था चल दिये।

सूरज बीच आसमान में ही था जब दो हंस और लाल ऐल्क एक कैम्प में पहुॅचे जो पहाड़ की चोटी के साये में लगा हुआ था। दूसरी भैंसों की गन्ध कटिया की नाक में पहुॅची तो वह अपना सिर उठाने और इधर उधर देखने के लिये कुलमुलायी।

अपने बेटे की सहायता से दो हंस ने उस कटिया को घोड़े से उतारा और उसको उसके कॉपते हुई टॉगों पर खड़ा किया। वहॉ भैंसों का एक बाड़ा था जिसकी दीवार पत्तियों और डंडों को साथ साथ बॉध कर बनायी गयी थी। उसमें भैंसों के और भी कटरे और कटिया थे।

एक आदमी ने जो उस बाड़े के दरवाजे पर खड़ा हुआ था उन लोगों का स्वागत करने के लिये अपना हाथ हिलाया।

उस बाड़े के पीछे एक छोटा सा घर था जहॉ एक स्त्री और एक चौदह पन्द्रह साल का लड़का आग के ऊपर अपना दोपहर का खाना बना रहे थे। आदमी तो आगे बढ़ा पर वे स्त्री और लड़का वहीं बैठे रहे।

आदमी बोला — "आओ दो हंस, आज तुमको यहाँ देख कर बहुत अच्छा लगा।"

दो हंस भी बोला — "ओ चलते हुए कायोटी, मेरे पुराने दोस्त, मुझे भी तुमसे मिल कर बहुत अच्छा लग रहा है।"

फिर उसने चलते हुए कायोटी का हाथ पकड़ लिया और बोला — "मेरे बेटे ने तुम्हारे लिये, तुम्हारे इस परिवार को बढ़ाने के लिये एक और बिन माँ बाप का बच्चा पा लिया है। शिकारियों ने इसके झुंड को देख लिया था तो बाकी सबको तो उन्होंने मार दिया अब बस यही अकेली बची है।"

चलता हुआ कायोटी उस कटिया की तरफ आगे बढ़ा तो कटिया ने अपना सिर झुका लिया और इनकार में अपना खुर पटका पर कटिया के पैर बहुत कमजोर थे सो वह कॉप गयी।

केवल लाल ऐल्क की उसको पकड़ने की कोशिश ने उस कटिया को गिरने से बचा लिया। चलते हुए कायोटी ने अपना बॉया हाथ उस कटिया को सहलाने के लिये आगे बढ़ाया।

जैसे ही उसने अपना हाथ आगे बढ़ाया तो लाल ऐल्क ने उसके हाथ में भैंस के पूँछ के बालों की चोटी की तरह गूँथा हुआ ब्रेसलैट[60] पड़ा देखा।

[60] Bracelet – a lose bangle type ornament to be worn on wrists. It can be made of anything, from thread to gold. In Northern India people normally wear it made of gold – men in the form of a chain and women set it with precious stone (called Dastee in Hindi)

चलता हुआ कायोटी बोला — "ओ मेरे छोटे दोस्त, जब मैं चार साल का था तब मैंने अपना पहला भैंसों का झुंड देखा था।

मैं अपने चाचा के साथ घोड़े पर चढ़ा चला जा रहा था कि मैं सिन्येलेमिन[61] में इन पहाड़ों के उस पार की घाटी में आ पहुँचा।

उस समय सारी धरती भैंसों से काली हुई रहती थी। एक कोने से ले कर दूसरे कोने तक भैंसे हीं भैंसें थीं। यह करीब तीस साल पहले की बात है। तुमने ऐसा कभी देखा है क्या?"

लाल ऐल्क ने ना में सिर हिलाया।

चलता हुआ कायोटी फिर बोला — "अपनी ज़िन्दगी में यह जो कुछ भी मैंने देखा उनमें वह सबसे अच्छी चीज़ थी। मैं तो उसको कभी भूल ही नहीं सकता।"

फिर उसने अपना वह भैंस की पूँछ के बालों वाला ब्रेसलैट अपनी कलाई से निकाला और लड़के के हाथ पर रख दिया और बोला — "यह तुमको वह याद दिलाने के लिये है जो मैंने देखा था।"

लाल ऐल्क को उसको धन्यवाद देने की कोई जरूरत नहीं थी। चलते हुए कायोटी को पता था कि उसके दिल में क्या था। लाल ऐल्क अपने पिता के पास वापस आ गया।

पिता ने अपने बेटे को अपने पीछे घोड़े पर बिठाने के लिये ऊपर खींचा और वे बिना पीछे देखे आगे चले गये।

---

[61] Sinyelemin

चलते हुए कायोटी ने कटिया को उठाया और उसको भैंसों के बाड़े में ले गया। वह उसके हाथों से छूटने के लिये कुलमुलाती रही जब तक उसने यह गाना नहीं गाया —

हेचा हे, हेचा हो, हेचा हे ये हो

उसके बाद उसने उसको भैंसों के बाड़े में धीरे से उसके पैरों पर खड़ा कर दिया। वह उसके शरीर से लग कर खड़ी हो गयी और हलके हलके अपने पैरों को जमीन पर मारने लगी।

चलता हुए कायोटी बोला — "तुम तो बहुत बहादुर हो ओ मेरी छोटी बिजली की सी कड़क के खुर वाली[62]। तुम्हारी भैंसों ने ही तो मेरे लोगों को ज़िन्दा रखा है। तुमने हमको खाना दिया और शरण दी। अब यह हमारी बारी है कि हम तुम्हारी सहायता करें।

मैं तुमको और इन भैंसों को पहाड़ों के उस पार ले जा रहा हूँ। वहाँ काले कपड़े वाले फादर रहते हैं जो सेन्ट इगनेशियस मिशन के कैथोलिक पादरी[63] हैं।

उनके पास बहुत अच्छे अच्छे घास के मैदान हैं। वे हमारी आत्मा की देखभाल करते हैं सो यकीनन वे तुम्हारी भी देखभाल करेंगे जो हमारी आत्मा को ताकतवर बनाते हैं।

तभी चलते हुए कायोटी की पत्नी एक कटोरा ले आयी और उसको छोटी बिजली की कड़क के खुर वाली के सामने रख दिया।

[62] Translated for the words "Little Thunder Hoof"

[63] Black Robe Fathers priests at St Ignatius Mission

चलते हुए कायोटी ने कटिया से कहा — "यह मेरी पत्नी है मैरी। तुमको इसका धन्यवाद करना चाहिये क्योंकि यह इसी का विचार था। मैरी, इसको बताओ कि तुमने मुझसे क्या कहा था।"

मैरी मुस्कुरायी और अपने पति की तरफ देख कर बोली — "हमारे सैलिश[64] लोग जो भैंस को बहुत प्यार करते हैं उनका प्यार बहुत जल्दी ही चला जायेगा। हम सब इसी वजह से बहुत दुखी थे।

तो मैंने कहा कि तुम उन सब कटरे और कटियों को पकड़ो जिनको तुम पकड़ सकते हो और उनको हमारे लोगों के पास ले जाओ। जब वे उन भैंसों को देखेंगे तो बहुत खुश होंगे।"

तभी उनका बेटा वहॉ आ गया और उस कटिया के बराबर में आ कर खड़ा हो गया तो चलते हुए कायोटी ने उसका परिचय कराया — "यह मेरा बेटा है कम्बल बाज़[65]।"

कम्बल बाज़ ने बड़े मुलायम हाथों से कटिया की नाक को थोड़ा नीचे की तरफ कटोरे की तरफ किया जिसमें जड़ें मिला हुआ पतला सा दलिया था। जैसे ही खाने की खुशबू बछिया के नथुनों में पहुॅची तो उसने अपना मुॅह नीचे किया और उसे खाना शुरू कर दिया।

[64] Salish people – a tribe of Native Indians
[65] Translated for the words "Blanket Hawk"

चलते हुए कायोटी ने देखा और हॉ में सिर हिलाया और बोला — "जब तक बर्फ यहॉ के दर्रों से हटेगी तब तक तुम पहाड़ों पर जाने के लायक हो जाओगी।"

सूरज कई बार उगा और कई बार डूबा यानी समय गुजरता गया और छोटी बिजली की कड़क के खुर वाली बछिया बड़ी और मजबूत होती गयी और दूसरे कटरे और कटियों के साथ खेलने लगी।

जब चलते हुए कायोटी, मैरी और कम्बल बाज़ उन सब भैंसों को आपस में अपने सिर टकराते और एक दूसरे का पीछा करते देखते तो उनको विश्वास हो गया कि अब छोटी बिजली की कड़क के खुर वाली कटिया उनके भैंसों के झुंड की लीडर बन गयी है।

सारे कटरे और कटियें उन तीनों आदमियों को जो उनकी देखभाल कर रहे थे अच्छी तरह जानते थे और उन पर विश्वास भी करते थे पर वे जब बुलाते थे तो वे तब तक नहीं आते थे जब तक कि छोटी बिजली की कड़क के खुर वाली कटिया उनको ले कर नहीं जाती थी।

एक दिन चलते हुए कायोटी ने छोटी बिजली की कड़क के खुर वाली कटिया से कहा — "ओ छोटी बिजली की कड़क के खुर वाली कटिया, यह बहुत अच्छा है कि तुम अपने झुंड की लीडर बन गयी हो। हमको इन सबको पहाड़ के उस पार ले जाने में तुम्हारी

सहायता की जरूरत पड़ेगी। पर वह कोई आसान सफर नहीं होगा।"

जब आधी गर्मियॉ बीत गयीं और जब भैंसों ने अपने जाड़ों वाले बाल गिरा दिये तब और बहुत सारे भैंसों के कटरे और कटियें वहॉ लाये गये। वह छोटा सा झुंड अब नौ कटरे और कटियों का हो गया था – पॉच कटरों का और चार कटियों का।

एक दिन सुबह सुबह चलते हुए कायोटी ने पहले ऊपर की तरफ ऊॅचे ऊॅचे पहाड़ों की तरफ देखा और फिर उस भैंसों के झुंड की तरफ देखा जो अब तक भैंसों के बाड़े के किनारे तक आ गया था।

फिर वह उनसे बोला — "दोस्तों, आज का दिन सफर के लिये बहुत ही अच्छा दिन है। हम लोग आज ही चलेंगे।"

तभी कम्बल चील भी बाड़े के पास आ गया और उसने छोटी बिजली की कड़क के खुर वाली कटिया की नाक सहलाने के लिये अपना हाथ बढ़ाया और बोला — "मैं तुम्हारे लिये आगे जा कर रास्ता देख आया हूॅ। मुझे पता चल गया है कि रास्ता बहुत अच्छा है।

मैंने तुम्हारे लिये पीने का पानी भी ढूॅढ लिया है और खाने के लिये घास भी, और ऐसी जगहें भी जहॉ तुम रात को आराम कर सकती हो।"

मैरी हॅसी और बोली — "अगर तुम दोनों इन कटरे और कटियों से ऐसे ही बातें करते रहोगे तो हम लोगों को लौटने में रात हो जायेगी इसलिये अब हमको चलना चाहिये।"

मैरी ने बाड़े के दरवाजे का किवाड़ खोला और छोटी बिजली की कड़क के खुर वाली के पीछे पीछे सब कटरे और कटियें भी उस बाड़े में से निकल आये और वे सब उन आदमियों के पीछे पीछे पहाड़ के ऊपर की तरफ चल दिये।

रास्ता मुश्किल था। कहीं कहीं उनको पानी के नालों में से हो कर भी जाना पड़ा तो कहीं कहीं गिरे हुए पेड़ों को भी लॉघना पड़ा।

चलते हुए कायोटी और मैरी को छोटे कटरों को या तो गोद में उठा कर चलना पड़ा या फिर जब वे उनको गोद में ले जाते हुए थक गये तो उनको घोड़ों के ऊपर थैलों में लाद कर ले जाना पड़ा।

रात को सोने के लिये जब उन्होंने कैम्प लगाया तो चलते हुए कायोटी ने छोटी बिजली की कड़क के खुर वाली कटिया और दूसरे कटरों से कहा — "ज़रा ध्यान रखना। यहॉ पर भेड़िये और पहाड़ों वाले शेर हैं जिनको तुम्हारी गन्ध आ सकती है।"

फिर उसने गाना गाया —

हैचा हे, हैचा हो, हैचा हे ये हो

पहली दो रातें तो ठीक से निकल गयीं पर तीसरे दिन जब वे एक ऊँचे दर्रे से गुजर रहे थे एक भेड़िया उनको छोटे पाइन के पेड़ों[66] के पीछे से देख रहा था।

रास्ता बहुत चढ़ाई वाला था और एक कटरा पीछे रह गया था। भेड़िया उसके पीछे पीछे आ गया।

छोटी बिजली की कड़क के खुर वाली कटिया ने हवा सूँघने के लिये अपना सिर उठाया तो उसको खतरे की गन्ध आयी तो वह घूमी और पहाड़ी पर नीचे की तरफ भागी।

वह छोटा कटरा पहाड़ी से निकले एक पत्थर के पीछे छिपा हुआ था। छोटी बिजली की कड़क के खुर वाली कटिया ने अपना सिर नीचा किया और अपना खुर ज़ोर से जमीन पर मारा तो भेड़िया घूमा और घूम कर पहाड़ी के नीचे भाग गया।

चलता हुआ कायोटी और कम्बल बाज़ यह सब देख रहे थे। वे भेड़िये के भाग जाने पर एक दूसरे को देख कर मुस्कुराये।

कम्बल बाज़ छोटी बिजली की कड़क के खुर वाली कटिया को गले लगाते हुए बोला — "तुम तो सचमुच में लीडर हो।"

इसके जवाब में छोटी बिजली की कड़क के खुर वाली ने कम्बल बाज़ के मुँह पर अपनी नाक रगड़ दी। पलट कर फिर उसने अपना सिर एक छोटे से कटरे के शरीर से उसको ऊपर ले जाने के लिये रगड़ दिया।

[66] Pine trees – a kind of tall evergreen tree

और कई दिन गुजर गये और झुंड ने पहाड़ी के दूसरी तरफ उतरना शुरू कर दिया था। यह रास्ता बहुत पथरीला और ढालू था।

जब वे एक तंग रास्ते से गुजर रह थे तो छोटी बिजली की कड़क के खुर वाली ने कटिया ने अपना खुर पटक कर पलट कर ऊपर की तरफ देखा तो उसको पत्थर गिरने की आवाज आयी। फिर उनके पैरों तले जमीन भी कॉपने लगी।

मैरी चिल्लायी — "अरे यह तो जमीन गिर रही है[67]।"

उसने अपनी बॉहें हिलायीं और सब कटरे और कटियों को छोटी बिजली की कड़क के खुर वाली के पीछे कर दिया जो उनको एक बड़ी चट्टान की तरफ ले कर जा रही थी जहॉ उनको सुरक्षा मिल सकती थी।

कम्बल बाज़ और चलते हुए कायोटी दोनों ने एक एक कटरा पकड़ लिया। ढीली मिट्टी और बड़े बड़े पत्थर ऊपर से नीचे एक नदी के रूप में लुढ़क कर आ रहे थे।

जब सब कुछ शान्त हो गया तो चलते हुए कायोटी ने अपने कटरों को गिना तो उनमें एक कटरा नहीं था। वह उस जमीन गिरने में कहीं चला गया था।

अगर छोटी बिजली की कड़क के खुर वाली कटिया नहीं होती तो शायद और कई कटरे और कटियें भी उसमें चले गये होते।

[67] Translated for the word "Landslide".

सेंट इगनेशियस मिशन की तरफ चलते चलते कायोटी का दिल दुखी हो गया। वह उन भैंसों से बोला — "हम तुमसे अलग होना नहीं चाहते पर क्या करें हमारा परिवार गरीब है। हम तुमको काले कपड़े पहने फादर को दे देंगे। वे तुम्हारी बहुत अच्छे से देखभाल करेंगे।"

पर मिशन के पादरी चलते हुए कायोटी के जानवरों को लेना नहीं चाहते थे। यह सुन कर चलता हुआ कायोटी बहुत नाउम्मीद हुआ। वहॉ से चलते हुए कायोटी बोला — "मुझे लगा कि शायद वे समझते होंगे कि भैंसें हमारी आत्मा को कितना मजबूत बनाती हैं।"

मैरी बोली — "तुम फिकर न करो। अगर पादरी ने इनको लेने से मना कर दिया तो तुम इतने नाउम्मीद न हो। हम लोग अपने सैलिश लोगों के पास चलते हैं।

हमारे सैलिश लोग जो यहॉ पास में ही रहते हैं इन भैंसों के देख कर बहुत खुश होंगे। वे इनकी देखभाल करने में हमारी सहायता जरूर करेंगे।"

यकीनन, जैसे ही भैंसों के आने की बात उस घाटी में फैली तो वहॉ रहते हुए लोग बहुत खुश हो गये। चलते हुए कायोटी, मैरी और कम्बल बाज़ के लिये एक दावत का इन्तजाम किया गया।

सैलिश का सरदार बोला — "हम बड़े खुशकिस्मत हैं कि हमारा भाई और उसका परिवार हमारे लिये भेंट ले कर आया है।"

चलते हुए कायोटी और उसके परिवार के लिये ज़िन्दगी आसान नहीं थी। बदलते मौसम के साथ भैंसों के झुंड को घास चराने के लिये इस घास के मैदान से उस घास के मैदान तक ले कर जाना उनका सारा समय और ताकत ले लेता था।

एक जाड़ा आया और फिर दूसरा। सब बछड़े और बछियें बड़े हो गये थे। जब तीसरा वसन्त आया तो छोटी बिजली की कड़क के खुर वाली कटिया और तीन दूसरी भैंसों ने बच्चे दिये। भैंसें अब आजादी से घूमती थीं।

चलता हुआ कायोटी अपने झुंड को हर साल बढ़ता हुआ देख कर बहुत खुश था। उसका अपना परिवार भी बढ़ रहा था। उसके और मैरी के तीन लड़कियॉ और हो गयी थीं।

वे सालों साल बहुत मेहनत से काम करते रहे थे पर फिर भी वे बहुत गरीब थे। अब **1884** आ गया था।

एक दिन चलते हुए कायोटी ने कहा — "मेरे भैंस बच्चों, अब हमें तुम्हारी सहायता की जरूरत है। काश हमें कोई और मिल जाता जिसको यह याद होता कि वे दिन कितने सुन्दर थे जब सारे मैदान भैंसों से भरे रहते थे।"

माइकल पाबलो[68] एक ऐसा आदमी था जिसको वे दिन याद थे जब सारे मैदान भैंसों से भरे रहते थे। माइकल का पिता मैक्सिको

[68] Michael Pablo

का रहने वाला था और उसकी मॉ एक पीगन इन्डियन[69] थी। वह इस घाटी में काम करने के लिये बहुत साल पहले आया था और अब एक बहुत अमीर आदमी बन गया था।

जब वह गॉवों में जाता तो वह अक्सर चलते हुए कायोटी के भैंसों के झुंड को देखता तो उसको देखते ही उसका दिल बहुत खुश हो जाता।

सो एक दिन वह चलते हुए कायोटी के पास गया और बोला — "मुझे तुम्हारा भैंसों को वापस लाने वाला यह सपना बहुत पसन्द है। हमारी घाटी ऐसे झुंड के लिये बहुत ही अच्छी है।

वहॉ बहुत बड़े बड़े घास के मैदान हैं, जाड़ों के तूफान से बचने के लिये अच्छी जगहें हैं और बहुत सारे इन्डियन लोग हैं जो इन जानवरों को बहुत प्यार करते हैं। मैं तुम्हारे इस झुंड को खरीदना चाहता हूॅ।"

चलते हुए कायोटी के लिये उन भैंसों से अलग रहना बहुत मुश्किल काम था क्योंकि वे उसके परिवार के साथ कितने समय से रह रही थीं। पर आखीर में उसने हॉ में अपना सिर हिला ही दिया।

चलता हुआ कायोटी बोला — "मेरे दोस्त, मैं तुमको अपने बच्चे तुम्हारे भरोसे पर देता हूॅ।" और इस तरह यह सौदा हो गया।

---

[69] Piegan Indian - or "original people" is the collective name of three First Nation band governments in the provinces of Saskatchewan, Alberta, and British Columbia of Canada and one Native American tribe in Montana, USA. The Siksika ("Blackfoot"), the Kainai or Kainah ("Many Chiefs"), and the Northern Piegan or Peigan or Piikani ("Poor Robes") reside in Canada; the Southern Piegan or Pikuni are located in the USA.

और इस तरह चलते हुए कायोटी और उसके परिवार ने छोटी बिजली की कड़क के खुर वाली और दूसरी भैंसें माइकल पाबलो को दे दीं। फ्लैटहैड नदी[70] के पास पहाड़ों की छाया में उन भैंसों को बड़ा सुन्दर घर मिल गया।

उसके बाद माइकल पाबलो ने चार्ल्स ऐलर्ड[71] से साझेदारी कर ली क्योंकि उसको भी भैसों का समय याद था। अब पाबलो ऐलर्ड का झुंड सैंकड़ों में बढ़ गया था।

सैलिश लोगों को उस झुंड पर बड़ा घमंड था और इससे उनकी आत्मा को बहुत ताकत मिलती थी क्योंकि यह उनको उस समय की याद दिलाता था जब वे और भैंसें सब एक साथ एक ही जमीन पर रहते थे।

जब भी वे घाटी में भैंसों के खुरों की आवाजें सुनते तो उनको यह गाना सुनायी पड़ता –

हैचा हे, हैचा हो, हैचा हे ये हो

[70] Flathead River is in North-Western side of the USA in its Montana State. It originates in the Canadian Rockies to the North of Glacier National Park and flows South-West into Flathead Lake and then empties into Clark Fork in the Province of British Columbia of Canada.

[71] Charles Allard

15 भैंस स्त्री – जादू की कहानी[72]

कैडो गॉव के लोगों के डाक्टर बर्फ के चिड़े के एक बेटा था। कुछ बड़ा होने पर उसका नाम रखा गया। बर्फ के चिड़े ने उसका नाम वीरता रख दिया क्योंकि वह बड़ा वीर तथा साहसी था।

कैडो गॉव की बहुत सारी लड़कियॉ उससे शादी करना चाहती थीं पर वह था कि किसी की तरफ भी ध्यान ही नहीं देता था।

एक दिन वह शिकार के लिये निकला तो उसने सामने एक पेड़ के नीचे किसी को बैठे हुए देखा। पास जा कर देखा तो वहॉ एक लड़की बैठी हुई थी।

वह उसको देख कर वापस जाने लगा तो उस लड़की ने उसे बड़ी मीठी सी आवाज में पुकारा — "यहॉ आओ।" वीरता उसके पास गया तो उसने देखा कि वह लड़की बहुत छोटी और बहुत सुन्दर थी।

लड़की बोली — "मुझे मालूम था कि तुम यहॉ आओगे इसी लिये मैं तुमसे मिलने के लिये यहॉ चली आयी।"

वीरता बोला — "तुम हमारी जैसी तो नहीं हो, तुमने कैसे जाना कि मैं यहॉ आऊॅगा।"

[72] Buffalo Woman – a folktale from Caddo Tribe from Native Indians, America, North America.

लड़की बोली — "मैं भैंस स्त्री हूँ। मैंने पहले कई बार तुमको दूर से देखा है। मैं चाहती हूँ कि तुम मुझे अपने घर ले चलो और मुझे अपने साथ रखो।"

वीरता बोला — "मैं तुमको अपने घर ले जा तो सकता हूँ परन्तु मेरे साथ रहने के लिये तुमको पहले मेरे माता पिता से पूछना पड़ेगा।" लड़की बोली ठीक है और वीरता उसको अपने घर ले गया।

वहाँ पहुँच कर लड़की ने उसके माता पिता से पूछा कि क्या वह वीरता के साथ शादी कर के वहाँ रह सकती है। वीरता के माता पिता ने कहा कि अगर वीरता ऐसा करना चाहे तो वह ऐसा कर सकता है। उन्हें कोई ऐतराज नहीं है।

सो वीरता और उस भैंस स्त्री दोनों की कैडो जाति के रीति रिवाजों से शादी हो गयी। बहुत दिनों तक वे सुख से रहे।

एक दिन वह स्त्री बोली — "वीरता, क्या जैसा मैं कहूँ वैसा तुम करोगे?"

वीरता बोला — "हाँ करूँगा यदि तुमने कोई ऐसी वैसी बात नहीं कही तो।"

वह स्त्री बोली — "मैं चाहती हूँ कि तुम मेरे लोगों से भी मिलो।"

वीरता बोला — "ठीक है।"

और दोनों उस भैंस स्त्री के घर चल दिये।

चलते चलते वे एक पहाड़ी पर आये तो स्त्री ने यकायक वीरता को याद दिलाया — "तुमने कहा था कि मैं जो कुछ कहूँगी वह तुम करोगे।"

वीरता बोला — "हॉ बिल्कुल।"।

स्त्री बोली — "मेरा घर इस पहाड़ी के उस पार है। जब मैं अपनी मॉ के पास पहुँचूँगी तो मैं तुमको बता दूँगी। वहॉ कुछ आदमी भी आयेंगे जो तुमको भड़काने की कोशिश करेंगे पर तुम किसी पर भी नाराज मत होना। कुछ लोग तुमको मारने की भी कोशिश कर सकते हैं।"

वीरता ने पूछा — "मगर वे ऐसा क्यों करेंगे?"

इस पर वह बोली — "अब तुम वह सुनो जो मैं तुम्हें बताने जा रही हूँ। तुम्हारे मुझे जानने से पहले से ही मैं तुमको जानती थी। वास्तव में मैंने अपने जादू के ज़ोर से ही उस दिन तुमको अपने पास बुलाया था।

गुस्सा होने के लिये मैंने तुमको इसलिये मना किया है क्योंकि अगर तुम गुस्सा होगे तो बहुत सारे लोग मिल कर तुमसे लड़ेंगे और तुम्हें मार डालेंगे। वे तुमसे जलेंगे क्योंकि उनमें से कई लोगों से मैंने शादी करने से मना कर दिया था।"

वीरता बोला — "पर अब तो तुम मेरी पत्नी हो।"

वह स्त्री बोली — "हॉ, वहॉ जा कर तुम्हें जो कुछ करना है वह मैंने तुमको बता दिया। अब तुम जमीन पर लेट कर दो बार लुढ़क जाओ।"

वीरता उसकी ओर देख कर मुस्कुराया और जैसा उसकी पत्नी ने कहा था उसने वैसा ही किया। जब वह दो बार लुढ़क कर खड़ा हुआ तो वह एक भैंस बन चुका था। उधर वह स्त्री भी दो बार लुढ़क कर भैंस बन चुकी थी।

अब वह स्त्री वीरता को पहाड़ की चोटी पर ले गयी और नीचे सैंकड़ों भैंसों को दिखा कर बोली — "देखो, ये सब मेरे आदमी हैं, और यह मेरा घर है।"

जब सबसे पास वाले भैंसों के झुंड ने उनको आते देखा तो वह वहीं खड़ा हो गया पर बाद में वे उस स्त्री के घर पहुँच गये। वहॉ वे दो महीने रहे। अक्सर कुछ भैंसे आ कर वीरता के गुस्से को जगाने की कोशिश करते परन्तु वीरता उनकी बात सुनी अनसुनी कर देता।

एक रात वह स्त्री बोली — "अब हम घर वापस जायेंगे।"

और वे दोनों पहाड़ी पर निकल गये और वहॉ आये जहॉ वे भैंसों में बदले थे। वहॉ आ कर वे जमीन पर फिर से दो बार लुढ़के और आदमी और स्त्री बन गये।

उस स्त्री ने फिर कहा — " याद रखना, इस जादू के बारे में तुम किसी को नहीं बताना नहीं तो हमारा बहुत नुकसान हो जायेगा।"

वे लोग वीरता के घर में फिर से एक साल रहे। एक साल बाद उस स्त्री ने कहा कि वह अपने माता पिता के घर फिर जाना चाहती है सो वे दोनों फिर से उस स्त्री के घर चले गये।

वहॉ जा कर उसने वीरता को बताया कि कुछ भैंसे उससे दौड़ का मुकाबला करना चाहते हैं और यदि उसने उनको न हराया तो वे उसको मार देंगे।

उस रात वीरता को नींद नहीं आयी। वह रात में घूमने निकल गया। वह अमावस्या की रात थी। कुछ भी दिखायी नहीं दे रहा था पर वह वहॉ चलती हुई हवा महसूस कर रहा था।

हवा उसके कानों में फुसफुसायी — "तुम अभी जवान हो, ताकतवर हो परन्तु मेरी सहायता के बिना तुम उन भैंसों को नहीं हरा सकते और अगर तुम हार गये तो वे तुम्हें मार डालेंगे और अगर तुम जीत गये तो फिर वे कभी तुमको दौड़ के लिये नहीं ललकारेंगे।"

वीरता ने पूछा — "पर मैं अपना जीवन और अपनी सुन्दर पत्नी को बचाने के लिये क्या करूँ?"

तब हवा ने वीरता को दो चीज़ें दीं – एक तो जादुई जड़ी बूटी और दूसरी जादू की मिट्टी, और बोली — "दौड़ में जब भैसें तुम्हारे पास आ जायें तो पहले तुम अपने पीछे की तरफ यह जड़ी बूटी फेंक देना और अगर वे दोबारा तुम्हारे पास तक आ जायें तो उनके ऊपर यह सूखी मिट्टी फेंक देना।"

वीरता वे दोनों चीज़ें ले कर घर वापस आ गया और सो गया। अगले दिन दौड़ शुरू हुई। पहले तो वीरता बड़ी तेज़ी से दौड़ा पर जल्दी ही दूसरे भैंसे उससे आगे निकलने लगे। उसने तुरन्त ही हवा की दी हुई जादू की जड़ी बूटी पीछे की तरफ फेंक दी।

इस समय उसे ऐसा लग रहा था कि जैसे वह बहुत थक गया था और अब और नहीं दौड़ सकता था।

उसने पीछे मुड़ कर देखा कि एक भैंसा अपना सिर पकड़े बड़ी तेज़ी से भागता चला आ रहा था। जैसे ही वह उसके पास तक आया वीरता ने तुरन्त ही वह जादुई मिट्टी भी पीछे की तरफ फेंक दी।

वह तुरन्त ही उन भैंसों से फिर से काफी आगे निकल गया परन्तु हवा की दी हुई दोनों ही चीज़ें उसने खर्च कर डाली थीं। वह अपनी दौड़ खत्म होने वाली लाइन के पास पहुँचने ही वाला था कि उसने उन भैंसों के पैरों की आवाजें फिर से सुनी।

इसी समय उसके मुँह पर हवा का एक तेज झोंका लगा जिससे बहुत सारी धूल उड़ी और उस धूल की वजह से पीछे वाले भैंसें पीछे ही रह गये और वीरता ने वह दौड़ जीत ली।

उसके बाद किसी ने उसको कुछ नहीं कहा और वीरता और उसकी पत्नी दोनों वहाँ आराम से रहे। कुछ दिन उस स्त्री के घर रहने के बाद वे दोनों फिर से वीरता के घर आ गये।

वहॉ आ कर उस स्त्री ने एक सुन्दर पुत्र को जन्म दिया। उन्होंने उसका नाम भैंस लड़का[73] रख दिया।

एक दिन जब वह स्त्री खाना बना रही थी तो वह लड़का बाहर खेलने गया हुआ था। वहॉ उसने अपने साथियों के साथ बहुत सारे खेल खेले और फिर एक ऐसा खेल खेला जिसमें वे सब भैंस बने।

उनमें से कुछ बच्चे भैंसों की तरह जमीन पर लुढ़के भी। पर क्योंकि वे सामान्य बच्चे थे और वे तो केवल नकल कर रहे थे सो उनको तो कुछ नहीं हुआ। पर जब वह भैंस लड़का लुढ़का और वह लड़का दो बार लुढ़का तो वह असली भैंस का बच्चा बन गया।

दूसरे बच्चे यह देख कर डर गये और अपने अपने घरों को भाग गये।

इसी समय उस भैंस लड़के की मॉ उसे ढूँढती हुई आ गयी तो उसने देखा कि दूसरे बच्चे अपने अपने घरों की तरफ भागे जा रहे हैं तो वह समझ गयी कि जरूर कुछ गड़बड़ है।

तभी उसको अपना बेटा भैंस की शक्ल में दिखायी दिया। उसको गोद में उठा कर वह भी वहॉ से भाग ली। कुछ दूर जा कर उसने अपने आपको भी भैंस में बदल लिया और पश्चिम की तरफ चल दी।

शाम को वीरता जब घर वापस आया तो न तो उसे अपनी पत्नी दिखायी दी और न ही अपना बेटा। बाहर बच्चों से पूछने पर

[73] Buffalo Boy

पता चला कि वे भैंसों का एक खेल खेल रहे थे और जादू से उस का बेटा भैंस बन गया।

पहले तो वीरता को इस बात पर विश्वास ही नहीं हुआ पर बाद में उसको ध्यान आया कि वह ज़रूर ही दो बार ज़मीन पर लुढ़क गया होगा और भैंस बन गया होगा।

तब उसको लगा कि वह सब तो सच हो सकता था। उसने उन दोनों को ढूँढने की बहुत कोशिश की परन्तु वे दोनों उसको फिर कभी नहीं मिले।

16 दादी मकड़ी[74]

बहुत दिनों पहले की बात है जब तक भगवान ने धरती और आसमान को अलग नहीं किया था। वे दोनों बहुत पास थे। इतने पास कि आसमान करीब करीब धरती पर ही बैठा रहता था।

चिड़ियें धरती के पास उड़ा करती थीं और जानवर जो धरती पर चलते और दौड़ते थे उनको ऐसा लगता था जैसे कि वे उड़ रहे हों।

ऐसे समय में एक सुबह एक बारहसिंगा[75] एक झील पर पानी पी रहा था कि उसने उस झील के पानी में आसमान की परछाईं देखी। उसको वह परछाईं कुछ अजीब सी लगी सो उसने सिर उठा कर ऊपर हवा में देखा।

उसने देखा कि आसमान तो चल रहा था और वह धरती से दूर उठता जा रहा था। बारहसिंगे ने सोचा — "यह क्या हो रहा है। मैं ऐसा नहीं होने दे सकता। मैं इस आसमान को यहीं रोक कर रखूँगा।"

---

[74] Grandmother Spider – a story from Hopi Native Americans, North America.
translated from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=100
Adapted, retold and written by Mike Lockett.

[75] Translated for the word "Moose" – Moose is a kind of deer with fork like horns. See its picture above.

और उसने आसमान को रोकने के लिये अपने सींग आसमान की तली में घुसा दिये और आसमान को धरती के पास रखने की अपनी भरपूर कोशिश की।

इस काम के लिये उसने और जानवरों को भी अपनी सहायता के लिये बुला लिया पर आसमान तो ऊपर उठता ही रहा और जल्दी ही वह बारहसिंगा भी आसमान के साथ साथ ऊपर उठने लगा।

जैसे ही वह ऊपर उठने लगा तो वह डर गया और डर के मारे उसने अपने सींग आसमान से खींच लिये तो वह एक ज़ोर की आवाज के साथ जमीन पर गिर पड़ा और चीख पड़ा।

एक भालू ने उसकी चीख सुनी तो वह भागा भागा वहॉ आया जहॉ वह बारहसिंगा गिरा था। वहॉ आ कर उसने देखा कि आसमान तो ऊपर उठ रहा है और बारहसिंगा नीचे गिरा पड़ा है।

उसने भी कहा — "मैं ऐसा नहीं होने दे सकता। मैं इस आसमान को यहीं रोक कर रखूँगा।"

सो वह भी ऊपर कूदा और उसने भी आसमान को नीचे लाने के लिये अपने पंजे आसमान की तली में गड़ा दिये। पर आसमान तो ऊँचा और और ऊँचा उठता ही जा रहा था।

जल्दी ही भालू भी आसमान के साथ साथ ऊपर उठने लगा। पर कुछ देर बाद डर के मारे उसने भी अपने पंजे आसमान से खींच लिये तो वह भी एक ज़ोर के धमाके के साथ जमीन पर गिर पड़ा और चीख पड़ा।

भालू की चीख सुन कर और जानवर भी वहॉ आ गये। उन्होंने भी देखा कि आसमान धरती से ऊपर उठता जा रहा है। सो वे भी ऊपर की तरफ कूदे और उन्होंने भी उसको पकड़ कर नीचे रखने की कोशिश की पर कुछ काम नहीं बना।

अब वे सब आपस में बात करने लगे कि इस बारे में क्या करना चाहिये। जब वे कुछ करने के बारे में सोच रहे थे तो एक दादी मकड़ी आयी और बोली — "मेरी समझ में एक बात आती है।"

जानवर बोले — "दादी मकड़ी, यह बहुत ही गम्भीर मामला है। यह तुम्हारे लिये बहुत बड़ा है। यहॉ तक कि बड़ा बारहसिंगा और भालू भी आसमान को नीचे नहीं खींच पाये और वे तो तुमसे बहुत ज़्यादा ताकतवर हैं।"

दादी मकड़ी बोली — "पर तुम देखना कि मेरी तरकीब जरूर काम करेगी।"

जानवर बोले — "हमारे पास ज़्यादा समय नहीं है। यह आसमान तो ऊपर उठता ही जा रहा है। जो कुछ भी करना है हमें जल्दी ही करना है।"

दादी मकड़ी भी परेशान थी पर यह सोच कर वह और भी ज़्यादा परेशान थी कि सारे जानवर परेशान थे।

अपनी तरकीब के अनुसार वह गॉव से बाहर की तरफ भागी और फिर एक पहाड़ी की तरफ चली गयी। वहॉ वह उस पहाड़ी

पर चढ़ कर एक लम्बा सा धागा बुनने लगी। वह वह धागा बुनती रही, बुनती रही, बुनती रही।

फिर उसने उस धागे का एक जाला बना दिया। जब वह जाला बना चुकी तो उसने उसकी एक गेंद बना दी। फिर उस जाले की गेंद के जाले का एक सिरा एक पेड़ से बॉध दिया और वह गेंद आसमान की तरफ फेंक दी।

गेंद कुछ दूर तक तो ऊपर गयी पर फिर नीचे गिर पड़ी और खुल गयी। दादी मकड़ी आसमान नहीं पकड़ सकी। वह बेचारी दौड़ी और दौड़ कर अपना सारा जाला इकट्ठा किया और फिर एक बार उस गेंद को आसमान की तरफ फेंका। पर वह दोबारा भी नीचे गिर गयी और गिर कर खुल गयी।

दादी मकड़ी फिर दौड़ी और फिर अपना सारा जाला इकट्ठा किया और तीसरी बार फिर उस गेंद को आसमान की तरफ फेंका। इस बार उसकी गेंद ने आसमान का सिरा पकड़ लिया और वह आसमान में जा कर चिपक गयी।

दादी मकड़ी जितनी जल्दी उस धागे पर चढ़ सकती थी चढ़ गयी और आसमान को भी पार कर गयी। फिर उसने उस गेंद का दूसरा सिरा आसमान के ऊपर बॉध दिया और धरती पर कूद पड़ी।

जैसे ही वह आसमान से जमीन पर कूदी उसने आसमान से ही एक दूसरा जाला बुनना शुरू कर दिया और उसे वह तब तक बुनती रही जब तक वह जमीन पर नहीं आ गयी।

उसने वह धागा जमीन से चिपकाया और फिर वह पहले धागे के सहारे ऊपर चढ़ गयी। उसके सिरे को फिर आसमान से चिपकाया और फिर जाला बुनती हुई नीचे उतरी। ऐसा उसने कई बार किया।

सारा दिन और सारी रात वह यही करती रही – जमीन से आसमान तक और आसमान से जमीन तक जाला बुनती रही।

अगले दिन आसमान दादी मकड़ी के जाले को जो अभी भी धरती से चिपका हुआ था साथ लिये इतना ऊपर चला गया जितना ऊपर वह जा सकता था।

वहॉ पहुँच कर उसने आखिरी बार एक बार फिर से अपने आपको धरती से ऊपर खींचने की कोशिश की पर उससे ऊपर वह अपने आपको नहीं खींच सका।

यह देख कर जानवरों ने बात करना बन्द कर दिया और ऊपर आसमान की तरफ देखना शुरू किया तो उन्होंने देखा कि दादी मकड़ी का जाला अभी भी जमीन से चिपका हुआ है और आसमान उसके ऊपर नहीं जा पा रहा है।

यह देख कर वे सब जानवर दादी मकड़ी के पास दौड़े गये और बोले — "हमको अफसोस है दादी मकड़ी कि हमने आपकी तरकीब को पहले नहीं सुना। और इसका और भी ज़्यादा अफसोस है कि हमने आपसे यह कहा कि हमारे पास ज़्यादा समय नहीं है।

आपका बहुत बहुत धन्यवाद कि आपने आसमान को धरती से ऊपर जाने से रोक लिया। क्योंकि आपने हमारे लिये यह आश्चर्यजनक काम किया है इसलिये आप और आपके बच्चे हमेशा हमेशा के लिये हमारे घरों में रह सकते हैं।

उस दिन के बाद से मकड़े सब आदमियों और जानवरों के घरों में रहते पाये जाते हैं। चाहे सारे आदमी इतने साल पहले मकड़ी से किया गया वायदा भूल गये हों पर मकड़े मकड़ियॉ वह वायदा नहीं भूले।

आज भी अगर तुम सुबह बहुत सवेरे आसमान की तरफ देखो तो तुमको मकड़े आसमान से अपने जाले से लटकते हुए दिखायी देंगे। कुछ लोग उसको सूरज की किरन कहते हैं पर अब तुमको ज़्यादा अच्छी तरह से मालूम है कि वह क्या है।

17 कौवी और बाज[76]

अमेरिकन इन्डियन्स की सबसे प्रिय कहानियों में हैं जानवरों की कहानियॉ। उनमें जानवरों की कुछ ऐसी कहानियॉ भी हैं जिनमें कमजोर जानवर अपने से अधिक ताकतवर और चालाक जानवर को बेवकूफ बना देता है।

कुछ तो उनमें हॅसी की कहानियॉ हैं जिनमें मुकाबला है और कुछ में मेहनत और न्याय का इनाम दिखाया गया है, जैसे यह कोचिटी कौवी और बाज़ की कहानी। तो लो पढ़ो यह कोचिटी कौवी और बाज़ की कहानी।

एक बार कोचिटी कौवी[77] ने अपने घोंसले में दो अंडे दिये। एक दो दिन तो वह कौवी अपने अंडों पर बैठी पर फिर वह थक गयी तो वह अपने लिये खाना ढूॅढने चली गयी। दिन पर दिन गुजरते चले गये पर कौवी नहीं लौटी।

इधर एक दिन एक मादा बाज़[78] ने देखा कि एक घोंसले में दो अंडे लावारिस से पड़े हैं उनको कोई भी नहीं से रहा है।

तो एक दिन उस मादा बाज ने सोचा कि जिस कौवी का यह घोंसला है उसे तो इन अंडों की बिल्कुल भी चिन्ता नहीं है पर इन

[76] Crow and Hawk – a folktale from Native Americans, America, North America

[77] Kochiti female crow

[78] Translated for the word “Hawk” – see its picture above.

अंडों को किसी को तो सेना ही चाहिये तो चलो मैं ही इन अंडों पर बैठती हूँ। जब इनमें से बच्चे निकलेंगे तो ये बच्चे मेरे हो जायेंगे।

सो वह मादा बाज़ बहुत दिनों तक उन अंडों पर बैठती रही पर कौवी का अभी भी कहीं पता नहीं था। अंडों में से बच्चे भी निकल आये पर कौवी फिर भी नहीं लौटी।

मादा बाज उन बच्चों को खाना खिलाती रही, पालती रही, उड़ना सिखाती रही पर कौवी फिर भी नहीं लौटी।

जब कौवी को अपने बच्चों का ध्यान आया तो वह वापस अपने घोंसले में आयी। उसने देखा कि उसके अंडों में से बच्चे निकल आये हैं और एक मादा बाज़ उनकी देखभाल कर रही है।

जब कौवी ने अपने बच्चों को देखा तो उस समय वह मादा बाज़ उनको खाना खिला रही थी। कौवी आ कर ज़ोर से बोली — "तुम क्या समझती हो कि तुम यह क्या कर रही हो?"

मादा बाज़ बोली — "मैं इसमें कोई गलत काम तो नहीं कर रही हूँ।"

कौवी बोली — "तुमको मेरे ये बच्चे मुझे वापस कर देने चाहिये।"

मादा बाज ने पूछा — "क्यों?"

तो कौवी बोली — "क्योंकि ये बच्चे मेरे हैं इसलिये।"

मादा बाज़ ने कहा — "तुमने तो केवल अंडे दिये हैं पर तुमने उनको सेया कभी भी नहीं। तुम तो उनको छोड़ कर चली गयीं। उनको सेने वाला तो यहॉ कोई था ही नहीं।

मैं आयी और मैंने उनको सेया, मैंने उनको खाना खिलाया, मैंने उनको उड़ना सिखाया। अब वे बच्चे मेरे हैं मैं उनको तुम्हें वापस नहीं करूँगी।"

कौवी गुस्से में बोली — "मैं उनको वापस ले कर रहूँगी।"

मादा बाज बोली — "मैंने उनके साथ बहुत मेहनत की है। तुम तो अंडे देने के बाद ही उनको छोड़ कर चली गयी थीं। आज जब मैंने उनको पाल पोस कर बड़ा कर दिया है तो तुम इनको मुझसे क्यों वापस लेना चाहती हो?"

इस पर कौवी ने बच्चों की तरफ देखते हुए कहा — "मेरे बच्चों, आओ मेरे साथ आओ। मैं तुम्हारी मॉ हूँ।"

बच्चे बोले — "हम तुम्हें नहीं जानते। यह मादा बाज़ ही हमारी मॉ है। हम तुम्हारे साथ नहीं जायेंगे।"

कौवी ने जब देखा कि वह अपने बच्चों को अपने साथ नहीं ले जा पा रही है तो बोली — "कोई बात नहीं है मैं यह मामला गरुड़[79] के पास ले कर जाती हूँ। वही चिड़ियों का राजा है वही इस मामले का फैसला करेगा।"

[79] Translated for the word "Eagle". See its picture above.

मादा बाज़ बोली — "मुझे कोई ऐतराज नहीं है। तुम जिसके पास भी जाना चाहो जा सकती हो।"

सो दोनों चिड़ियें गरुड़ के पास गयीं।

कौवी पहले बोली — "मैं जब अपने घोंसले में वापस आयी तो मैंने देखा कि मेरे अंडों में से बच्चे निकल चुके हैं और यह मादा बाज़ मेरे बच्चों की देखभाल कर रही है। ओ गरुड़, मैं आपके पास यह कहने आयी हूँ कि यह मादा बाज़ मेरे बच्चों को वापस कर दे।"

गरुड़ ने कौवी से पूछा — "पर तुमने अपना घोंसला छोड़ा ही क्यों था?"

इस बात का कौवी के पास कोई जवाब नहीं था सो वह चुप रही और उसका सिर झुक गया।

गरुड़ बोला — "कोई बात नहीं। हॉ मादा बाज़, अब तुम बताओ कि तुमको यह घोंसला मिला कैसे?"

मादा बाज़ बोली — "मैं कौवी के घोंसले की तरफ से रोज गुजरती थी पर मैंने उस घोंसले में कभी किसी को नहीं देखा। बस केवल दो अंडे रखे थे उसमें।

कई दिनों तक कोई आया भी नहीं तो मैंने सोचा कि जिस मॉ ने इस घोंसले को बनाया उसको शायद इन अंडों की चिन्ता नहीं है। मैं ही इन अंडों को से देती हूँ सो मैंने उन अंडों को सेया और बच्चों के पैदा होने पर उनकी देखभाल की।"

कौवी बीच में ही बोली — "पर वे बच्चे मेरे हैं।"

गरुड़ ने कौवी को घूरा और बोला — "बीच में नहीं बोलो कौवी, जब तुम्हारी बारी आये तब बोलना।"

फिर वह मादा बाज़ से बोला — "और कुछ कहना है तुमको, मादा बाज़?"

मादा बाज बोली — "अब जब ये बच्चे बड़े हो गये हैं तब यह कौवी कह रही है कि ये बच्चे उसके हैं। मैंने उन अंडों को सेया, मैंने उन बच्चों को खाना खिलाया, मैंने उनका घोंसला गर्म रखा, उनको उड़ना सिखाया। मैं अब इन बच्चों को नहीं छोड़ सकती।"

गरुड़ मुँह ही मुँह में बोला — "ऐसा लगता है कि यह मादा बाज इन बच्चों को छोड़ने वाली नहीं है। अगर ये बच्चे कौवी के हैं तो उसने अपना घोंसला छोड़ा ही क्यों और अगर छोड़ा भी तो फिर वह इतने दिनों तक वापस क्यों नहीं आयी।

इस सबसे ऐसा लगता है कि यह मादा बाज़ ही इन बच्चों की सच्ची माँ है इसलिये ये बच्चे उसी को मिलने चाहिये।"

कौवी ने जब यह सुना तो वह गरुड़ से बोली — "आप ऐसा कैसे सोच सकते हैं कि ये बच्चे मादा बाज़ के हैं? आप बच्चों से क्यों नहीं पूछते कि वे किसके पास रहना चाहते हैं? अब वे इतने बड़े हैं कि वे जानते हैं कि वे कौए हैं बाज़ नहीं।"

गरुड़ ने हॉ में अपना सिर हिलाया — "यह तो तुम ठीक कहती हो।"

और फिर बच्चों से पूछा — "तुम लोग किस मॉ के साथ रहना चाहोगे, कौवी के साथ या मादा बाज़ के साथ?"

दोनों छोटे कौए बोले — "हम तो मादा बाज़ को ही अपनी मॉ जानते हैं और किसी को नहीं।"

कौवी चिल्लायी — "नहीं, तुम मेरे बच्चे हो।"

बच्चे बोले — "तुमने तो हमें जन्म लेने से पहले ही छोड़ दिया था। मादा बाज़ ने हमारी सारी देखभाल की, अब वही हमारी मॉ है।"

गरुड़ बोला — "बस अब यह मामला तय हो गया। बच्चों ने अपनी मॉ चुन ली है।"

कौवी रोने लगी तो मादा बाज़ बोली — "अब रोने से क्या फायदा। तुमने तो कभी अपने बच्चों को देखा ही नहीं। अब ये बच्चे तुम्हारे कैसे हो गये।"

और बच्चे मादा बाज़ के साथ चले गये।

18 बादल आसमान में क्यों रहते हैं[80]

बहुत दिनों पहले दुनियॉ बनाने वाले ने दुनियॉ और उसमें हर चीज़ बनायी। उसने धरती और आसमान पास पास बनाये और धरती के रहने वालों के लिये आसमान में खाना रख दिया।

लोगों को यह तरीका अच्छा लगता था क्योंकि उनको खाना पाने के लिये काम नहीं करना पड़ता था। जब भी उनको खाने की जरूरत पड़ती वे आसमान की तरफ हाथ बढ़ाते और आसमान में से ही खाना ले लेते।

अपनी उॅगली उठाते, हवा में उससे गोला बनाते, फिर उसके अन्दर एक और गोला बनाते और वह डोनट[81] बन जाता। बीच में उसे दबाते और खाने का बहाना करते तो उनका पेट भर जाता।

सफेद बादलों के कुछ टुकड़े लेते, उनको छोटे छोटे टुकड़ों में काट लेते। उनको उबाल लेते और वह चावल बन जाता। हवा में एक छोटा गोला बनाते, उसको दो हिस्सों में काटते, हाथ से उनमें छेद करते तो वे छेद कई रंगों के बीजों से भर जाते।

---

[80] Why Clouds Are in the Sky? – a story from Hopi Native Americans, North America.
Translated from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=128
Adapted, retold and written by Mike Lockett.

[81] Donut – a kind of very popular American food. See its picture above.

उसका आधा हिस्सा वे खाते तो वह तरबूज[82] बन जाता। बीज तो उसमें से उनको थूकने ही पड़ते थे।

पर उस समय लोगों को खाने का बहाना नहीं बनाना पड़ता था। वे आसमान के खाने से ही डोनट बना लेते थे, उसे खाते थे और उनका पेट भर जाता था।

लोगों को खाने के लिये काम भी नहीं करना पड़ता था। जब वे सुबह उठते तो कम से कम खाने के लिये कोई काम नहीं करते थे, बस हाथ बढ़ा कर आसमान से खाना लेते थे और नाश्ता कर लेते थे।

हवा में गोला बनाते, ज़रा सी धूप उसके अन्दर रखते तो वह स्वादिष्ट अंडा बन जाता। उस बादल को आसमान से उठाते जिसमें धूप की चमकीली नारंगी किरनें निकल रही होतीं, उनको गिलास में निचोड़ते और वह सन्तरे का मीठा रस बन जाता।

आसमान का खाना खाने के लिये उनको केवल अपना दिमाग ही इस्तेमाल करना होता था, बस।

पर खाना क्योंकि मुफ्त मिलता था इसलिये लोग उसको बर्बाद बहुत करते थे। वे जरूरत से ज़्यादा खाना ले लेते और बचा हुआ खाना जमीन पर फेंक देते।

[82] Translated for the word “Watermelon”. See its picture above.

आसमान के खाने के बहुत बड़े बड़े टुकड़े बर्बाद होते और इस तरह से दुनियॉ बनाने वाले की सुन्दर दुनियॉ कूड़े कबाड़ से भरती जा रही थी।

इससे दुनियॉ बनाने वाला नाराज हो गया और उसने लोगों का ध्यान खींचने के लिये सारे आसमान में बिजली की कड़क लुढ़का दी।

वह बोला — "अपनी भूख से ज़्यादा खाना मत लो। अगर तुम मेरा दिया हुआ खाना इसी तरह से बर्बाद करते रहे तो मैं अपना खाना और आसमान दोनों बहुत ऊपर पहुँचा दूँगा जहॉ से फिर तुम खाने को इतनी आसानी से नहीं ले पाओगे।"

कुछ दिनों तक तो लोगों ने सुना और केवल उतना ही खाना लिया जितने की उनको जरूरत थी पर जल्दी ही वे अपनी पुरानी आदतों पर आ गये और खाना फिर से बर्बाद करने लगे।

वे आसमान का एक हिस्सा तोड़ते, उसमें से जितनी उनकी इच्छा होती खाते और जब कोई नहीं देख रहा होता तो उसे फेंक देते। दुनियॉ के लोग तो यह देख नहीं रहे होते थे पर दुनियॉ बनाने वाला तो सब देख रहा था।

कुछ दिनों बाद उसने फिर से सारे आसमान में बिजली की कड़क लुढ़का कर लोगों का ध्यान अपनी तरफ खींचा और बोला — "यह मेरी तुमको आखिरी चेतावनी है कि तुम आसमान से खाना ले सकते हो पर उतना ही लो जितना खा सको।

खाना खाओ मगर खाना बर्बाद मत करो। अगर तुम खाना जमीन पर गिराओगे तो मैं आसमान और बादल बहुत ऊपर खिसका दूँगा ताकि तुम फिर वहाँ कभी न पहुँच सको। फिर तुमको खाने के लिये काम करना पड़ेगा।"

सबने उसकी बात फिर से सुनी। काफी दिनों तक उन्होंने दुनियाँ बनाने वाले की बात मानी भी। अगर कभी उन्होंने गलती से ज़्यादा खाना आसमान से ले भी लिया तो उसको बाँट कर खाया। उन्होंने आसमान का खाना बर्बाद नहीं किया।

और तब एक दिन एक लापरवाह आदमी ने जरूरत से ज़्यादा खाना ले लिया। कोई नहीं जानता कि वह आदमी कौन था और फिर उसने बचा हुआ खाना जमीन पर फेंक दिया।

दुनियाँ बनाने वाले ने यह देखा और फिर से बिजली की कड़क आसमान में लुढ़कायी और लोगों से बोला — "मैंने तुमसे कहा था कि अगर तुमने खाना बर्बाद किया तो क्या होगा। तुम फिर से आसमान से खाना नहीं खा पाओगे और तुमको खाना लेने के लिये काम करना पड़ेगा।"

बस उसका यह कहना था कि आसमान और बादल जमीन से ऊपर उठने लगे और फिर उसके बाद कोई आदमी उन तक नहीं पहुँच सका।

लोगों को खाने के लिये काम करना शुरू करना पड़ गया। कुछ लोग खाना इकट्ठा करने वाले बन गये। वे जंगली गिरियॉ[83], बेर[84], जड़ें, फल आदि इकट्ठा करते जो दुनियॉ में उगते थे।

कुछ दूसरे लोगों ने बीज बो कर अन्न उगाना शुरू कर दिया। वे रोटी बनाने के लिये गेंहू उगाते और बहुत सारे तरीके की सब्जियॉ उगाते।

कुछ लोग शिकारी बन गये। वे जंगली जानवरों का शिकार करते जैसे खरगोश, हिरन, चिड़ियें आदि। कुछ ने जानवर पालने शुरू कर दिये जैसे गाय, बकरियॉ, भेड़, मुर्गियॉ आदि और कुछ ने समुद्री जानवर जैसे मछलियॉ केंकड़े आदि पकड़ने शुरू कर दिये।

कुछ मकान बनाने वाले, गाने नाचने वाले बन गये। ये लोग दूसरों के लिये काम करते थे और फिर दूसरों से खाना लेते थे।

और इस तरीके से उन्होंने अपना खाना आसानी से लेने का तरीका उसको बर्बाद कर कर के खो दिया।

[83] Nuts. See its picture above.

[84] Berries – Berries are wild fruits with or without stones, such as straw berries, black berries, blue berries etc. See their picture above.

19 चॉद वाले आदमी ने क्या किया[85]

यह बहुत पुरानी बात है कि एस्किमो जाति का कहीं एक छोटा सा गरीब लावारिस लड़का रहता था। न तो उसका कोई घर था और न ही कोई उसकी देखभाल करने वाला था। यहॉ तक कि गॉव वाले भी उसकी कोई देखभाल नहीं करते थे।

उसको किसी भी झोंपड़ी में सोने नहीं दिया जाता था पर एक परिवार ने उसको ठंडी रातों में अपनी झोंपड़ी के बाहर के रास्ते पर सोने की इजाज़त दे रखी थी जहॉ उसके कुत्ते रहते थे। वहीं उसका बिछौना थे और वहीं उसकी रजाई।

खाने के लिये वे उसको कोई अच्छा मॉस भी नहीं देते थे बल्कि मछली की सूखी खाल देते थे जैसे वे कुत्तों को देते थे। उसको वह सूखी खाल वैसे ही खानी पड़ती थी जैसे कि वे कुत्ते खाते थे क्योंकि उसके पास कोई चाकू नहीं था।

वहॉ केवल एक ही आदमी था जो उस पर तरस खाता था। और वह थी एक छोटी लड़की। उसने उसको लोहे का एक छोटा सा टुकड़ा ला कर दे दिया था जो उसके लिये चाकू का काम करता। वह उसी से उस सूखे मॉस को काट लेता था।

---

[85] What the Man in the Moon Did – a folktale from Eskimos, Native Americans, North America. Translated from the Book : "Treasury of Eskimo Tales", by Clara Kern Bayliss. Thomas Y Crowell Company. 1922. 31 stories. Available at : http://www.worldoftales.com/Native_American_folktales/Eskimo_folktale_10.html .

उसने उससे कहा — "तुम इसको छिपा कर रखना नहीं तो गॉव के लोग तुमसे इसे छीन लेंगे।"

क्योंकि उसको ठीक से खाना नहीं मिलता था सो वह ठीक से बड़ा ही नहीं हो पा रहा था। वह बस बेचारा क़ज़ाक[86] ही रह गया और बहुत ही बुरी ज़िन्दगी बिता रहा था।

वह बेचारा दूसरे लड़कों के साथ खेल भी नहीं सकता था क्योंकि वे उसको "हड्डियों का छोटा थैला" कह कर पुकारते थे और हमेशा ही उसको कमजोर कहते रहते थे।

जब लोग गाने वाले घर में गाने के लिये इकट्ठा होते तो वह रास्ते में पड़ा रहता और उस घर की देहरी से अन्दर झॉकता रहता। कभी कभी कोई उसको उसकी नाक से पकड़ता और उसको घर के अन्दर ले जाता और उससे पानी का घड़ा उठवा लेता।

वह घड़ा इतना बड़ा और भारी होता कि उसको उसे दोनों हाथों से अपना सिर लगा कर पकड़ कर ले जाना पड़ता। क्योंकि लोग उसको नाक से पकड़ कर उठाते थे इसलिये उसकी नाक तो बहुत बड़ी हो गयी थी पर वह खुद बहुत ही छोटा और कमजोर ही रह गया था।

आखिर चॉद में बैठे आदमी ने जो सारे ऐस्किमो लावारिसों की देखभाल करता है देखा कि लोग क़ज़ाक़ के साथ किस बुरी तरह से

[86] Qjadjaq – name of the orphan boy

बरताव कर रहे थे। सो वह उसकी सहायता करने के लिये चॉद से नीचे उतरा।

उसने अपनी स्ले[87] में अपने ताकतवर कुत्ते जोते और नीचे आया। जब वह उसकी झोंपड़ी पास था तो उसने अपने कुत्तों को रोका और पुकारा — "क़ज़ाक़ बाहर निकल कर आओ।"

लड़के ने सोचा कि यह आदमी भी उसके साथ कोई चाल खेलने के लिये आया है सो वह बोला — "मैं बाहर नहीं आता तुम यहॉ से चले जाओ।"

उस चॉद वाले आदमी ने फिर कहा — "क़ज़ाक़, मैं कहता हूॅ कि तुम बाहर निकल कर आओ।" अबकी बार क़ज़ाक़ को उसकी आवाज सामान्य लोगों से कुछ ज़्यादा मुलायम लगी।

पर फिर भी वह लड़का थोड़ा हिचकिचा रहा था सो बोला — "तुम मुझे गिरफ्तार कर लोगे।"

चॉद वाला आदमी बोला — "नहीं मैं तुमको कोई नुकसान नहीं पहुॅचाऊॅगा। तुम बाहर तो आओ।"

तब क़ज़ाक़ धीरे धीरे बाहर आया। पर जब उसने देखा कि वहॉ कौन खड़ा था तब तो अगर वह वहॉ कोई आदमी खड़ा होता और वह उससे डरता तो वह तो उससे भी ज़्यादा डर गया।

[87] Sleigh is a wheelless vehicle which can slide on the ice drawn by 2-4 powerful horses or dogs in Arctic region. See its picture above.

चॉद वाला आदमी उसको एक ऐसी जगह ले गया जहॉ बहुत सारे बड़े बड़े पत्थर पड़े हुए थे। उसने क़ज़ाक़ को एक पत्थर पर लेट जाने के लिये कहा। क़ज़ाक़ तो डर के मारे उसको ना भी नहीं कह सका। वह तुरन्त ही उस पत्थर पर लेट गया।

तब उस चॉद वाले आदमी ने चॉद की एक लम्बी किरण ली और उससे उसको बहुत धीरे से मारा और पूछा — "क्या तुम अपने आपको ज़्यादा ताकतवर महसूस कर रहे हो?"

लड़का बोला — "हॉ थोड़ा सा ज़्यादा ताकतवर महसूस तो कर रहा हूँ।"

"तब एक पत्थर उठाओ।"

पर क़ज़ाक़ उस पत्थर को उठा नहीं सका सो चॉद आदमी ने उसको फिर से एक बार अपनी किरन से मारा और उससे फिर एक बार पूछा — "क्या तुम अब अपने आपको पहले से ज़्यादा ताकतवर महसूस कर रहे हो?"

"हॉ कर तो रहा हूँ।"

"तो उठाओ यह पत्थर।"

पर क़ज़ाक़ वह पत्थर भी जमीन से एक फुट से ज़्यादा ऊपर तक नहीं उठा सका।

सो चॉद आदमी ने उसको एक बार फिर मारा और फिर से पत्थर उठाने के लिये कहा। इस बार उसने वह पत्थर ऐसे उठा लिया जैसे वह कोई पत्थर की कंकरी हो।

चॉद वाले आदमी ने कहा "अब ठीक है। चॉद की किरनें भी अब तुमको ताकत देंगी। कल सुबह मैं तुम्हारे पास तीन भालू भेजूँगा तब तुम अपने गॉव वालों को दिखाना कि तुम्हारे पास कितनी ताकत है।"

यह कह कर वह चॉद वाला आदमी अपनी स्ले में बैठ गया और अपने घर चला गया।

अब हर बार जब भी चॉद की कोई किरण क़ज़ाक़ के शरीर को छूती तो उसको लगता कि वह बढ़ रहा है। सबसे पहले उसकी टॉगें बढ़नी शुरू हुईं जो जल्दी ही बहुत बड़ी हो गयीं।

और जब वह चॉद वाला आदमी वहॉ से गया तब तक तो वह पूरे साइज़ का आदमी बन चुका था।

अगली सुबह वह उस आदमी के भेजे हुए तीन भालुओं का इन्तजार करता रहा। कुछ ही देर में सचमुच में ही तीन भालू वहॉ आ पहुँचे।

वे तीनों भालू गुर्रा रहे थे और इतने भयानक लग रहे थे कि गॉव के लोग तो उनको देख कर ही डर गये और अपने अपने घरों में घुस कर उनके दरवाजे बन्द कर लिये।

पर क़ज़ाक़ ने अपने जूते पहने और बर्फ की तरफ भागा जहॉ भालू खड़े हुए थे। गॉव के लोगों ने अपने अपने घर की खिड़कियों से झॉका तो आश्चर्य से उनके मुँह से निकला — "अरे क्या यह

क़ज़ाक़ है? यह यह क्या कर रहा है? ये भालू तो इस बेवकूफ को तुरन्त ही खा जायेंगे।"

पर दूसरे ही पल तो वे सब और आश्चर्यचकित रह गये जब उन्होंने देखा कि क़ज़ाक़ ने एक भालू को पीछे के पैरों से पकड़ा और उसके सिर को उसके पास पड़े एक बर्फ के टुकड़े पर मसल दिया। दूसरे की भी उसने वही हालत की।

पर तीसरे भालू को तो उसने अपने हाथों में उठाया और गॉव की तरफ ले चला। वहॉ जा कर उसने उसे उन गॉव वालों को खाने के लिये छोड़ दिया जो उसका अपमान करते थे।

वह बोला — "यह मुझे गालियॉ देने के लिये और मेरे साथ बुरा बर्ताव करने के लिये है।"

उन गॉव वालों में से कुछ को तो वह भालू खा गया और जो बच गये वे वहॉ से भाग गये। जिन्होंने क़ज़ाक़ को जब वह बच्चा था तंग नहीं किया था उसने उनको छोड़ दिया।

इन छोड़े हुओं में वह लड़की भी थी जिसने उसको चाकू दिया था। बाद में उसने उससे शादी कर ली और खुशी खुशी रहने लगा।

20 चॉद की यात्रा[88]

एक बार की बात है कि एक जगह एक बहुत ही ताकतवर जादूगर रहता था। उसका निशान[89] भालू था। एक दिन उसने सोचा कि उसको चॉद पर जाना चाहिये।

सो पहले तो उसने अपने हाथ बॉध लिये और फिर एक रस्सी से अपने घुटने और गर्दन भी बॉध ली। फिर वह अपनी पीठ रोशनी की तरफ कर के अपनी झोंपड़ी के पीछे बैठ गया और उसके बाद उसने रोशनी भी बुझा दी।

फिर उसने अपने निशान को बुलाया तो भालू वहॉ तुरन्त ही आ पहुॅचा। वह भालू की पीठ पर चढ़ गया और भालू उसको ले कर ऊपर चढ़ने लगा, गॉव के ऊपर, पहाड़ों के ऊपर। वह ऊपर और ऊपर चढ़ता ही गया जब तक वह चॉद पर नहीं पहुॅच गये।

उनको यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि चॉद तो एक घर था जो बहुत सुन्दर सफेद हिरन की खालों से ढका हुआ था। अब क्योंकि सफेद हिरन तो बहुत ही अजीब और पवित्र माने जाते थे

---

[88] Flight to the Moon – a folktale from from Eskimos, Native Americans, North America. Translated rom the Book : "Treasury of Eskimo Tales", by Clara Kern Bayliss. Thomas Y Crowell Company. 1922. 31 stories. Available at : http://www.worldoftales.com/Native_American_folktales/Eskimo_folktale_9.html

[89] Translated for the word "Mascot". Mascot is an animal man whose quality a group or a person wants to have.

और वे लम्बे सफेद अंडों से उनको मिट्टी में काफी देर तक दबा कर रखने के बाद ही पैदा होते थे।

असल में वहॉ सफेद हिरनों, सफेद भैंसों और सब रंगहीन जानवरों[90] में कुछ रहस्य और जादू था। चॉद वाले आदमी ने इन हिरनों की खाल को सुखा लिया था और अपने घर के ऊपर बॉध लिया था जो कि चॉद जैसा दिखायी देता था।

चॉद के घर के दरवाजे के दोनों तरफ वालरस[91] के बहुत बड़े बड़े सिर लगे हुए थे। और वे ज़िन्दा थे और जादूगर को फाड़ डालने की धमकी दे रहे थे।

पर उस जादूगर ने अपने भालू को उनके ऊपर बहुत ज़ोर से गुर्राने के लिये कहा। भालू ने वैसा ही किया जैसा कि जादूगर ने उसको करने के लिये कहा था। इससे एक पल को तो वे वालरस डर गये और बस उसी पल में जादूगर चॉद के घर के अन्दर घुस गया।

चॉद अन्दर से ठंडा होना चाहिये था पर ऐसा था नहीं क्योंकि उसमें एक रास्ता था जो ठंड को बाहर ही रखता था जैसे ऐस्किमो लोगों के घरों में होता है।

[90] Translated for the word “Albino". Albino is he who does not have any pigmentation.

[91] Walrus – is a kind of animal. See its picture above.

इस रास्ते में एक लाल सफेद धब्बे वाला कुत्ता था। चॉद वाला आदमी बस यही एक कुत्ता रखता था। जादूगर इस कुत्ते को पार कर के अन्दर वाले कमरे में पहुँचा।

उस कमरे में उसने बॉये हाथ को एक दरवाजा देखा जो एक दूसरी इमारत में खुलता था। जादूगर ने देखा कि उसमें तो एक सुन्दर स्त्री बैठी हुई थी और उसके सामने एक लैम्प जल रहा था।

जैसे ही उसने एक अजनबी को देखा उसने अपने लैम्प की आग पर फूँक मारी जिससे कि उसकी आग भड़क उठी और वह उसकी भड़कती हुई लौ के पीछे छिप गयी।

पर जादूगर ने उसको तब तक काफी देख लिया था और वह जान गया था कि वह सूरज थी। चॉद वाला आदमी अपनी सीट पर से उठा और जादूगर से हाथ मिलाने के लिये आया और उसका स्वागत किया।

लैम्पों के पीछे सील मछली के मॉस का और दूसरे किस्म के मॉस का एक बहुत बड़ा ढेर रखा हुआ था पर चॉद वाले आदमी ने अपने मेहमान को उसमें से कुछ भी नहीं दिया।

यह ऐस्किमो और इन्डियन लोगों का अपने मेहमान के साथ बर्ताव करने का कोई रिवाज नहीं था। शायद चॉद वाले आदमी का अपने मेहमानों का स्वागत करने का यह कोई और ही तरीका था।

क्योंकि उसने तुरन्त ही कहा — "मेरी पत्नी उलुल[92] जल्दी ही यहॉ आने वाली है। फिर हम लोग नाचेंगे। ध्यान रखना कि हॅसना नहीं वरना वह अपने चाकू से तुम्हारे दो टुकड़े कर देगी और बाहर जो कुत्ता है उसको खिला देगी।"

जल्दी ही एक स्त्री एक कटोरा हाथ में लिये लौटी जिसमें उसका काटने वाला चाकू रखा हुआ था। उसने उस कटोरे को नीचे रखा, उसे लट्टू की तरह से घुमाया और आगे बढ़ कर नाचना शुरू कर दिया।

जब उसने अजनबी की तरफ अपनी पीठ की तो जादूगर ने देखा कि वह तो अन्दर से खोखली थी। उसकी तो पीठ ही नहीं थी, रीढ़ की हड्डी भी नहीं थी और अन्दर भी कुछ नहीं था सिवाय उसके फेंफड़ों और दिल के।

उसी समय उसके पति ने भी उसके साथ नाचना शुरू कर दिया। उन दोनों के नाचने का ढंग कुछ ऐसा था कि जादूगर अपनी हॅसी नहीं रोक सका।

वह यह नहीं चाहता था कि वह उनके साथ कोई बदतमीज़ी करे सो उसने अपना मुॅह दूसरी तरफ फेर कर खॉसने का बहाना किया।

खुशकिस्मती से जैसा उसने सोचा था तो वह तो बड़े ज़ोर से हॅस पड़ता पर उसको चॉद वाले आदमी का कहा याद आ गया और

[92] Ulul – wife of the Moon

वह बाहर चला गया। चॉद वाले आदमी को समझ में ही नहीं आया कि इसको क्या हो गया सो उसने उसको पीछे से पुकार कर कहा।

"अच्छा हो कि तुम अपने निशान सफेद भालू को बुला लो।"

उसने ऐसा ही किया और वहॉ से सही सलामत वापस लौट आया।

वह एक और दिन उस घर में फिर से गया और अपना चेहरा ठीक से रखने में सफल रहा। जब उन लोगों का नाच खत्म हो गया तो चॉद वाले आदमी ने उससे बहुत प्रेम से बातें की और उसको अपना पूरा घर दिखाया।

उसने जादूगर को अपने घर के दरवाजे के पास जो एक इमारत थी वह भी दिखायी। इस इमारत में बहुत सारे हिरन थे जो बहुत बड़े घास के मैदानों में चरते नजर आ रहे थे।

चॉद वाला आदमी बोला — "तुम इनमें से एक हिरन अपने घर के लिये ले सकते हो।"

जैसे ही उसने एक जानवर चुना तो वह एक छेद में से नीचे गिर पड़ा और जमीन पर जादूगर की झोंपड़ी पास आ कर खड़ा हो गया।

वहीं एक और इमारत में समुद्र में बहुत सारी सील तैर रही थीं। वहॉ भी उसको एक सील चुनने के लिये कहा गया। जब उसने उसमें से एक सील चुनी तो वह भी छेद में से नीचे गिर पड़ी और जमीन पर उसकी झोंपड़ी के पास ही गिर पड़ी।

चॉद वाला आदमी बोला — "जो कुछ मेरे पास था वह सब मैंने तुमको दिखा दिया अब तुम अपने घर जा सकते हो।"

जादूगर ने अपने निशान को बुलाया और उस पर चढ़ कर वह जमीन पर अपनी झोंपड़ी में लौट आया।

उसने देखा कि वहॉ उसका शरीर तो बेजान सा पड़ा हुआ था जबकि उसकी आत्मा उसमें से चली गयी थी। पर उसके चॉद से आने के बाद अब उसका शरीर ज़िन्दा होने लगा था।

वे रस्सियॉ जिनसे उसकी हाथ और घुटने बॅधे हुए थे गिर गयी थीं हालॉकि अभी भी उनमें बहुत कस कर गॉठ लगी हुई थी।

जादूगर चॉद की यात्रा कर के बहुत थका थका महसूस कर रहा था पर जब लैम्प जलाये गये तब उसने अपने पड़ोसियों को अपनी चॉद यात्रा का पूरा हाल सुनाया।

21 संगीत वाला पानी[93]

बच्चों क्या कभी तुमने प्रकृति का संगीत सुना है? मेरे मकान के पीछे वाले हिस्से में हर सुबह एक संगीत सम्मेलन होता है। चिड़ियें गातीं हैं चीं चीं चीं चीं। कोयल गाती ही कुहू कुहू कुहू कुहू और कठफोड़वा[94] ठक ठक कर के ढोल बजाता है।

और दूसरे जानवर भी उनके साथ साथ गाते बजाते हैं। हवा भी सॉय सॉय कर के उनके उत्साह को काबू में रखती है।

इन सबके अलावा मेरे घर के पीछे एक और आवाज है और वह है गिरते हुए फव्वारे के पानी की आवाज। क्या कभी तुमने बहते पानी और पेड़ों की बीच से बहती हवा का संगीत सुना है?

इस तरह का पहला संगीत सम्मेलन बहुत समय पहले, उस समय से भी पहले, तब हुआ था जब जानवर आदमियों की तरह से बोला करते थे।

---

[93] The Musical Waters – a story from Pueblo Native Americans, North America.
Translated from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=13
Adopted, retold and written by Mike Lockett.

[94] Woodpecker – a kind of bird which always bites in the tree. See its picture above.

एक बार पुऐब्लो इंडियन जाति[95] का एक बहुत ही लोकप्रिय सरदार मर गया। यह अक्लमन्द आदमी अपनी जाति का बहुत दिनों तक सरदार रहा।

यह इतना बड़ा सरदार था कि इसकी मौत का इसके लोगों के ऊपर बड़े अजीब ढंग से और बहुत बुरा असर पड़ा। उसके मरने के बाद कोई भी सरदार नहीं बनना चाहता था। ऐसा क्यों था? क्योंकि कोई उसके जैसा कोई अक्लमन्द और नहीं था।

और दूसरा कोई भी उसके बाद लोगों में कोई ऐसा अप्रिय फैसला करने का खतरा मोल लेना नहीं चाहता था जिसके लिये कि लोग उसको नापसन्द करें – सिवाय एक अक्लमन्द बूढ़े लोमड़े के।

यह अक्लमन्द बूढ़ा लोमड़ा पुएब्लो जाति का तो नहीं था पर वह उनका बहुत पास का पड़ोसी जरूर था। उसका घर भी उनके गॉव के पास में ही था।

जब कोई भी आदमी उस जाति का सरदार बनने के लिये आगे नहीं आया तो वह अक्लमन्द बूढ़ा लोमड़ा पुऐब्लो जाति के सलाहकारों की कमेटी के पास इस बारे में बात करने के लिये आया और उसने उनसे उस जाति के बड़े लोगों के घर[96] में घुसने की इजाज़त मॉगी। यह घर जमीन में से खोदा गया एक कमरा था।

[95] Pueblo Indian Tribe – people of a tribe who lived in Pueblo area.
[96] Sweat Lodge of tribal leaders

उस घर की छत भारी भारी लकड़ियों की बनायी गयी थी और उस छत को धरती माँ की मिट्टी से ढक दिया गया था। उस छत में एक छेद था जिससे गर्मी और भाप बाहर जा सकती थी।

उस कमरे में सब बड़े लोग चुपचाप बैठे थे। पानी उस कमरे के फर्श के बीच में उन गर्म पत्थरों पर डाला गया, उससे स्स्स्स की आवाज निकली और सारा कमरा भाप से भर गया।

जब वह अक्लमन्द लोमड़ा बोला तो उसने अपनी बात को कम से कम शब्दों में कहने की कोशिश की क्योंकि उस कमरे में वह अकेला ही लोमड़े के बालों वाला कोट पहने था। उसने कहा — "मैं आप सबका नया सरदार हूँ।"

पहले तो सब लोगों ने सोचने के मूड में एक साथ अपना सिर हिलाया फिर लोगों ने अकेले अकेले भी सिर हिलाया। वह तो ठीक था कि कोई भी सरदार बनने की जिम्मेदारी लेना नहीं चाहता था पर लोमड़े को अपना सरदार चुनना? यह तो एक अजीब सी बात थी।

हर बड़े आदमी ने इधर उधर देखा तो पाया कि और सब दूसरे लोग हाँ में सिर हिला रहे थे। सो सब लोग एक साथ खड़े हो कर बोले — "हम सब तुमको अपना सरदार मानते हैं।"

जब बड़े लोगों ने उसको अपना सरदार मान लिया तो वह लोमड़ा अपना सामान लेने के लिये अपने घर चला गया।

लोमड़े के जाने के बाद एक आदमी ने दूसरे से कहा — "भाई, मैं बड़े आश्चर्य में हूँ कि तुम सब लोगों ने एक लोमड़े को अपना सरदार कैसे चुन लिया।"

वह दूसरा आदमी बोला — "मैंने? वह तो तुमने दूसरों के साथ अपना सिर हाँ में वोट देने के लिये हिलाया तो फिर मुझे भी हाँ करनी पड़ी।"

पहला आदमी बोला — "वोट? मैं तो अपना सिर केवल इस लिये हिला रहा था कि मैं तो उसकी प्रार्थना के ऊपर विचार करते हुए केवल नम्र बनने की कोशिश कर रहा था। पर तुमने वोट क्यों दिया?"

पहला आदमी बोला — "मैं भी केवल सोच ही रहा था और सिर हिला रहा था। मेरा मतलब उसको वोट देने का बिल्कुल भी नहीं था।"

जब तक लोमड़ा अपना सामान ले कर गाँव लौटा तब तक पुऐब्लो जाति की कमेटी एक बार फिर मिल चुकी थी।

जब लोमड़ा वहाँ आया तो उन्होंने उससे कहा — "मिस्टर लोमड़े, हमने अपना विचार बदल दिया है। अब हम तुम्हें अपना सरदार नहीं मानते।" और उन्होंने उस लोमड़े को वापस भेज दिया।

पर फिर भी वे यह निश्चय नहीं कर सके कि अगर वे लोमड़े को अपना सरदार नहीं मानते तो उनको किसको अपना सरदार बनाना चाहिये।

बिना सरदार के कोई फैसला भी नहीं लिया जा सकता था। यह कोई नहीं बता सकता था कि किसका शिकार किया जाये। यहॉ तक कि छोटे छोटे फैसले भी नहीं किये जा सकते थे जैसे कूड़ा बाहर कौन ले कर जायेगा।

सारे घरों में कूड़ा इकट्ठा हो रहा था क्योंकि वहॉ कोई सरदार ही नहीं था जो उनको यह बताता कि गॉव के बाहर कूड़ा कहॉ फेंकना है।

वह बूढ़ा अक्लमन्द लोमड़ा यह सब सुन कर बहुत दुखी हुआ क्योंकि वह पुऐब्लो जाति के लोगों को बहुत अच्छे लोग समझता था और वे इस समय बिना सरदार के मुसीबत में थे।

उसने सोचा — "उनको एक बहुत अच्छे सरदार की जरूरत थी। उनको उसी की सरदार की हैसियत से जरूरत थी। मैं उनके ऊपर दया करता और उनको ऐसे ही आगे बढ़ाता जैसे मैंने अपने आपको आगे बढ़ाया है।"

यह सोचता हुआ वह एक नाले के पास बैठ गया जो झील में आ कर गिर रहा था। पानी के पत्थर पर गिरने से जो आवाज हो रही थी वह उसके कानों को बड़ी भली लग रही थी। इससे उसको ठीक से सोचने में भी सहायता मिल रही थी।

जब वह सोच रहा था तो चारों तरफ देख रहा था। उसको वहीं पास के खेत में सूरजमुखी फूलों की डंडियों के बीच से हवा बहती सुनायी दी। वह उस जगह के पास आया जहॉ से उस बहती हुई हवा की आवाज आ रही थी।

बूढ़े अक्लमन्द लोमड़े ने देखा कि वह आवाज एक डंडी के छेद में से आ रही थी जो किसी कीड़े ने उसमें बना लिया था।

लोमड़े को एक विचार आया। उसने सूरजमुखी की कुछ डंडियॉ इकट्ठी कीं और उनको अपने घर ले गया। बैठ कर उसने उन डंडियों को खोखला कर लिया।

फिर उसने उनके खुले हुए सिरों को बन्द कर दिया और उनके एक तरफ कुछ छेद बना लिये। इस तरह से हर डंडी की एक बॉसुरी बन गयी। उसने उन सबको बजा बजा कर भी देख लिया। उनमें से कुछ की आवाज तेज़ थी और कुछ की बहुत धीमी।

कई डंडियों को तो उसने फेंक दिया केवल एक बॉसुरी रख ली क्योंकि उन सब में वही एक बॉसुरी थी जो बिल्कुल ठीक बज रही थी। उसी बॉसुरी पर उसने संगीत बजाना शुरू किया तो वह तो बहुत ही मीठा था। ऐसा लग रहा था कि जैसे कोई मीठी आवाज में गा रहा हो।

उस अक्लमन्द लोमड़े ने वह बॉसुरी अपने घर में छिपा दी और वह फिर से उन बड़े लोगों की कमेटी के सामने गया।

जब वह गॉव में घुसा तो उसने देखा कि पुऐब्लो लोग आपस में एक दूसरे से लड़ रहे थे और बहस कर रहे थे। जब कोई सरदार नहीं होता तो फिर यही होता है लोग लड़ते ही हैं क्योंकि उनको सॅभालने वाला कोई नहीं होता।

वह एक बार फिर बड़े लोगों के उस घर में घुसा जिसमें वह पहले भी गया था – पर इस बार बिना बुलाये।

वहॉ जा कर वह उनसे बोला — "अगर तुम लोग मुझे पेड़ों के दिन खत्म होने से पहले पहले अपना सरदार नहीं मानते तो झील का सारा पानी झील से बाहर फैल जायेगा और तुम लोगों के गॉव तक आ कर तुम्हें और तुम्हारे मकान दोनों को डुबो देगा।"

इतना कह कर वह वहॉ से चला गया।

उसके जाने के बाद सारे बड़े लोग हॅस पड़े और इतनी देर तक हॅसते रहे जब तक उनकी ऑखों में ऑसू नहीं आ गये लेकिन उसके बाद वह थोड़ा गम्भीर हो गये।

उन्होंने एक दूसरे से पूछा — "यह अक्लमन्द लोमड़ा झील के पानी के बारे में क्या जानता है?"

उसके बाद वे झील के किनारे गये और वहॉ जा कर उसके मजबूत किनारों की तरफ देखा जिन्होंने उसके पानी को बाहर निकलने से रोक कर रखा हुआ था।

देख कर उनको विश्वास हो गया कि झील का पानी किसी तरह भी बाहर नहीं आ सकता था और यह सोच कर वे और ज़ोर से हॅस दिये।

पर जब वे हॅस रहे थे तब अक्लमन्द लोमड़े ने जंगल से ले कर झील के ऊॅचे किनारे तक एक लम्बी तंग नाली तैयार की जहॉ वे इंडियन्स रोज सुबह पानी भरने जाया करते थे।

जब वह नाली खत्म हो गयी तो वह अपने घर से अपनी बॉसुरी वहॉ ले आया और सुबह का इन्तजार करने लगा।

जब पहला आदमी झील पर पानी भरने आया तो उस अक्लमन्द लोमड़े ने अपनी उस सूरजमुखी की डंडी से बनी बॉसुरी पर एक धुन बजानी शुरू कर दी।

उस इन्डियन ने चारों तरफ देखा पर उसको कोई दिखायी नहीं दिया। वह बोला — "यह क्या पानी का देवता गा रहा है?"

और गॉव वालों को यह बताने के लिये कि आज तो पानी का देवता झील पर गा रहा था वह तुरन्त गॉव की तरफ दौड़ गया।

अगली सुबह किसी और के झील पर जाने से पहले ही गॉव की एक सबसे बड़ी स्त्री झील पर भेजी गयी।

उस स्त्री को देख कर लोमड़े ने फिर से बॉसुरी बजायी – इस बार और ज़ोर से और और ज़्यादा मीठी। ऐसा लग रहा था जैसे वह मीठी आवाज पानी के ऊपर से आ रही हो।

उस स्त्री ने जा कर गॉव वालों को बताया कि उसने भी पानी के देवता की आवाज सुनी और वह भी यही सोचती है कि वह बाहर आने के लिये और हम सबको डुबोने के लिये तैयार है। फिर वह सारे गॉव में सब लोगों को वह बताती रही जो उसने सुना था।

तीसरी सुबह जाति के सारे लोग झील पर एक साथ जाने के लिये तैयार हुए। उन्होंने आपस में कहा — "अगर हम लोगों ने आज तीसरी बार भी पानी के देवता की आवाज सुनी तो हम लोग यह सोच लेंगे कि पानी का देवता उस लोमड़े को हमारा सरदार बनाना चाहता है।"

पर जब वे झील के किनारे आये तो उन्होंने झील के पानी के केवल टपकने की आवाज सुनी – यह आवाज तो केवल पानी के पत्थरों के ऊपर गिरने की आवाज थी जो एक संगीतमयी आवाज लग रही थी।

जाति के सबसे बड़े आदमी ने पूछा — "ओ झील के देवता, क्या तुम यह चाहते हो कि हम लोमड़े को अपना सरदार बना लें?"

और लो, उस बॉसुरी की आवाज तो उनको फिर से सुनायी पड़ी। वह अक्लमन्द लोमड़ा फिर वहॉ अपनी सूरजमुखी की डंडी से बनी बॉसुरी बजा रहा था।

हर एक ने हॉ में ऊपर से नीचे की तरफ सिर हिलाया। पर इस बार वे सोच नहीं रह रहे थे बल्कि लोमड़े को सरदार बनाने के लिये वोट देने के लिये सिर हिला रहे थे।

यह निश्चय करने के बाद कि वे उस बूढ़े लोमड़े को अपना सरदार बना लेंगे उन्होंने एक आदमी को कहा कि वह उस बूढ़े अक्लमन्द लोमड़े को ढूँढ कर गॉव लाये और आग जला कर कमेटी की मीटिंग बुलाये।

यह देख कर लोमड़े ने अपने बालों पर से धूल झाड़ी और वहॉ से अपने घर चला गया। बड़े लोगों के भेजे हुए आदमी से पहले ही वह अपने घर पहुँच गया और जब वह आदमी उसके घर आया तो उसने उसका अपने घर में स्वागत किया।

वह आदमी उसको ले कर गॉव गया और आग जला कर कमेटी की मीटिंग बुलायी। कमेटी के एक बड़े आदमी ने लोमड़े से कहा कि उसको उनका सरदार बनना ही है। अगर उन्होंने ऐसा नहीं किया तो झील का पानी बाहर निकल कर उनको और उनके गॉव को डुबो देगा।

लोमड़े ने पूछा — "क्या तुमको पक्का यकीन है कि तुम मुझे अपना सरदार बनाना चाहते हो?"

गॉव के हर आदमी ने एक आवाज में कहा "हॉ"।

इस तरह वह बूढ़ा चालाक लोमड़ा जानवरों के बोलने की ताकत खोने से पहले ही पुऐब्लो जाति का सरदार बन गया।

वह उन सबके लिये बहुत अच्छा था और उन सबसे बड़ी दया का बर्ताव करता था। वह उनको चतुराई के फैसले लेने में उनकी सहायता करता था।

वह उनको बताता था कि उनको अपने घरों का कूड़ा कबाड़ा कहॉ फेंकना है और आपस में प्रेम से कैसे रहना है।

एक खास चीज़ जो उसने उनको सिखायी वह थी सूरजमुखी की डंडियों से मीठा संगीत बजाना। इस संगीत से वे जंगली जानवरों और चिड़ियों को अपने बस में कर लेते थे। आश्चर्य की बात तो यह थी कि उनका यह संगीत पानी के देवता के संगीत जैसा लगता था।

अब वह अक्लमन्द लोमड़ा तो नहीं है पर उसका संगीत आज भी सुना जा सकता है। कभी कभी पुऐब्लो लोगों के नाती पोते उस संगीत को बजाते हैं जिन्होंने उसे अपने पुरखों से सीखा था और दूसरे समय में यह पानी में से आता है।

22 पहले ऑसू[97]

यह बहुत पहले की बात है कि एक आदमी सील मछली का शिकार करने के लिये समुद्र के किनारे गया।

उस आदमी की खुशी का ठिकाना न रहा जब उसने देखा कि समुद्र के किनारे तो बहुत सारी सील मछलियॉ बैठी हुई थीं। उसको लगा कि आज तो वह बहुत सारी मछलियॉ अपनी पत्नी और बेटे के लिये ले जा पायेगा।

वह धीरे धीरे दबे पॉव उन मछलियों की तरफ बढ़ा। सील मछलियॉ कुछ बेचैन हो गयीं। उनको बेचैन देख कर उस आदमी की चाल भी थोड़ी धीमी पड़ गयी।

अचानक सील मछलियॉ समुद्र के पानी में खिसकने लगीं। वह आदमी कुछ और परेशान हो गया। उसकी तो दावत जा रही थी। पर फिर उसने एक सील मछली अपने साथियों के पीछे पीछे जाती देखी। वह अपने साथियों की तरह से तेज़ नहीं चल पा रही थी।

उसने सोचा कि अब वह इसी सील को पकड़ेगा। उसको इस सील को पकड़ने से पैदा हुई अपनी पत्नी और अपने बेटे की ऑखों में खुशी की झलक दिखायी दी।

---

[97] The First Tears – a story from the Inuit Tribe, Native Americans, North America.
Translated from the Web Site : http://americanfolklore.net/folklore/2010/09/the_first_tears.html
retold by SE Schlosser.

इतनी बड़ी सील से तो उनका पेट कई दिनों तक के लिये भर जायेगा। यह सोच कर वह दबे पॉव उस सील की तरफ चल दिया। वह उसी सील मछली को पकड़ेगा।

आदमी को लगा कि उस सील ने उसको देखा नहीं है पर अचानक ही वह सील मछली उछली और समुद्र में चली गयी।

आदमी उसके पीछे भागा तो पर वह उसको पकड़ नहीं पाया। लेकिन उसी समय उसको अपने दिल में कुछ अजीब सा महसूस हुआ। उसकी ऑखों से पानी टपकने लगा। उसने अपनी ऑखें छुई और उनका पानी चखा। वह उसको नमकीन लगा।

उसके मुॅह और छाती से भी अजीब अजीब आवाजें आ रही थीं जैसे उसका दम सा घुट रहा हो।

उसके बेटे ने उसकी वे आवाजें सुनीं और जा कर अपनी मॉ को बताया तो वे दोनों यह जानने के लिये समुद्र के किनारे की तरफ दौड़े कि वह आदमी ठीक था कि नहीं।

उस आदमी की पत्नी और बेटा यह देख कर बड़े आश्चर्य में पड़ गये कि उस आदमी की ऑखों से पानी बह रहा था।

उस आदमी ने उनको बताया कि जब वह समुद्र के किनारे सील मछलियॉ पकड़ने गया था तब समुद्र का किनारा सील मछलियों से भरा हुआ था। यह देख कर वह बहुत खुश हुआ। पर जैसे ही उसने उनको अपने चाकू से मारना चाहा पर वे सब की सब पानी में खिसक गयीं।

जब वह यह सब कह रहा था तो उसकी पत्नी और बेटे की ऑखों से भी पानी बहना शुरू हो गया और वे दोनों भी उस आदमी के साथ साथ रोने लगे।

सो इस तरह से उन लोगों ने सबसे पहले रोना शुरू किया।

बाद में उस आदमी और उसके बेटे ने मिल कर एक सील मारी और फिर उस सील मछली को दूसरी सील मछलियों को पकड़ने का जाल बनाने के लिये इस्तेमाल किया।

23 शार्क का राजा[98]

एक दिन शार्क मछलियों के राजा ने एक बहुत सुन्दर लड़की को समुद्र में तैरते देखा। तो उसको देखते ही उसको उससे प्यार हो गया।

सो उसने अपने आपको एक बहुत सुन्दर नौजवान आदमी के रूप में बदला, सरदारों जैसा पंखों का एक शाल[99] ओढ़ा और उस लड़की के गॉव तक उस लड़की के पीछे पीछे चला गया।

गॉव वाले तो एक विदेशी सरदार को अपने गॉव में देख कर बहुत ही खुश हो गये। उन्होंने उसकी बड़ी आवभगत की। उसको दावत खिलायी, उसके लिये खेलों का इन्तजाम किया। उस नौजवान ने सारे खेल जीत लिये।

उसके बाद जब उस नौजवान ने उस लड़की से शादी की इच्छा प्रगट की तब तो वह लड़की भी बहुत ही खुश हो गयी।

अब वह शार्क का राजा एक झरने के पास एक घर में अपनी पत्नी के साथ खुशी खुशी रहने लगा। वह अपने आदमी के रूप में झरने के नीचे वाले तालाब में रोज तैरता था।

---

[98] The King of Sharks – a folktale from Native Americans, Hawaii, North America.
Adapted from the Web Site :
http://americanfolklore.net/folklore/2010/07/the_trickster_tricked.html retold by SE Schlosser.

[99] Translated for the word “Cape” which is worn on both shoulders both for decoration and for saving oneself from cold. See its picture above. It may be without hood too.

कभी कभी वह पानी में अन्दर इतनी ज़्यादा देर तक रहता था कि उसकी पत्नी को डर लगने लगता। पर शार्क के राजा ने उसको समझाया कि वह उस तालाब की तली में अपने बेटे के लिये जगह बना रहा था इसलिये उसको डरने की कोई जरूरत नहीं है।

बच्चा होने से पहले शार्क का राजा ने एक पंख लगा शाल अपनी पत्नी को दिया और फिर अपने लोगों में लौट गया। पर वह अपनी पत्नी से यह वायदा ले गया कि वह अपने बेटे को हमेशा वह पंख लगा शाल ओढ़ा कर रखेगी।

जब बच्चा पैदा हुआ तो उसकी मॉ ने उसकी पीठ पर एक निशान देखा जो उसको शार्क के मुँह जैसा लगा। तब उसको पता चला कि उसका पति कौन था।

बच्चे का नाम नानावे[100] रखा गया। जैसे जैसे वह बच्चा बड़ा होता गया वह भी अपने पिता की तरह अपने घर के पास उस झरने के नीचे वाले तालाब में रोज तैरता।

कभी कभी जब उसकी मॉ उसको उस तालाब में तैरते देखती तो उसको लगता कि जैसे पानी के नीचे कोई आदमी नहीं बल्कि कोई शार्क तैर रही हो।

हर सुबह नानावे तालाब के किनारे खड़ा होता, पंखों वाला शाल उसके कंधों पर पड़ा रहता और वह आते जाते मछियारों से पूछता कि वे उस दिन मछलियॉ कहॉ पकड़ेंगे।

[100] Nanave – name of the son of the Shark King

वे मछियारे सीधे स्वभाव से उसको बता देते कि वे उस दिन मछली कहॉ पकड़ेंगे। बस फिर नानावे उस तालाब में कूद जाता और घंटों के लिये गायब हो जाता।

असल में वह उस तालाब में जा कर वहॉ की मछलियों को सावधान कर देता ताकि वे पकड़ी न जायें। इससे मछियारों ने देखा कि वे रोज कम और कम मछलियॉ पकड़ पा रहे थे।

इससे गॉव के लोग भूखे रहने लगे तो गॉव के सरदार ने गॉव के लोगों को गॉव के मन्दिर में बुलाया।

उसने गॉव के लोगों से कहा — "ऐसा लगता है कि हम लोगों में कोई बुरा देवता है जो हमारे मछियारों को मछलियॉ पकड़ने में रुकावट डाल रहा है। उसको ढूँढने के लिये मैं अब अपना जादू इस्तेमाल करने वाला हूँ।"

यह कह कर सरदार ने जमीन पर कुछ पत्तियॉ बिछा दीं फिर उसने गॉव के हर आदमी को उन पत्तियों के ऊपर चलने के लिये कहा।

उसने बताया कि जब लोग उन पत्तियों पर चलेंगे तो अगर वह आदमी होगा तब तो उसके पॉवों से वे पत्तियॉ कुचल जायेंगीं जबकि अगर वह कोई देवता होगा तो उसके पॉव पत्तियों के ऊपर कोई निशान नहीं छोड़ेंगे।

यह सुन कर नानावे की मॉ बहुत डर गयी क्योंकि उसको मालूम था कि उसका बेटा तो देवता का बेटा था और अगर लोगों को यह पता चल गया तो वे उसको मार देंगे।

जब पत्तों पर चलने की नानावे की बारी आयी तो वह उनके ऊपर बहुत तेज़ी से दौड़ा पर इस तेज़ी से दौड़ने की वजह से वह फिसल गया।

एक आदमी ने उसको गिरने से चोट लगने से बचाने के लिये उसका पंखों वाला शाल पकड़ लिया जो वह हमेशा ओढ़े रहता था। उसके पकड़ने पर वह शाल उसके कन्धों से खिसक गया और नीचे गिर पड़ा और सारे लोगों ने उसकी पीठ पर शार्क के खुले हुए मुँह वाला निशान देख लिया।

उन्होंने नानावे को गॉव से बाहर निकाल दिया पर वह उनके हाथों से फिसल गया और तालाब में डुबकी मार गया। इस पर लोगों ने उस तालाब को भरने के लिये उस तालाब में बड़े बड़े पत्थर फेंके।

इतने सारे पत्थर फेंकने के बाद उन्होंने सोचा कि शायद नानावे मर गया पर नानावे की मॉ को मालूम था कि उसके पिता ने उसके रहने के लिये उस तालाब की तली में एक जगह बनायी थी। और वह जगह थी एक रास्ता जो उस तालाब में से समुद्र में जा कर खुलता था।

बस नानावे ने एक शार्क का रूप रखा और समुद्र में जा कर अपने पिता शार्क के राजा से मिल गया।

पर उस दिन के बाद उन मछियारों ने फिर कभी किसी से यह नहीं कहा कि वे उस दिन मछली पकड़ने कहॉ जा रहे थे।

उनको डर था कि अगर कहीं किसी शार्क ने यह सुन भी लिया तो वह उन मछलियों को वहॉ से भगा देगा और वे मछलियॉ नहीं पकड़ पायेंगे और वे अब भूखों मरना नहीं चाहते थे।

24 पैले का बदला[101]

यह लोक कथा उत्तरी अमेरिका के हवाई द्वीप के लोगों में कही सुनी जाती है।

ओहिआ और लेहुआ[102] ने जिस दिन से गॉव के एक नाच में एक दूसरे को देखा था वे उसी दिन से वे एक दूसरे से प्यार करने लगे थे।

ओहिआ एक बहुत ही सुन्दर और ताकतवर आदमी था। वह चालें खेलने वाला आदमी था और सारे नौजवान जितने भी खेल खलते थे उनमें उसका नम्बर पहला था।

लेहुआ बहुत ही नम्र स्वभाव की थी और किसी फूल के समान कोमल थी। सारे टापू में उसकी सुन्दरता के चर्चे थे। उसका पिता अपनी अकेली बच्ची का बहुत ख्याल रखता था।

जब लेहुआ ने सुन्दर और बहादुर ओहिआ को आग के पास अपने पिता से बातें करते देखा वह तो शर्म से गुलाबी हो गयी और उस नौजवान के चेहरे से अपनी ऑखें ही नहीं हटा सकी।

---

[101] Pele's Revenge – a folktale from Hawaii, America, North America. Translated from the Web Site : http://americanfolklore.net/folklore/2010/10/peles_revenge.html
Adopted, retold and written by SE Schlossler

[102] Ohia and Lehua

उसी समय ओहिआ ने भी बात करते करते ऊपर की तरफ देखा तो उसका मुँह भी उस सुन्दर लड़की को देख कर खुला का खुला रह गया।

आग के उस पार खड़ी लड़की को देख कर वह उसकी सुन्दरता में इतना खो गया था कि उसको पता ही नहीं चला कि वह कब बात करने के बीच में ही चुप हो गया था।

लेहुआ के पिता ने यह देखा तो उसने उसका बातों की तरफ ध्यान खींचा। ओहिआ ने हकलाते हुए उनसे माफी माँगी और फिर अपनी बातचीत शुरू की पर एक आँख से वह फिर भी लेहुआ की तरफ ही देखता रहा।

लेहुआ का पिता ओहिआ का अपनी बेटी के लिये यह प्रेम देख कर बहुत खुश हुआ। उसको भी यह बहादुर चालाक आदमी पसन्द था इसलिये उसने ओहिआ को अपनी बेटी लेहुआ से मिलवा दिया।

ओहिआ तो उससे मिलने के लिये जाते समय करीब करीब गिर ही पड़ा। उस पल से ओहिआ के लिये लेहुआ के अलावा और कोई दूसरी लड़की नहीं थी। वह हमेशा उसी को देखता रहता और उससे दिल से प्यार करता।

दोनों काफी दिनों तक अपने नये घर में जो ओहिआ ने लेहुआ के लिये बनवाया था खुशी खुशी रहे।

एक दिन देवी पैलै सुन्दर ओहिआ के घर के पास जंगल में घूम रही थी और छिप छिप कर उस नौजवान को काम करते देख रही

थी। वह भी उसको देखते ही प्यार करने लगी और उससे बात करने चली गयी।

ओहिआ उस सुन्दर लड़की से बहुत ही नम्रता से बात कर रहा था पर वह उसके आगे बढ़ने को बढ़ावा नहीं दे रहा था। इस बात से पैलै नाराज हो गयी।

उसने यह सोच लिया था कि इस नौजवान को वह खुद अपने लिये ले लेगी पर इससे पहले कि वह अपनी बात आगे बढ़ाती लेहुआ वहॉ आ पहुॅची जहॉ ओहिआ उसके लिये दोपहर का खाना लाने के लिये इन्तजार कर रहा था।

ओहिआ ने जब अपनी प्यारी पत्नी को देखा तो उसका चेहरा प्यार से चमक उठा। उसने अपने हाथ में लिया हुआ सब कुछ छोड़ दिया और उसके पास चला गया।

इस नौजवान जोड़े को देख कर पैलै बहुत गुस्सा हो गयी। उसने अपना आदमी का रूप तो छोड़ दिया और एक भड़कती हुई आग का खम्भा बन कर ओहिआ को नीचे गिरा दिया।

यही नहीं फिर उसने ओहिआ को अपने प्यार को रोकने का बदला लेने के लिये उसको एक बदसूरत टेढ़े मेढ़े पेड़ में भी बदल दिया।

लेहुआ उस टेढ़े मेढ़े पेड़ के पास घुटनों के बल बैठ गयी जो कभी उसका पति था और उसकी ऑखों से ऑसू बहने लगे। उसने पैलै की उस पेड़ को फिर से आदमी में बदलने के लिये और नहीं तो

उसको भी पेड़ के रूप में बदलने की बहुत प्रार्थना की क्योंकि वह अपने पति से अलग नहीं रह सकती थी।

पर पैलै ने उस लड़की की बातों पर कोई ध्यान नहीं दिया। उसका गुस्सा अब थोड़ा ठंडा पड़ चुका था। पर दूसरे देवता देख रहे थे कि पैलै ने उन भोले भाले प्रेमियों के साथ क्या किया था। वे उससे बहुत गुस्सा थे।

जब लेहुआ नाउम्मीद हो कर रो रही थी तो देवता नीचे आये और उन्होंने उस लड़की को एक बहुत ही सुन्दर लाल फूल में बदल दिया और उसको उस टेढ़े मेढ़े पेड़ के ऊपर लगा दिया ताकि वह और उसका पति कभी एक दूसरे से अलग न हों।

उस दिन से ले कर आज तक ओहिआ के पेड़ पर सुन्दर लाल लेहुआ फूल खिलते हैं। जब तक फूल पेड़ पर रहते हैं मौसम धूप वाला और साफ रहता है।

पर जब उनमें से एक भी फूल चुन लिया जाता है तो बहुत भारी बारिश होती है जैसे ऑसुओं की बरसात हो रही हो क्योंकि लेहुआ अभी भी अपने ओहिआ से अलग होना नहीं चाहती।

25 आत्मा का घर[103]

सरदार काकाहेला[104] स्टिक्स नदी[105] के किनारे जहॉ वह झील में गिरती थी अपने लोगों में शान्ति से रहता था।

उस गॉव के लोग सारे दिन काम में लगे रहते थे। लड़ाई लड़ने वाले शिकार करते थे और मछलियॉ पकड़ते थे। स्त्रियॉ घर में खाना बनाती थीं और बड़े लोगों और बच्चों की देखभाल करती थीं।

इस तरह से सब अपना अपना काम करते हुए अपने प्राकृतिक वातावरण में शान्ति से रहते थे।

एक दिन काकाहेला ने अपने गॉव के दक्षिण के एक गॉव में जाने का विचार किया। वह सुबह सुबह ही निकल पड़ा। उसको नाव से झील पार करनी थी और फिर कुछ दूर पैदल अपने दोस्त के घर तक जाना था।

उस दोस्त के घर उसको रात को रुकना था और अगले दिन फिर अपने घर वापस आने के लिये अपना सफर शुरू करना था।

वह अभी झील के किनारे से कुछ गज दूर ही गया होगा कि उसको किसी जानवर के बहुत ज़ोर से चिल्लाने की आवाज आयी

---

[103] Spirit Lodge – a folktale from Nariticong Tribe, Native Americans, North America. Translated from the Web Site : http://americanfolklore.net/folklore/2010/09/spirit_lodge.html retold by SE Schlosser.

[104] Chief Quaquahela

[105] Styx River is a mythical river of Western Canada

और उस चिल्लाहट के साथ ही एक बहुत बड़ा भालू पास की झाड़ियों में से निकल कर उसके सामने आ खड़ा हुआ।

काकाहेला हथियारबन्द था। उसके पास अपना लड़ने वाला डंडा था और वह शिकारियों वाली पोशाक भी पहने था पर क्योंकि भालू उसका टोटम[106] था इसलिये वह भालू को मार नहीं सकता था सो वह उलटे पैरों अपनी नाव की तरफ जो झील के किनारे बॅधी थी भाग लिया ताकि वह वहॉ से भाग सके।

पर उसी समय वह भालू गुस्से में भर कर उस सरदार के ऊपर कूद पड़ा और उसको जमीन पर गिरा दिया।

काकाहेला के पास अब उस भालू से लड़ने अलावा और कोई चारा नहीं था सो उसने अपना लड़ने वाला डंडा उठाया और उससे भालू को बार बार पीट कर उसको अपने से दूर करने की कोशिश करने लगा।

जैसे जैसे ताकतवर भालू और उस सरदार में लड़ाई होती जाती थी घावों से निकला बहुत सारा खून जमीन पर बिखरता जाता था।

आखिर सरदार ने अपना चाकू निकाल लिया और उससे भालू के सिर और गले पर बार बार मारना शुरू किया ताकि वह उसकी

[106] A totem is a being, object, or symbol representing an animal or plant that serves as an emblem of a group of people, such as a family, clan, group, lineage, or tribe, reminding them of their ancestry or mythic past. In kinship and descent, if the apical ancestor of a clan is nonhuman, it is called a totem. Normally this belief is accompanied by a totemic myth.

पकड़ से छुटकारा पा सके। भालू ने भी एक ज़ोर की चीख के साथ सरदार को छोड़ दिया।

काकाहेला वहॉ से हट गया और जमीन पर गिर पड़ा। उसका शरीर काफी घायल हो गया था। उसके घाव बहुत गहरे थे। उसने बड़ी मुश्किल से करवट बदली और अपने दुश्मन की तरफ देखा – अपने टोटम की तरफ।

भालू मर चुका था। दुख और बहुत सारे घावों की वजह से काकाहेला का सिर जमीन पर गिर पड़ा और कुछ ही पलों में वह भी मर गया।

उस सरदार के दोस्त को सरदार के इस इरादे के बारे में कुछ पता नहीं था कि वह उसके घर ठहरने वाला था सो वह इस घटना के बारे में कुछ नहीं जानता था।

दो दिन बाद उसको झील के पास एक भालू का मरा हुआ शरीर मिला और सरदार की नाव झील के किनारे बॅधी हुई मिली। काकाहेला का खून से सना वह लड़ाई वाला डंडा और टोटम और चाकू उसकी दुख भरी कहानी कह रहे थे।

सरदार के शरीर का कहीं कोई नामो निशान नहीं था पर वहॉ भेड़ियों के पैरों के निशान बता रहे थे कि उसके दोस्त को भेड़ियों ने घसीटा था।

सो काकाहेला के दोस्त ने कई लड़ने वाले बुलाये और उनको अपने दोस्त का शरीर खोजने के लिये चारों तरफ भेजा।

वे सब बहुत दिनों तक सरदार को ढूँढते रहे पर सरदार का शरीर कहीं नहीं मिला।

करीब एक महीने बाद पूरे चॉद की रात को काकाहेला के लोगों ने पास की पहाड़ी के पास से एक अजीब सा कोहरा ऊपर उठता देखा जैसे आग से धुँआ उठता है।

सारा वातावरण साफ था रात भी दिन की तरह चमक रही थी पर फिर भी वह कोहरा घना हो कर उनकी ऑखों के सामने खड़ा हो गया था और वहीं ठहर गया।

वहॉ उस जगह तेज़ हवा के होते हुए भी वह कोहरा ऊपर उठ रहा था और पेड़ों को हिला रहा था। पूरा गॉव इसको देख कर आश्चर्यचकित खड़ा था और सोच रहा था कि वह उनके सामने क्यों प्रगट हुआ।

उस रात सरदार अपने दवा वाले डाक्टर के सपने में आया और उससे बोला — "यह मैं हूँ जो कोहरे के रूप में प्रगट हुआ था। मैंने एक बड़े भालू को मार डाला है जिसने मुझे मारा इसलिये मुझे अब कभी भी आत्माओं की दुनियॉ में घुसने नहीं दिया जायेगा।

बजाय धरती पर घूमने के मैं अपने लोगों के पास रहना ज़्यादा पसन्द करूँगा इसलिये मैंने उस पहाड़ी पर उस जगह पर एक आत्मा का घर बना लिया है जो तुमने आज देखा।"

फिर सरदार ने उस दवा वाले डाक्टर से वायदा किया कि वह हमेशा अपने गॉव वालों के साथ रहेगा ताकि वे घर से जाते समय और घर लौटते समय दोनों समय सुरक्षित रहें।

अगर उनको उसके होने में कोई शक हो तो वे उस पहाड़ी की तरफ देख लें। वह जो कोहरा उस पहाड़ी पर से ऊपर की तरफ उठ रहा था वह उसकी उस आत्मा के घर से ही उठ रहा था। इस से उनको यकीन हो जायेगा कि उसकी आत्मा हमेशा उनके साथ रह रही थी।

अगली सुबह उस दवा वाले डाक्टर ने सरदार का सन्देश सब गॉव वालों को सुना दिया। सबको यह सुन कर बहुत खुशी हुई कि उनका प्यारा सरदार काकाहेला अभी भी उनके साथ ही था।

बहुत सारे लोग उस कोहरे को देख कर खूब ज़ोर से चिल्लाते तो वह कोहरा हमेशा उन आवाजों का जवाब देता – उनकी आवाज गूँज कर उनके पास आ जाती।

आज भी सरदार काकाहेला की आत्मा का घर उस पहाड़ी पर ठंड के मौसम में उठता हुआ देखा जा सकता है। और अगर कोई प्रेम से उसको पुकारता है तो उसकी आवाज गूँज कर उसी के पास आ जाती है यह बताने के लिये कि सरदार ने उसकी आवाज सुन ली है।

List of Stories of "Folktales of North America-1"

1. How Bear Lost His Tail
2. A Boy Who Lived With Bears
3. Why Bear Sleeps All Winter
4. A Bearman
5. The Gifts of Little People
6. The Girl Who Was not Satisfied With Simple Things
7. The Hungry Fox and the Boastful Suitor
8. Two Daughters
9. Hodadenon and the Last One Left and the Chestnut Tree
10. Why the Tongue of Dogs Is So Long
11. Iceman and the Messenger of Spring
12. Return f the Iceman
13. The Origin of Wind
14. Buffalo Song
15. Buffalo Woman
16. Grandmother Spider
17. Crow and Hawk
18. Why Clouds Are in the Sky
19. What thr Man in the Moon Did
20. Flight t the Moon
21. The Musical Waters
22. The First Tears
23. The King of Sharks
24. Pele's Revenge
25. Spirit Lodge

List of Stories of "Folktales of North America-2"

1. Lazy Jack
2. Soap, Soap, Soap
3. Gunny Wolf
4. Journeycake Who Ran Away
5. How Man Became Master of Fire
6. Cricket's Dinner
7. Yahula
8. Why Cats and Dogs Never Get Along
9. Wings on Her Feet
10. The Magic Orange Tree
11. The Smartest Man in All the World
12. Ti Malice
13. Wheeeeeeai
14. Half a Chick
15. The Golden Voice of Poas
16. The Golden Fish

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस कड़ी में 100 से भी अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। पुस्तक सूची की पूरी जानकारी के लिये लिखें — hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। उसके बाद **1976** में भारत से नाइजीरिया पहुँच कर यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस कर के एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया। उसके बाद इथियोपिया की एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो की नेशनल यूनिवर्सिटी में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला।

तत्पश्चात **1995** में यू ऐस ए से फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स कर के **4** साल एक ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में सेवा निवृत्ति के पश्चात अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। सन **2022** तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है।

आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचाया जा सकेगा।

विंडसर, कैनेडा
2022